बरिस-4 अंक-14

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अक्टूबर-दिसम्बर 2021

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई–पत्रिका)

अंक–14,अक्टूबर–दिसम्बर 2021

प्रबंध निदेशक : सतीश कुमार त्रिपाठी

संरक्षक : 1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)

प्रधान सम्पादक : सुभाष पाण्डेय

सम्पादक : डॉ अनिल चौबे

बिशिष्ट सम्पादक : बृजभूषण तिवारी

उप सम्पादक : तारकेश्वर राय

कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार मिश्र

सलाहकार सम्पादक : राजीव उपाध्याय

सह सम्पादक : 1. भावेश अंजन
2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
3. माया चौबे
4. गणेश नाथ तिवारी
5. राम प्रकाश तिवारी

प्रबंध सम्पादक : माया शर्मा

आमंत्रित सम्पादक : चंद्र भूषण यादव

बिदेश प्रतिनिधि : रवि शंकर तिवारी

ब्यूरो चीफ : ज्वाला सिंह

ब्यूरो चीफ (बिहार) : 1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह

ब्यूरो चीफ (प। बंगाल) : दीपक कुमार सिंह

ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश) : 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी

ब्यूरो चीफ (झारखण्ड) : राठौर नितान्त

पश्चिम भारत प्रतिनिधि : बिजय शुक्ला

दिल्ली, NCR प्रतिनिधि : बिनोद गिरी

क़ानूनी सलाहकार : नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

आवरण अउरी पाछे के कवर डिजाइन - श्री राम प्रकाश तिवारी

अनुक्रम

संपादकीय
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 6
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 7

कनखी
- आक्छी - डॉ अनिल चौबे / 9

कथा-कहानी / दँतकिस्सा
- लछमिनिया - रमेश चन्द्र / 21
- खरोंच - कन्हैया प्रसाद रसिक / 28
- चुनमुनिया घर - विवेक सिंह / 32
- जइसे सोरह साल पहिले - विद्या शंकर विद्यार्थी / 36
- दुःख में कहूँ ना जाइये - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा /42
- जब आँखि खुले तबे बिहान - मीना धर / 49
- इहे त जीवन ह - अभियंता सौरभ भोजपुरिया /81
- दू गो सहेली के फोन पर बातचीत - कुमार चंदन /84

कविता
- बिना रोके-टोके गले दिहs - संगीत सुभाष / 29
- नदी - संगीत सुभाष / 29
- हरिहर गाछ - डॉ मधुबाला सिन्हा / 30
- आपन माईभाषा - संग्राम ओझा "भावेश" / 30
- दारुबंदी - रजनीश ओझा / 35
- जिनगी - गुड़िया शुक्ला / 35
- हमरा भोजपुरिया माई के - ऋषि तिवारी / 37
- गाँव हमार - कृष्णा श्रीवास्तव / 37
- सुख-दुःख - अखिलेश्वर मिश्र /40
- गाँव आस पास - राकेश कुमार पाण्डेय /40
- पिय वियोग - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 44
- प्यार के मोल - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा /44
- अजब हाल बा - हरेश्वर राय / 48
- अर्चना के दोहे - अर्चना झा /48
- अपना मन के सूरज कबो - अशोक मिश्र / 56
- आखर-आखर टोना - मदनमोहन पाण्डेय /56
- सुख बाटे चरदिनहा - सुरेश गुप्त / 59
- ननकी दियरिया - - सुरेश गुप्त / 59
- डिजिटल हो गइनी - निर्भय शुक्ला "निनाद" /60
- दीपशलभ - मार्कण्डेय शारदेय / 61
- हाल ई हमरो जाई के - रघुबंशमणि दुबे /66
- महाकवि - अवधेश मिश्र रजत / 67
- दुर्गा बंदना-(चंचला छंद) - माया शर्मा / 77
- सीता के पिण्ड दान गाथा - चौपाई - माया शर्मा / 77
- शब्द - अरविंद श्रीवास्तव /78
- मोल अँचरा के बुझाये लागल– पं. संजीव शुक्ल "सचिन" /78
- कहाँ गइल - शैलेन्द्र कुमार साधू / 83
- कैसे करीं - राजू साहनी / 83

गीत/ गजल
- डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 10
- भोजपुरी माई के गोहार - शशिरंजन शुक्ल "सेतु" / 27
- सावन आइल - रामप्रसाद साह / 27
- सवनवा आईल ना - अखिलेश कुमार अरुण / 31
- आल्हा छंद - डॉ उषा किरण / 31
- भोजपुरी ग़ज़ल - बिद्या शंकर बिद्यार्थी / 38
- पुरइन के पतई - आकाश महेशपुरी /38
- भोजपुरी दोहे - विमल कुमार / 39
- सीमवा से बा टेलीफून - विमल कुमार /39
- आइल बरखा बहार - संजय कुमार राव /41
- ग़ज़ल - गणेश नाथ तिवारी "विनायक" /41
- भइल बा - अमरेन्द्र कुमार सिंह / 54
- बेटी क गोहार - कृष्ण मुरारी राय /54
- बाप बेटा में पटे ना - दीपक तिवारी /55
- हिया में उतरेला - दीपक सिंह /55
- भोजपुरी ग़ज़ल - पिपासु प्रमोद / 68
- नवगीत(भोजपुरी) - पूनम सिन्हा "प्रीत" /68

पुरुखन के कोठार से
- राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता /11
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 12

नाटक/एकांकी
- परवरिस - विद्या शंकर विद्यार्थी / 45

आलेख/निबंध
- लोक विद्या या कि फोकलोर-डॉ। जयकांत सिंह 'जय'/13
- राजनीती के माने मतलब - तारकेश्वर राय "तारक" / 57
- विजयादशमी : एगो समूहवाची अभिब्यक्ति - परिचय दास / 71
- भोजपुरी के संत कवि:धरनी दास-निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 73

शब्द कौतुक
- घर के आस पास- दिनेश पाण्डेय / 18

संस्मरण
- बबुआ हो, हीक भर देख लs- उदय नरायन सिंह / 25
- माई से बढ़िके माई के इयाद - भगवती प्रसाद द्विवेदी / 69

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 79
सतमेझरा- 1-5, 85-88

भोजपुरी भाषा के आत्मा गीत-गवनई में बसेला । ओ आत्मा के मुआवे-मेंटावे के बेवस्था भोजपुरी के तथाकथित स्वनामधन्य स्टार गायकलोग आ म्यूजिक कम्पनिन के साँठगाँठ से लगातार जारी बा । एम्मे दोसिहा खाली उहे लोग रहित त एकहक गवइया के चालीस- पचास लाख भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) ना रहितें। ए कुसंस्कारिन के एतना भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) बिदेसी भा गैर भोजपुरीभाषी लोग त नाहिंए ह। ई सबलोग भोजपुरिया ह आ जाने- अनजाने ए लोग के लाखन- करोड़न रुपया हर महीना दे रहल बा । कचरा गीत-संगीत पर मिलल राउर रुपया ए लोग के मरजादाहीन बना दिहले बा। राउरे रुपया "फुहरपन बन्द करावेवाली" रउरी आवाज के दबा देबे में भरपूर सहजोग करता ।

रउआँ सही में भोजपुरी गीतन से फुहरपन मेंटावे चाहतानीं त "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" के निहोरा मानीं आ कहीं रउरा केहू का पेज भा यूट्यूब चैनल पर फूहर गीत मिलता त चार गो काम करीं:-

१) चैनल भा पेज पर फूहर गीतन के डिस्लाइक(नापसंद) करीं।
२) रिपोर्ट करीं।
३) पेज आ यूट्यूब चैनल के अनफालो करीं।
४) पेज आ चैनल के ब्लाक करीं।

भोजपुरी गीत-गवनई के मान सम्मान बचावे आ पुराना गौरव वापिस ले आवे खातिर ऊपर लिखल काम जरूरी हो गइल बा।

भोजपुरी हमार ह, राउर ह आ सबसे बढ़ि के हमरी आ रउरी पुरुखन के थाती ह। एक्के हमनीं धनलोलुप लोगन का भरोसे ना छोड़ल जाई। बिना कवनो भेदभाव के आजुए से ई काम सुरू क दिहल जाउ आ हर भोजपुरिया अपना दस गो इयार दोस्त से ऊपर लिखल काम जरूर करावे। कुछुए दिन में परिणाम सामने आई।

निवेदक-
प्रधान सम्पादक,
सिरिजन
(जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया)

साहित्य अकादेमी

डॉ. अशोक द्विवेदी जी

श्री अनिल ओझा 'नीरद'

साहित्य अकादमी (भारत सरकार), की ओर से साल 2021 के "भाषा सम्मान" के घोषणा भइल।
भोजपुरी भाषा मेंउत्कृष्ट लेखन आ जोगदान खातिर संयुक्त रुप से ई सम्मान मिलल।
भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका "पाती" के यशस्वी सम्पादक डॉ. अशोक द्विवेदी जी
आ लेखक श्री अनिल ओझा 'नीरद' जी के ।

"सिरिजन" की ओर से बहुत-बहुत बधाई अउर शुभकामना।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

श्री प्रकाश उदय जी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ की ओर से साल 2020 के "राहुल सांकृत्यायन" पुरस्कार के घोषणा भइल।
ई पुरस्कार साहित्यकार श्री प्रकाश उदय जी के कृति "अरज निहोरा" के मिलल ।

"सिरिजन" की ओर से बहुत-बहुत बधाई अउर शुभकामना।

गाँव में गवईं संवेदना के जियतार राखे के परी.....

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

अब गाँव में ऊ गाँव नइखे, जहवाँ सीधा, सरल, सहज जीवन, नेह-छोह दुलार भेंट अँकवार बिना खोजले एक एक अदिमी में मिल जात रहे। अब ई सब गाँव पर लिखल कवनो किताब में भले मिल जा बाकी हकीकत में गाँव में त ना मिली। अब जे भी गाँव में जा के ई सब खोजी ओ के गाँव से भागे के परी। हमरा कबो कबो ई लागेला कि लालच आ स्वार्थ के मतलबी बयार में शहर से ढेर अधिका परदूषित हो गइल बा गाँव के रहन- सहन। गाँव में बूढ से ले के जवान ले अपने आप के राजनीति ज्ञान में चाणक्य के काका से कम नइखे आ पढ़ाई लिखाई के प्रति जागरूकता उत्साह बाँस के पुलुई टांग दिहल गइल बा। गाँव के मेहरारू आ लइकी लोग भी फैसन के अंधानुकरण करे में पीछे नइखे । टीबी के सास पतोह अउर प्रेमी प्रेमिका के फूहड़ चरित्र आ घरफोड़ू कहानी वाली सीरियल से एक्को घर प्रभावित भइला से बाँचल नइखे।

गाँव में सबसे जियादा बदलाव भइल बा त गवईं राजनीति में। इर्ष्या, द्वेष, डाह आ जलनखोरई की राजनीति से गाँव के विकास आजु ले एकदम रुकल बा। अपना लोग के दबा के राखे में गवईं राजनीति जी जान से लागल बिया। डाँड- मेंड़, खेत-खरिहान के झगड़ा होखे बा पट्टीदारी के रगड़ा गाँव के अदिमी आपन राजनीतिक दाँव- पेंच लगवला से नइखे चूकत। गोएड़ा के खेत धोखाबाजी से सोमरा क के तूतमलंगा के बीया बो के जहर उपराजल जात बा। भाई के भाई नुकसान करे खातिर कवनो स्तर पर जा सकत बा। कवनो मामूली सहायता करे के नाम पर छोट मोट दलाली साधारण बात बा। दारू केबल पर कुछ बकलोलन के चलते चयनित अंगूठा छाप मुखिया भी गाँव तक सरकारी योजना पहुँचा ना पवलन। सरकारी फाइल में गाँव में बदलाव के बयार बह रहल बा। गाँव के हालत सुधर रहल बा। भौतिक संसाधन के पहुँच गाँव तक भइल बा बाकी रिश्ता में बनावटीपन आ गइल बा। सरकारी स्कूल त नया बन गइल बाकी पढ़ाई के नाम पर उहे लीपापोती अब्बो बरकरार बा।

खाली एगो छोट मोट भौगोलिक चौहद्दी के नाव गाँव ना ह। हजारन बरिस के परम्परा, हमनीं के लोक-जीवन आ लोक-संस्कृति जवना पर खड़ा बा ओकरे गहिराह बुनियाद के नाव गाँव ह। आपसी प्रेम, सद्भाव के, नेह-छोह के सबसे वैचारिक प्रभावशाली मंच के नाव गाँव ह। अब गाँव में ऊ गाँव नइखे। माटी उहे बा बस ओ माटी से बनल लोग खाँटी ना रह गइल। बदला लेवे की चक्कर में बदल रहल लोग संवेदनहीन हो गइल बा। गाँव के भोलापन पर काँइयापन हाबी बा। गाँव जरूर बदले, सुबिधा सम्पन्न होखे ई नीमन बात बा लेकिन गाँव में गवईं संवेदना आ आदमियत के जियतार राखे के परी।

अन्त में सिरिजन के ई अंक कइसन लागल अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराईं। पढ़ीं आ दोसरो के पढ़े खातिर उकसाईं।

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

आपन बात

समय बलवान ह, जब ई करवट बदलेला न, त ओकरा पीठी तर ना जाने का का दबा जाला, बिला जाला, बड़हन-बड़हन दुख के घाव भर जाला। कुछ चीझन के बहुते इयाद आवेला। देखीं ना, आपन पड़ोसी देश अफगानिस्तान के जेकरा साथे हमननि के सदियन से व्यापारिक रिश्ता रहल बा। ओहिजा से किशमिश, अखरोट, बादाम, अंजीर, पिस्ता, सूखल खुबानी, अनार, सेब, चेरी, खरबूजा अउरी मसाला जइसे हींग, जीरा, केसर जइसन चीजन के खरीदत आ रहल बा आपन देश, ओकर हालात- केतना तेजी से बदलल बा। बिना कवनो बिरोध, लड़ाई, खून खराबा के आसानी से सत्ता पर आतंक के पुजारी के रूप में दुनियाँ भर में बदनाम तालिबान नाँव के संगठन काबिज हो गइल। बेशक पूरा विश्व के लोकतांत्रिक मूल्यन में यकीन राखे वाला खातिर ई चिंता के विषय बा, सत्ता परिवर्तन, तालिबानियन के हालिया बयान अउरी क्रियाकलाप से उम्मीद के किरिन लउकत बा । सबकर साथ अउरी सबके मिलाके चले जइसन उदारवादी बात भी कह रहल बा तालिबान। आतंकवाद के विचाराधारा के बढ़ावा देवे वाला ओकर अतीत के देखि के, खाली ओहिजे के आवाम के मन मे शंका नइखे बलु सगरी दुनिया के मन मे चिंता बा, आ ओकर फिकिर कइल बेजायँ त नहिये कहाई । इंसानियत के आपन जिनिगी के थाती माने वाला, कबो तालिबान के समर्थन ना क सके । पड़ोसी देश के बदहाल अउरी आपदाग्रस्त स्थिति के असर अपनो देश पर पड़े के डर बा, ब्यापारिक रिश्ता में भी तनाव आ रहल बा, आवे वाला समय ही बताई कि तालिबान केतना बदलल बा ?

हाल ही में सम्पन्न भइल पैरालंपिक में आपन देश के खिलाड़ियन के प्रदर्शन शानदार रहल, एगो नाव इतिहास लिख दिहलस ऊ जमात जवन शारिरीक रूप से पूरा नइखे, दिब्यांग के रूप में समाज में जेकर पहिचान बा। असफलता से जेकर रोज हाथा पाई होला, खेलल आ ओहुमें मेडल लियावल त खाड़ चढ़ाई जइसन मुश्किल काम बा, लेकिन हौसला के आगे शारीरिक अक्षमता भी हार मान लिहलस आ समय के छाती पर सफलता के झंडा गाड़ दिहलस ई गोल। एह बेर के पैरालंपिक अब तक ले भइल कुल्हिये पैरालंपिक से सफल रहल।

तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

एह बेर देश के बेटी अवनि लेखारा महिला लोग के 10 मीटर एयर राइफ़ल शूटिग मुक़ाबला में पहिला हाली गोल्ड मेडल जीतली, जब ऊ हविलचेयर पर बइठ के गोल्ड मेडल लिहली आ पाछे से राष्ट्र गान बाजल त हर भारतवासी के सिर गर्व से ऊँचा हो गइल, भले ऊ हविलचेयर से खाड़ ना हो पवली, लेकिन उनकर सम्मान में सब लोग खाड़ होखे प मजबूर हो गइल। भारत टोक्यो पैरालंपिक में कुल 19 मेडल जीत के अब तक के आपन सबसे शानदार प्रदर्शन दुनियाँ के सोझा रखलस। भारतीय खिलाड़ी लोग पैरालंपिक में कुल पाँच गोल्ड मेडल, आठ सिल्वर और छह ब्रॉन्ज़ मेडल जीतलन। पैरालंपिक में हिस्सा लेवे वाला हर खिलाड़ी के जिनिगी दुःख तकलीफ संघर्ष से भरल रहल बा लेकिन ऊ लोग हार मान के रूकल ना, संघर्ष असफलता के ही कामयाबी तक जाए वाला सीढ़ी बना लिहलस। दिल दुखाइल जब पैरालंपिक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कइला के बावजूद, मुख्यधारा के मीडिया में ऊ तवज्जो ना मिलल, जवन टोक्यो ओलंपिक 2021 के खिलाड़ियन के मिलल, अगर ब्यवसायिक संस्थान आ मीडिया के पैरालंपिक के खिलाड़ी ओह योग्य ना लागलन, त बेशर्मी के पदक पावे के प्रबल दावेदार बा ऊ लोग। जनमानस त पैरालोम्पिक के खिलाड़ीयन के सम्मान में सोशल मीडिया पर पोस्ट के बाढ़ लिया दिहलस। नमन बा बन्दन बा अभिनन्दन बा रवुरा लोग के खेल के जज्बा के हौसला के।

एहि तिमाही में बापू के नाव से मशहूर गान्ही बाबा के जन्मदिन पड़ी। कवनो काम छोट ना होला साफ सफाई अउरी कुटिर उद्योग से ही आम जन के स्वास्थ्य आ आर्थिक हालत सुधरी, समाज आत्मनिर्भर बनी। कई दशक बितला के बादो, आजुवे के कमोबेश इहे सच्चाई बा। त्याग से शक्ति तक अउरी धन से बिद्या तक चले वाला दिन शुरू हो गइल बा, कहेके मतलब नौ दिन के नवरातर के पावन सुगन्ध से जनमानस के हिया प्रफुल्लित बा।

शक्ति के कुल्हिये रूप एक के बाद एक आवे खातिर केवाड़ी खटखटा रहल बा। ई हमनी पर निर्भर करता कि एकर आवाज सुनेके बा गुनेके बा कि अनसुना करे के बा। नवरातर खाली गुजर जाए वाला आम दिन नीयन ना होला, ई आत्मा के शुद्ध करेके साफ करेके मोका देला । नवरातर के नौ देवी के स्वरूप के खाली पूजा क के ना बल्कि हर स्त्री जाति के ओकर अंश मानी के ओके सम्मान देवे के बिचार अगर मन में जाग जाव त सही मायने में नवरातर के त्योहार मनावल सफल कहाई।

नैतिक मूल्य मानवीय आदर्श के जीवन के थाती मानेवाला आपन देश तेवहारन के मामिला में भी बहुते धनी रहल बा, एगो बितेला त दूसर के आवे के धमक सुनाए लागेला। कहेके मतलब पूरा साल ही तेवहारन के मधुर मिलन से जुड़ल रहेला। जातीय धार्मिक समाजिक भेद भावना कटुता अउरी राजनीतिक कारण से उपजल खाई के भरे के काम तेवहारे करेला । तेवहारन के शुरुआती दौर से लेके आजतक एकर पावन रूप जस के तस बा, केतने जुग आइल गइल लेकिन तेवहार के महता आजुवो बनल बा । ई तिमाही दुर्गा पूजा, धनतेरस, दिया दियारी, गोवर्धन पूजा, भाई दूज जइसन तेवहारन के सुगन्ध से महकी, हमननिके जिनिगी के गुलजार करी, परिवार बटोराई, नव ऊर्जा मिली बाकी जिनिगी ख़ातिर।

चढ़ते सूरज ही जग में पूजालन एह जुमला के झुठलावत लोक आस्था के पर्व छठ के पावन मोका पर दिन के समापन के घोषणा करत अस्तगामी सुरुज देव भी छठ बरती के पूजे वाला देव के आसन पर बिराजमान हो जालन ।कवनो पूजा में अस्थान ना पावेवाला फल मूल भी छठ बरती के दवुरा में जगह पा जालन आ सदेह ना पहुँचल बेटा के भी एह मोका पर गावे जाए वाला गीत में जगह दियाला आ दउरा घाटे पहुँचावत उन्हीं के बतावल जाला। देश दुनियाँ में केहू कतहुँ रहो, आम होखे खास होखे, जीवन यापन के शैली केतनो आधुनिक होखे, लेकिन कपार पर ही दउरा लेके घाट तक पहुँचावे के रीत बा अपना समाज में। खुशी खुशी निभावेला सभे। बिना कवनो पुरोहित पण्डित जी के मनावे जाये वाला ई लोकआस्था के पर्व छठ के ख्याति आधुनिक जुग में भी बढ़न्ती पर बा । समय के रंग सबपर चढेला केहू छूटे ना, हँ केहू पर ढेर त केहू पर थोर, कागज पर छपे वाली पत्र पत्रिका किताब अखबार पर भी एकर असर साफ लउकता। कागज वाला दौर आपन सोनहुला वक्त काट के काल के गर्भ में समा चुकल बा । समय बदलल तकनीक बदलल त साहित्य कला के रंग-ढंग में भी बदलाव आइल । ई बदलाव हमनीके किताब अखबार पत्र पत्रिका से मोह के तोर दिहलस । स्मार्ट फोन हाँथ के घड़ी कैलेंडर रेडियो कैमरा जइसन अनगिनत चिझन के साथे इयार दोस्त आ घर भर के हँसी मजाक संवाद के भी अपना काँखी में जाँत लिहलस। बड़ बुजुर्ग बात चीत खातिर तरस रहल बाण। संचार माध्यम में क्रांति त आ गइल बा, लेकिन ई अलग बात बा कि क्रांति के बावजूद भी ना त केहू एक दूसरा के दिल के हाल जान पावत बा ना केहू खुल के ठीक से बता ही पावत बा। चिठी पतरी के जब जमाना रहे त जगह सीमित रहे लेकिन बात असीमित रहे, अंतर्देशी के मोरे वाला जगह भी खाली ना छोड़ाय ओहु पर सन्देश लिखाव, आ अब जगह सुविधा असीमित बा लेकिन दिल के हाल बतावे वाला शब्दन के मामिला में हमनीके दिन पर दिन कंगाल होत जात बानी जा।

आज प्रायः हर हाथ मे मोबाइल बा ओहुके हाथ मे जेकर मासिक आय मोबाइल के कीमत से आधिए बा। खैर हमनीके सिरिजन ई पत्रिका के माध्यम से माईभाषा के मिठास आ पावन रूप के अधिका से अधिका लोगन के हाथ तक यानी कि मोबाइल तक पहुँचावे के कोशिश में लागल बानी जा। हमनीके पढ़े लिखे वालन के बीच संवाद के नावा माध्यम के सहयोग से प्रयास भर कर रहल बानी जा, रवुवा पढ़ी आ ठीक बुझाय त रवुवे नीयन साहित्य प्रेमी के भी आगे भेजी, ई पावन यज्ञ में रावुर सहयोग भी सुनिश्चित हो जाई, आ अगर आपन प्रतिक्रिया से अवगत करा देब, त हमनीके आगे के राह आसान हो जाई।

राऊर आपन,
तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

परिकल गदहा भुसउले जाव

–डॉ. अनिल चौबे

ग्राम पंचायत के चुनाव में कूदन बाबा के नाती अंगूठा छाप मुखिया प्रत्याशी के समर्थन में नारा लगावत रहे केतनो करबऽ माई माई जितिहें। गाँव के सीआइडी प्रमुख सबीतरा बुआ बतवली कि ए बबुआ! एकर दिन भर के फीस बा चार गो फ्रूटी, उहे पी लेला आ दिन भर टोला चकोहत रहेला। हमरा ई सब सुनि के तनिको अचरज ना भइल काहें कि एकर बापो नान्हे से अपना बाप कि चुनौटी से खइनी चोरा-चोरा के खात रहलन। ई अपना कुल खानदान के परम्परा आगे बढ़ावत बा। शाहरुख खान जुबाँ केशरी कहि के गुटका के प्रचार करेलें त उनकर बेटवा रेव पार्टी में ड्रग्स का साथे गिरफ्तार भइल बा। त एम्में अचरज ना करे के चाहीं।

सबीतरा बुआ के गाँव से एक्को वार्ड सदस्य ले ना जीत पवलें। बुआ के मियाज कुफुताइल रहे। झनक के फेरु कहे लगली- का बताईं ए बबुआ! हमारा गाँव के कुल बोंका बाड़S सन। ई आन गाँव के बकरी, मुर्गी आ फ्रूटी खातिर भीतरे- भीतर साँठ-गाँठ क लेले रहले ह सन। जाति- पाति के अइसन जहर पसरल ह जइसे मुखिया ना चुन के जीजा चुने के होखे। उफ्फर परो ई मुखिअई के

चुनाव जवन गाँव के आधा लइकन के पियक्कड़ बना दिहलस। का बाभन आ का नोनिया, सब के दारू चाहीं। बिकास से कवनो मतलब नइखे। गाँव के नाँव अन्हारी बारी आ होम करे के पल्लव ना। हमरा गाँव के कुल्हि बोंका रेंड़वारी में जा के बुझले बाड़े सन कि बृंदावन में आ गइनीं जा। ग्राम पंचायत चुनाव में ई हाल हो गइल रहल कि जेकरा बाप के हवा छोड़े के सहूर- ढंग ना रहे उहो हवा बनावल ह आ ओकरो बेटा मोटर साइकिल पर पीछे बइठ के शंख बजावल ह। जेकर आजा अन्हारे मरि गइलन उहो बाजा बजा के नाचल ह, अपना आप के पावर हाउस समझल ह। सात गो गिहथिन रहली ह तब्बो मठ्ठा पातर हो गइल।

गाँन्ही बाबा के ग्राम सुराज के सपना का साकार होई, जब बारी के बारी कोइलासिए बा? अब ओ के कइसे कवर घोंटाई जेकर अहरा कुकुर अगोरत बा? एक बेर के बात नइखे, हर साल इहे होला- परिकल गदहा भुसउले जाव। केकर केकर उदाहरण परतोख दीं, पूत जनमले लोलक लइया, बोवे धान पछोरे पइया। केहू के नाँव ले लीं त झगड़े के जरि बा। केकर केकर लेईं नाँव, कमरी ओढ़ले सगरी गाँव। बाकी पुरनके चाउर पंथ पड़ेला। जे जवन बोई उहे काटी। छोड़ीं हमरा कवन काम बा कुछु कहला के?

◆ ◆ ◆

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभाग अध्यक्ष (उर्दू)
डॉ। पी एन सिंह महाविद्यालय छपरा

आज के

कहवाँ बरसी बताईं घटा आज के।
तेज़ अचके भइल बा हवा आज के॥
रउआ नेहिया के दियना बा जगमग अबो,
तबहूँ कहवाँ चलत बा पता आज के।

बाट जोहत में अंखिया बा पथरा गइल,
आ रहल बा समय पर दया आज के।
रूप के धूप में लोग विचलित भइल,
बे मजा हो रहल बा कथा आज के।

झूठ का खेल में साँच लसरा गइल ,
का बताईं- सुनाईं दशा आज के ।
लोग एहसान के बा भूला के चलत ,
कतना बदलल बा मौसम-छटा आज के।

माई - भाषा के जयकार होखे सदा ,
बस ई सपना बा जौहर दुआ आज के।

◆ ◆ ◆

हम का जानी

अच्छा-खासा खेल-तमाशा, हम का जानी।
उलटा-सीधा तहरे लिला, हम का जानी॥

एड़ी, दोरी, तिलया, चौरी-चाभा ले बा।
धोखा के ई ताना-बाना, हम का जानी॥

निकल गइल विश्वास समय का हाथो से।
झूठो इहवाँ साँच कहाला, हम का जानी ।

तहरा भरमावे आवेला लूटऽ - पाटऽ ।
मिथक वादा, खास बहाना, हम का जानी॥

दाढ़ी-टोपी, चंदन-टीका हाय-हाय।
अइसन होलें भक्त-दीवाना, हम का जानी ।

अतने भर बा, साँचो जगत के जौहर जी ।
लागल बाटे आना-जाना, हम का जानी॥

◆ ◆ ◆

देख लीं

चुपके-चुपके प्यार के, दिअना जरा के देख लीं।
आस के तुलसी कबो, मन में लगा के देख लीं॥

ई जवानी ई उमर, केकर रहल बा जे रही।
तार वीणा के बचा के, कुछ बजा के देख लीं॥

शब्द-अक्षर में कबो ऊ, दर्द ना उतरी, हजूर।
प्रेम में जे दर्द बा, ऊ आजमा के देख लीं॥

हाट में बा रूप के, तितली कमल भौंरा के मोल।
आँक लीं जिनगी के अब, पर्दा उठा के देख लीं॥

भाग में केकरा बा जूही, बेला आ चम्पा गुलाब।
हाथ के रेखा चलीं, रउवो देखा के देख लीं॥

आज बा सगरो भरम के, बोल-बाला गाँव में।
कुछ हटा के, कुछ बचा के, कुछ लुटा के देख लीं॥

गाँव में अन्हरन के 'जौहर' के किनी दर्पण भला।
पग तनी रउवे बढ़ा के, कद घटा के देख लीं॥

◆ ◆ ◆

भोजपरी गीत सम्राट

पं० राधा मोहन चौबे 'अंजन जी'

दियना

जवने दियना के तेलवा ओराइल होई,
ओकर बतिहर जरवला से का फायदा।
जवने जिनगी के विधना जरा दिहले बा,
ओइपर मरहम चढ़वला से का फायदा।

दोस केहू के ना करम फेर ह,
अपने रूठेला दुनियाँ के अनहेर ह,
कवनो पनकत जिनिगिया जो होखे कहीं,
ओके हरदम चरवला से का फायदा।

ए जवानी के जिनगी बोलावेले जब,
कवनो अँखियन के आपन बनावेले तब,
अपने सपना के तसवीर खिचे सभे,
केहू के खींचल मेटवला से का फायदा।

एक से एक बड़हन सुखद छाँव बा,
एक से एक बड़हन बढ़ल पाँव बा,
बाकी असमय में कामे ना आवे केहू,
फेरु गिनती गनवला से का फायदा।

आदमी हो के साथी जे बा घात के,
फेरु पॉलिस चढवला जे बात के,
ओइसन अँखिया ना अंजन रचावे कबो,
छल के संघति निभवला से का फायदा॥

मुक्तक

मछरी का बाजार में, दही ना बिकाई,
चोरन के गाँव, डाकून के चौराह के जाई,
हमरा घर में ताड़ी के ठिलिया बा,
खोजबी त तुलसीदल ना भेंटाई।1।

पढ़ि-लिखि के गंवार हो गइल,
माई-बाप बूझल जे होशियार हो गइल,
कबो-कबो कुपातर जनमि जालें,
दिया बराइल तबो अन्हार हो गइल।2।

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता कुक्कर(अध्याय - 5)

हमरा कुक्कर के चीन्हीं त ओकर दोसर उपमा न हवे ।
बस थोरे में बुझि जाईं कि ऊ गेंडा सिह समान हवे ॥9॥

बाकी कुछ दिन से एहू में एक बाउर रहनि धरात हवे ।
एही से अब कुछ लोगन के मन एहू पर अनुसात हवे ॥10॥

कुछ छुटहा और बे गोसयाँ के कुकुरन के एगो गोल हवे ।
ओकनी से एकरा आपुस में कुछ मेल जोल के बोल हवे ॥11॥
कबें कबें ओकनी का संहति में इहो जब आ जाला ।
ओकनी के चालि पकड़ि लेला सब आपन चालि भुला जाला ॥12

ओकनी के भोकल सुनत सुनत एकरो मन उहाँ बिगड़ि जाला ।
तब बिना जियाने राह चलत निमनो अदिमी पर पड़ि जाला ॥13
वंशस्थ :-
दियात बाटे कवरा सनेह से जुझार बा कुक्कर जौन क्षेत्र के ।
अघाउ आपे सुख खाइके भले सदा रहो भोंकत आँखि मूनिके ॥14॥

◆ ◆ ◆

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता कुक्कर (अध्याय - 6)

सन बावन से सन तिरसठ तक जब जहाँ जरूरत पड़ल हवे ।
कुक्कर हमार ई तब तहवाँ घोघिया घोघिया के लड़ल हवे ॥1॥

लेकिन सन चौसठि में एकर मन लड़त लड़त अगुताइ गइल ।
आ दुशमन दल का कुकुरन में मिलि जाए के ललचाइ गइल ॥2॥

दुशमन दल का कुक्कर के जब एकरा अनुकूल विचार मिलल ।
तब त दूनूँ दल का मानो बूड़त का एक अधार मिलल ॥3॥

ओह दल के कुकुरा कहले सन अब भोंकल व्यर्थ निवार तूँ ।
बारह बरीस तक भोंकि भोंकि का पवलS तनिक विचार तूँ ॥4॥

सगरे ऊँखी का खेतन के करिह अब से रखवारी तूँ ।
हमनी का जवन कहबि ओहि में अब भरिह सदा हुँकारी तूँ ॥5॥

लोक विद्या या कि फोकलोर

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'
मुजफ्फरपुर

'लोक' बहुअर्थी शब्द ह। बाकिर जब ई साहित्य, संस्कृति, विद्या, विश्वास आदि शब्दन के आगे जुड़ जाला त एकर अर्थ हो जाला आम आदमी, सामान्य जन समुदाय, गंवई जीवन जीये वाला स्वाभाविक मनई, विज्ञापनी-बनावटी तामझाम से दूर जमीनी जीवन जीए वाला प्रकृतिप्रेमी इंसान आदि। 'लोक' शब्द से संबोधित एह जन समुदाय का सहज-स्वाभाविक प्राकृतिक ज्ञान, जीवन-व्यापार, प्रथा-पेशा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, विश्वास-धारना, आस्था-मान्यता, तंत्र-मंत्र, क्रिया-कलाप, विधि-विधान, परम्परा-पहचान, गीत- गाथा, कथा-कहानी, नृत्य-नाटक, लोकोक्ति-मुहावरा वगैरह का बोध करावे वाला विद्या भा जानकारी के लोक विद्या कहल जाला। भारतीय ज्ञान के संदर्भ में इहे लोक विद्या कालक्रम से परिष्कार पाके समय-समाज का प्रगतिशील अपेक्षा के अनुरूप शास्त्रीय विद्या के रूप ले लेवे ला। पच्छिम के विद्वान एकरा के आदिम मानव भा प्रगतिशीलता भा आधुनिकता के धारा से पिछुआइल जन समुदाय से जोड़ के एकर मूल्याकंन घटा देलन। बाकिर भारतीय विद्वान लोग शुरू से लोक आ शास्त्र का ज्ञान के एक-दोसरा के पूरक आ सहायक मानत आइल बाड़न। अइसे अब पच्छिमो के विद्वान लोग भारतीय लोकविद्या विषयक विद्वानन का विचारन के समर्थन करत नजर आ रहल बाड़न। लोक विद्या खातिर अंगरेजी में 'फोकलोर'शब्द चलेला।

'फोकलोर' शब्द एगो सामासिक शब्द ह। जवन 'फोक' आ 'लोर' शब्द का मेल से मिलल बा। एकर फोक (Folk) शब्द बनल बा ऐंग्लो सेक्सन शब्द फोल्क (Folc) से। एकरा के जर्मन में वोल्क (Volk) कहल जाला। पच्छिम में एगो विद्वान भइलें डॉ। बार्कर। ऊ एह फोक शब्द के व्याख्या करत कहलें कि एह फोक शब्द से सभ्यता (सभ्य समाज) से दूर रहेवाला कवनो सउँसे जाति के बोध होला। बाकिर एकर व्यापक अर्थ लिहल जाए त कवनो सुसंस्कृत राष्ट्र के सबलोग एह शब्द से संबोधित हो सकेलें।

फोकलोर में दूसरका शब्द बा 'लोर' (Lore)। ई लोर शब्द ऐंग्लो सेक्सन 'लर' (Lar) से बनल बा। एह 'लोर' भा 'लर' के अर्थ होला ज्ञान भा नालेज (Knowledge) चाहे विद्या भा ज्ञान (Learning)। एह तरह से फोकलोर शब्द के शाब्दिक अर्थ भइल लोक विद्या चाहे लोक ज्ञान)। जवना के उल्लेख ऊपर कइल गइल बा। ऊ कुल्ह चीज एह 'लोक विद्या' मतलब 'फोकलोर' के सीमा-रेखा का आंतर में आवेला।

पच्छिम में पहिले लोक विद्या यानि फोकलोर का अध्ययन क्षेत्र में आवेवाला एह विषय सामग्रियन के लोकप्रिय पुरातत्व के सीमा रेखा में गिनल जात रहे। आजुओ एह फोकलोर शब्द खातिर जर्मन में 'फोल्क्स कुण्डे' (Folks Kunde) शब्द चलेला। बाकिर लोक ज्ञान भा लोक विद्या खातिर दुनिया में 'फोकलोरे' शब्द ज्यादे प्रचलित बा। जवना विषय सामग्री खातिर पहिले लोकप्रिय सामग्री (Popular Antiquities) चाहे लोकप्रिय साहित्य (Popular literature) शब्द चलत

रहे। ओकरा खातिर सबसे पहिले सन्1846ई। में विलियम टोम्स (William Thoms) एम्ब्रोज मर्टन (Ambrose Merton) छद्म नाम से ' द एथीनियम '(The Athenaeum) नाम के पत्रिका में आपन एगो आलेख छपववले, जवना में उनकरे प्रस्ताव रहे कि ' लोकप्रिय पुरातत्व सामग्री' के जगहा सुन्दर सेक्सन सामासिक पद (Good Saxon Compound) 'फोकलोर' शब्द के बेवहार करेके चाहीं। ऊ एकरा अन्तर्गत रीति, प्रथा, विधि-विधान, अन्धविश्वास, लोकगाथा, लोकोक्ति आदि के अन्तर्भाव मनले रहलें। एह तथ्य के जानकारी देत ' द स्डरी ऑफ फोकलोर ' में एलन डन्डी लिखलें कि

'In 1846 William Toms using the name Ambrose Merton, wrote a letter of " The Athenaeum" in which he propased that a ' Good Saxon Compound) ' Folklore ' be employed in place of suchlebels as " Popular Antiquities " and Popular literature। Noteworthy is Tom's conception of folklora and gis essentially enumerative definition; manners, customs, obsevances, superstitions, ballads, proverbs and so forth ।" (Alan Dundes ; The Styde of folklore, page-4)

विलियम टाम्स अपना पत्र में फोकलोर से जुड़ल विषय सामग्री के क्रमवार खतम होखे के बात स्वीकार करत ओकरा के बचावे खातिर पहल करेके बात कइले रहलें। ऊ फोकलोर के व्याख्या करत एकरा के आम जनता के ज्ञान भा विद्या मतलब लोक विद्या (A lore of the people) कहले बाड़न। बाद में चलके ई लोकविद्या भा फोकलोर शब्द अथवा विषय बहुते लोकप्रिय हो गइल।

पच्छिम के कुछ विद्वान फोकलोर के जनता का संस्कृति के अध्ययन मनले बाड़न त कुछ एकरा साहित्यिक रूप पर अधिका जोर देले बाड़न। मेरियो लीच अपना संपादित ग्रंथ ' डिक्शनरी ऑफ फोकलोर, माइथोलॉजी एंड लीजेण्ड ' में कइगो विद्वान के फोकलोर से जुड़ल परिभाषा रखले बाड़न। विलियम वास्कम के अनुसार एकर सम्बन्ध पुराण, गाथा, लोककथा, लोकोक्ति, पहेली वगैरह विषय से बा जवना के माध्यम मौखिक शब्द बा। मानव विज्ञान के जानकार लोग के अनुसार एकर अध्ययन क्षेत्र प्रथा, अन्धविश्वास, कला, शिल्प, वेश-भूषा, गृह के प्रकार आ भोजन सामग्री आदि से बा -

' The term folklore has come to mean myths, legends, folktales, proverbs, riddles, verse and variety of other forms of artistic expression x x x x Folkorists are interested in customs, arts and crafts, drass, house-types and food recipes।'

-(डिक्शनरी ऑफ फोकलोर; मेरियो लीच पन्ना -314)

एकरा अलावे एटेलियो एस्पिनोजा, जॉर्ज फास्टर, आर। डी। जेमर्सन, मेकएडवर्ड लीच, आर्चर टेलर, जॉन मिश आदि फोकलोर का सामग्रियन के प्रायः सामाजिक मानव विज्ञान (Social Anthropology) के विषय सामग्री मानके एकरा सीमा क्षेत्र में पारम्परिक लोकविश्वास, लोकसाहित्य- कथा, गीत, गाथा आदि , जादू, बुझउवल, खेल, सुक्ति, कला-शिल्प, लोकनृत्य आदि के गिनती कइले बाड़न। एह तरह से एकर क्षेत्र बहुते विस्तार लेले बा। जॉन मिश के मत से, मानव जीवन के हर क्रिया-कलाप एकरा सीमारेखा में आ जाई।

ई सब त भइल फोक आ फोकलोर से सम्बन्धित पच्छिमी विद्वानन के विचार आ परिभाषा। बाकिर भारतीय ज्ञान-परम्परा के मोताबिक इहाँ के 'लोक 'शब्द फोक से बहुते पुरान आ बहुअर्थी बा। ई लोक शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शने' धातु से घञ् प्रत्यय के मेल से बनल बा। एह धातु के अर्थ होला- देखल। जवना के लट् लकार अन्य पुरुष एक वचन के रूप होला- लोकते। ऊह से लोक के अर्थ हो जाला- देखेवाला। एह तरह से ऊ समस्त जन समुदाय, जे ई काम करेला लोक कहा सकेला। एही लोक से लोग शब्द बनल बा। जवना के अर्थ होला सामान्य जन भा जन समुदाय। अइसे त एह लोक शब्द के बेवहार ऋगवेद में आम जनता भा जन के अर्थ में कए जगे भइल बा। एकरा पुरुष सुक्त में लोक शब्द जीव आ जगह दूनों खातिर आइल बा -

' नाभ्या आसीदन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।
पदभ्यां भूमि: दिश श्रोत्रात्, तथा लोकानकल्पयत्॥'
(ऋगवेद-पुरुष सुक्त -10/90/24)

एकरा अलावे पाणिनि, वररुचि, व्यास आदि लोक वब्द के बेवहार सामान्य जन, जगह आदि खातिर बार-बार कइले बाडें।

महाभारत के लोकयात्रा आ गीता में लोकसंग्रह पर बहुते जोर देहल बा। -

' अज्ञान तिमिरान्धस्य, लोकस्य तू विचेष्टतः।
ज्ञानाञ्जन श्लाकाभिः, नेत्रोन्मीलन कारनम्॥
(महाभारत; आ। पर्व -1/84)

मतलब, ई ग्रंथ अंधकार रूपी अज्ञान से दुखी लोक (सामान्य जन) का आँखि के ज्ञानरूपि आंजन के श्लाका लगाके खोलेवाला बा।

लोक शब्द के परिभाषा देत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मत बा कि ' लोक ' शब्द के अर्थ जनपथ चाहे गाँव नइखे। बल्कि नगर आ गाँव में फइलल ऊ जन समुदाय बा जवना के बेवहारिक ज्ञान के आधार पोथी ना होखे। ई लोग नगर में परिष्कृत, रूचिसम्पन्न आ सुसंस्कृत समुझे जाए वाला लोग के तुलना में अधिका सहज, सरल, स्वाभाविक आ बनावटिपनी आडंबर से दूर प्राकृतिक जीवन जीए के आदी होलन आ परिष्कृत रूचि वाला लोग के समूचा विलासिता का सुकुमारता के जीए खातिर जवन जरूरी चीज होला, ओकनी के पैदा करेलें। (जनपद-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वर्ष-1, अंक-1, पन्ना-65)

डॉ। कुंजबिहारी दास के अनुसार जे लोग संस्कृत आ परिष्कृत लोग के प्रभाव से बाहर रहत अपना पुरातन परिस्थितियन में वर्तमान बाड़ें। उनके के लोक कहल जाला - ' The people that live is more or less primitive condition outsite the sphere of sophisticated influences।

(डॉ। कुंजबिहारी दास-ए स्टडी ऑफ ओरिसन फोकलोर)

संस्कृति, लोकसंस्कृति,कल्चर आ फोककल्चर

संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग आ कृ धातु के मेल से बनल बा। संस्कृति आ संस्कार शब्द व्याकरण के अनुसार सम् उपसर्ग के आगे कृति आ कार शब्द जोड़के क्रम से संस्कृति आ संस्कार शब्द बनल बा। आप्टे का संस्कृत अंग्रेजी कोश में संस्कृत, संस्कार आ संस्क्रिया शब्द बा। संस्कृति शब्द नइखे। संस्कृत मतलब संस्कार कइल आ दोष रहित करके शुद्ध कइल। एह तरह से संस्कार के अर्थ भइल कवनो चीज के दोष दूर करके परिष्कृत भा शुद्ध कइल। संशोधन कइल। संस्कृत साहित्य में संस्कृति का जगही संस्कार आ संस्क्रिया शब्द के चलन मिलेला।

अंगरेजी में संस्कृति खातिर कल्चर (Culture) शब्द बा। जवन लैटिन भाषा के कोलर (Colar) से बनल बा आ ई कोलर शब्द कुल्टुरा (Cultura) से बनल बा। जवन संक्षेप में पूजा करें आ खेती-बाड़ी सम्बन्धी काम करेके बोधक ह। कुछ विद्वान कल्चर आ कल्टीवेशन (Cultivation) मतलब कृषिकर्म में समानता के स्थापना करेले। एह समानता के आधार पर कृषि विद्या (Agriculture) के सिद्धांत पर जइसे गाछ-बिरीछ के विकसित करके नीमन खेती तइयार काल जाला, ठीक ओइसहीं आदमी में आदमियत के भावना के पनपावे, कलंगावे, फुलावे आ फरावे खातिर जवना तरीका के अपनावल जाला, ओकरे के संस्कृति कहल जा सकेला।

कुछ विद्वान लोग के अनुसार कवनो समाज आ देश के विभिन्न जीवन व्यापार भा सामाजिक सम्बन्धन में मानवता का नजरिया से प्रेरणा प्रदान करनेवाला आदर्श सबके ही संस्कृति कहल जाला।

संस्कृति के ढ़ंग से समुझे खातिर पहिले प्रकृति के समुझे के होई। पहिले प्रकति से संस्कृति। प्रकृति में प्र कारन ह आ कृति कार्य ह। कारन एगो होला आ अव्यक्त होला अउर कार्य अनेक आ व्यक्त होला। एसी एक के अनेक आ अव्यक्त के व्यक्त होइए गइल नू सिरजन (सृष्टि) ह। कृति मतलब कार्य उपयोग में आवेला आ संस्कृति के संबंध उपयोग से ना योग से होला। योग आ उपयोग के भेद समुझे खातिर सूरज आ धरती के उदाहरन से समुद्र जा सकेला। धरती से सीधे सीधे उपयोग में अंधेरा, सूरज ना, बाकिर धरती के उपयोग जुगुत बनावे में सूरजे के योग बा। जदि सूरज के योग ना होके त धरती अनुपयोगी हो जाई। प्रकृति धरती मतलब पृथ्वी के समान ह आ संस्कृति सूरज के समान। बिना संस्कृति के प्रकृति अनुपयोगी बा।

आज वैज्ञानिक खोज से भाँति-भाँति के हर हथियार तइयार बा। जवन अपना रक्षा खातिर भा अन्याय-अत्याचार से रक्षा खातिर बहुते उपयोगी होला। बाकिर हर हथियार के पीछे संस्कृति ना होके त ऊ हर हथियार आत्मरक्षा आ पीड़ित के सुरक्षा के जगे आक्रमण आ शोषण के साधन बन सकेला। संस्कृति के बोध आदमी के भीतर बुद्धि-विवेक आ जीवन जीए के सलीका पैदा करेला। जवना से आदमी सभ्य बनेला। एसी से संस्कृति आ सभ्यता के जोड़ी पुरान बा। सभ्यता के सम्बन्ध संस्कृति से बा। बुद्धि विवेक प्रकृति के नियंत्रण करेला। विवेक से संयमित सभ्यता देव सभ्यता हो जाला। दोहरा ओर आत्मा प्रकृति के नियंत्रण ना करें, बल्कि प्रकृति के अतिक्रमण करेला। प्रकृति के अतिक्रमने संस्कृति बन जाला।

संस्कृति खातिर अंगरेजी में कल्चर शब्द बा आ सभ्यता खातिर सिविलाइजेशन (Civilization)। एह संस्कृति आ सभ्यता में साँच पूछीं त साध्य आ साधन के फरक बा। संस्कृति साध्य ह आ सभ्यता ओह साध्य के पावे के साधन। सभ्यता मनुष्य के बाहरी सुख सुविधा आ साधन समृद्धि भर ह आ संस्कृति दर्शन, आदर्श, विश्वास, परम्परा आदि जीवन के साध्य ह। मानव विज्ञान शास्त्री डॉ। डी। एन। मजुमदार के अनुसार संस्कृति के अन्तर्गत मनुष्य के रीति-रिवाज, लोक आस्था-विश्वास, आदर्श, कला आ मनुष्य के उपराजल हर एक कौशल आ योग्यता के लिहल जा सकेला। (एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एन्थ्रोपोलाजी, पन्ना- 14, पहिल संस्करण, सन् 1960 ई।)।

सभ्यता आदमी के सामाजिक गुण आ बाहरी सम्पन्नता के द्योतक ह। एह संस्कृति आ सभ्यता के एहू तरह से समुझल जा सकेला। संस्कृति महसूसे के विषय ह। ई संस्कार आ बेवहार से जनावे के चीज ह। ई कवनो पुरुष, परिवार, पड़ोस, परिवेश के बोली-बानी आ मेल-जोल में झलकेला। एकरा शाब्दिक व्युत्पतिमूलक अर्थ, परिभाषा आ रूप-स्वरूप के चर्चा भर कइल जा सकेला। कवनो चीज के चर्चा भर से ओकरा के सम्यक् ढ़ंग से समुझल-बोधल ना जा सके। जइसे मीठा का मिठापन के बरनन कइल जा सकेला। मीठा का मिठास के स्वाभाविक बोध त मीठा चिखाइये के करावल जा सकेला। कवनो संस्कृति मरे-मिटे ना। कालक्रम से ओकरा में बदलाव, बढ़ाव भा बहाव आ जाला। उहो गवें गवें मतलब लाहे लाहे। कुछ समय बीतला पर ओकरा में कुछ फरक महसूस हो पावेला। बाकिर नांव ओकर उहे रहेला। जइसे समय समय पर जरूरत का मोताबिक केहू का साइकिल के घंटी, पावडिल, ब्रेक, टायर-ट्यूर , हैंडिल, सीट, गोली-बैरिग, फ्रौग, कैरियर आदि सब बदलात चल जाला। एक तरह से ओकर हर अंग-चीज बदला जाला, बाकिर ऊ कहाला उहे साइकिल। संस्कृतियो का संगे अइसने बात होला। संस्कृति देश, समाज, समय, जन समुदाय कवनो नाम से जुड़ल होखे, ओकर आत्मा उहाँ के लोक संस्कृतिये होले आ ओह लोक संस्कृति के आत्मा होला उहाँ का आम जन समुदाय के संस्कार आ विचार-बेवहार। ऊ आम जन भा जन समुदाय आडंबरी आकाशी चाल-ढ़ाल के बनतुलेट मतलबी मनई ना होके जमीन से जुड़ल जीव होलन। लोक संस्कृति 'आत्मौपम्येन सर्वत्र' का सिद्धांत के लेके जुगन से जीअत जिआवत आ जोगावत आ रहल बाड़न। अपने जइसन आन के बुझेलन। अपना सुख दुख के आपन सुख दुख बुझ के आपसी आत्मीयता का भाव के जीअल एह लोक संस्कृति के जान-परान आ पहचान ह जीए का एही तौर-तरीका से पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक आ आर्थिक जीलन अउर ओकरा भावधारा के बीच सम्यक् समन्वय भावना । आन के आपन बनावे के बोली, बात, विचार-बेवहार।

प्रकृति का गोदी मे पलाइल-पोसाइल आ प्रकृतिये से अपना जीवन यात्रा में आवे वाला बिघ्न बाधा के दूर करेके हूनर लिहल एह लोक संस्कृति के खूबी ह। ' माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' के माने-जानेवाला एह मनई लोग का बुद्धि-विवेक के आधार पोथी भा कवनो ग्रंथ ना होखे, जीवन यात्रा में भेंटाइल बोध-बात होला॥ ई संस्कृति आग उगिलत चिमनी, डंकरत मशीन आ बिजली-बत्ती में नहाइल नगर का शिष्ट-विशिष्ट संस्कृति से अलग चीज ह।

अपना इहाँ लोक संस्कृति आ शिष्ट संस्कृति में अधिका भेद-बिछेद ना होखे। जदि शिष्ट संस्कृति वाला लोग बिछेद करबो करेला त लोक संस्कृति के मनई ओह पर ध्यान ना देके नजरअंदाज कर देला लोग। इहाँ एह दूनों के एक दोसरा के पूरक रूप में देखल जाला। बहुत जगे वेद-शास्त्र विद्या जहुआले त लोक विद्या राह बतावेले।

एक बेर एगो सेठ किहाँ बिआह रहे त नाऊ भाई मूँज का रसरी में आम के पल्लो लगाके घर के ऊपर चारो ओर से चउकेठ देलन। विधि-विधान खातिर गाई का गोबर से जमीन लीप के बीचे चउका पूरलें। सतन्जा अनाज के ऊपर माटी का कलसा में पानी, कसइली, पइसा ,आम के पल्लो तेकरा ऊपर ढकनी में अक्षत आ ओकरा ऊपर चउमुख दीआ में तेल-बाती सरिआ के वैदिक पंडित जी के आसन पर विराजे ला निहोरा कइलें। वैदिक बाबा नाऊ भाई के डंटलें - ' एह टंटघंट के कवन जरूरत रहल ह। ई सब शास्त्र सम्मत् नइखे। हमरा एकर कवनो जरूरत नइखे।' वैदिक बाबा का शिष्ट संस्कृति आ वैदिक मंत्र-विधान भर में आस्था रहे आ एने नाऊ भाई लोक संस्कृति आ लोक विद्या विशारद रहलें। बोललें - ' बाबा बिना गाई, गोवंश आ ओकरा गोबर के खेती-बाड़ी आ अन्न-अनाज कहाँ से आई। ई वंदनबार घर का चारो ओर के हरिआली आ पौध-पर्यावरण के प्रतीक बा आ ऊ कलशा कइसन जवना में जल ना। ऊ जल कइसन जवना से आम के पवित्र पल्लो अस नवजीवन के उत्पत्ति ना भइल। ऊ जीवन कइसन जवना में खंडित ना होखे के पवित्र प्रतीक ई धान का चाउर वाला अक्षत

ना होखे आ ऊ अखंडित जीवन कइसन जवना में खुशी, मंगल आ ज्ञान के चारो दिशा में फइले वाला जस आ जोत ना होखे आ ऊ खुशी- मंगल आ जस कइसन जवना कि ध्वनि दुनिया में शंख आ घंटी बजावे से ना गूंजल।' नाऊ भाई का लोक विधान वाला विद्या के आगे वैदिक बाबा के बोलती बंद हो गइल। नाऊ भाई आगे कहलें- बाबा जी राउर मंत्र वैदिक आ शास्त्रीय बा त माई-बहिन लोग के गावल ई कुल्ह लोक संस्कार गीत आ रस्म-रिवाज लौकिक मंगलाचरण आ मंगलगान बा। ई भारतीय समाज एह दूनों से चलायमान बा। पहिल लोक विद्या फेर राउर शास्त्रीय मंतर।' बाबा मुस्कात आसन धइलें।

कहे के मतलब कि भारत में लोकविद्या मात्र फोकलोर ना ह। इहाँ शिष्ट संस्कृति वाला ऋग्वेद में भी जग-हवन के विधान लोक विद्या के मानल ग्रंथ अथर्ववेद से लिहल बा। अथर्ववेद में जंतर-मंतर, जादू-टोना, लोक आस्था-मान्यता, विश्वास-धारना, रीति-रिवाज के चर्चा बा। जदि उपनिषदन में आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म आदि पर चितन बा त गृहसूत्रन में लोकजीवन आ लोकविद्या से जुड़ल हर पक्ष पर विचार भइल बा। बाल्मीकि, व्यास, तुलसी सभे का काव्यन में लोकविद्या आ शास्त्रीय विद्या दूनों के सम्यक् समन्वय बा। हर भाषा का लोक साहित्य ; जइसे - लोकगीत, गाथा कथा, नृत्य, नाटक, लोकोक्ति, बुझउवल आदि में ओही लोक विद्या के अध्ययन-अनुसंधान कइल जाला। कुछ विद्वान लोग लोक विद्या के लोक वार्ता आ लोक संस्कृति भी कहेलन। बाकिर हमरा समझ से लोक वार्ता आ लोक संस्कृति आदि लोक विद्या के अन्तर्गत आ सकेला।

◆ ◆ ◆

घर के आसपास

दिनेश पाण्डेय
पटना, बिहार

(पिछिला अंक से आगे)

प्राचीन भारत में घर-निरमान कला के बहुते उठान भइल। पुराण, महाकाव्य आ आन साहित्यिक सामग्रिन में कल्पना के अधिकाई आ अतिशयकथन के छोड़ियो दिहल जाय त महज ऐतिहासिक कोटि के सामग्रिन प धयान देलहूँ से ई बात साफ बा कि इहाँ के वास्तुशिल्प में मजगूती आ सुंदरता के नायाब मेल भइल बा। दीरघकाल के अनुभव आ निरमान सामग्री के प्रचुरता के कारन इहाँ के कारीगर एह कला के बारीकी में महारत हासिल क लेले रहन। मध्यकालीन मुस्लिम प्रभाव से वास्तु रचना के सरूप आ साज-सज्जा में बदलाव भइल, खास क के मीनार, बगली डाट (वृतखंड), घटती क्रम के इमारत, जालीदार संरचना, अधगोल गुंबद के सिहद्वार आ चउखट के बनावट में। उन्नत-स्तर प आइल एह बदलाव के असर आम-स्तर प पड़े बिना ना रह सके, आपन सीमा के भीतर सामान्य घरन के सरूप में जुग के परिस्थिति के मुताबिक बदलाव आइल। एह बदलाव के गहिर असर से लोकभसन में अरबी, फारसी, तुर्की आदि के बहुतायत अभिधानन के समावेश होत गइल।

मौजा (अ।) स्थान, जगह, गाँव, आबादी (फा।) बसावट, बस्ती, मुफस्सलात (अ।) शहर के आसपास के छोट आबादी कस्बा (अ।) शहर से छोट गाँव के बोधक शब्द हवें। घरवाची शब्दन में किला (अ। किलाअ') बड़ आ मजगूत बनावट के इमारत ह जवन चहारदीवारी, खाई आदि से सुरक्षित गढ़ भा दुर्ग के वाचक ह। महल (अ।), ऐवान (फा।), कतर (अ।), दौलतकदा (अ। फा।) दौलतखाना (अ। फा।), दौलतसरा (अ। फा।), इमारत (अ।) बड़ घर, राजा-रईस के घर, प्रासाद के बोधक हवें। महल के सामासिक प्रयोग से बनल शब्दन के एगो अलगे दुनिया बा, अशर्फीमहल, इलदारमहल, कोशकमहल, खरबूजामहल, खासमहल, गुंगमहल, गुजरीमहल, चोरमहल, जलमहल, जहाजमहल, ताजमहल, दाईमहल, दानमहल, नौखंडामहल, बघेलिनमहल, बादलमहल, मदनमहल, मोतीमहल, रंगमहल, राजमहल, शीशमहल, सतखंडामहल, सुंदरमहल, हवामहल, हिडोलामहल, जतिने शब्द, ततिने इतिहास-भूगोल, किस्सा-कहानी, अउरि ना जाने का का? हिहवाँ जेकर बखान प्रसंग-भिन्न बात होखी। हवेली चारदीवारीवाला घर, बड़ आ मजगूत

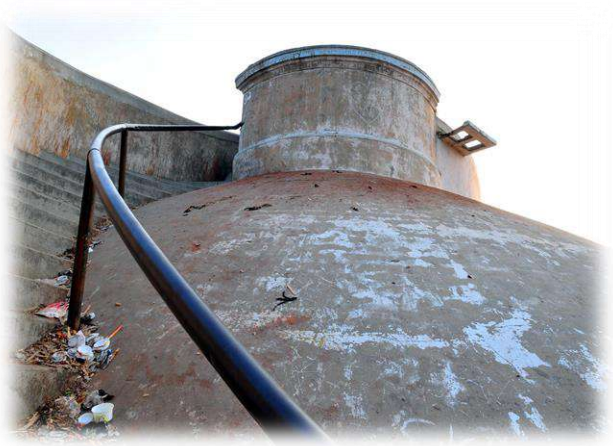

बनावट के इमारत ह जवन चहारदीवारी, खाई आदि से सुरक्षित गढ़ भा दुर्ग के वाचक ह। महल (अ।), ऐवान (फा।), कतर (अ।), दौलतकदा (अ। फा।) दौलतखाना (अ। फा।), दौलतसरा (अ। फा।), इमारत (अ।) बड़ घर, राजा-रईस के घर, प्रासाद के बोधक हवें। महल के सामासिक प्रयोग से बनल शब्दन के एगो अलगे दुनिया बा, अशर्फीमहल, इलदारमहल, कोशकमहल, खरबूजामहल, खासमहल, गुंगमहल, गुजरीमहल, चोरमहल, जलमहल, जहाजमहल, ताजमहल, दाईमहल, दानमहल, नौखंडामहल, बघेलिनमहल, बादलमहल, मदनमहल, मोतीमहल, रंगमहल, राजमहल, शीशमहल, सतखंडामहल, सुंदरमहल, हवामहल, हिडोलामहल, जतिने शब्द, ततिने इतिहास-भूगोल, किस्सा-कहानी, अउरि ना जाने का का? हिहवाँ जेकर बखान प्रसंग-भिन्न बात होखी। हवेली चारदीवारीवाला घर, बड़ आ पक्का घर भा महल आ आशियाना (फा।), दार (अ।), मकान (अ।), रहाइश (फा।), रिहाइश (फा।) सामान्य रूप से रहे के जगह भा गृहवाची शब्द हवें। आइनाखाना (फा।) शीशमहल, इमाद (अ।) खंभा, स्तंभ, सितून आ ऊँच मकान, जाएकियाम (फा।),

करारगाह (अ।) ठहरे के जगह, निवास के बोधक हवें। पर्दःसरा (फा।), जनानखाना (अ।), हरम (अ।), हरमखाना (अ।फा।), महल के हिस्सा के रूप में अंतःपुर भा रनिवास, बैतुलअक्स (अ।) दुल्हन के कमरा आ आरामगाह (फा।), मनाम (अ।), राहतकदा (अ।फा।), ख्वाबगाह (फा।), शविस्ताँ (फा।) रात में ठहरे के जगह भा शयनागार के बोधक शब्द हवें। गमखान (अ। फा।), ताजियतगाह (अ। फा।), बैतुलहजन (अ।) शोकगृह के कहल जाला। दालान (फा।) मेहराबदार दरवाजा के लंबा कमरा, तहखाना (फा।), निहाँखाना (फा।), तलघर (अ। भो।), अधोगृह जाएपनाह (फा।), पनाहगाह (फा।), बचाव के जगह शरणस्थली, खुदद (अ।) सुरंग के वाचक हवें। बावरचीखाना (फा।), मत्बख (अ।) रसोईघर, पाकशाला, महानस, तोशखान (फा।), नेमतखान (अ। फा।) भोजन के सामान रखे के कमरा आ लंगरखान (फा।) अन्नसत्र, जहाँ मुफत के खाना बाँटल जाय के अभिधान हवें। गजदान (फा।) खजाना गड़े के जगह, बारखान (फा।) गोदाम भा सामान रखे के जगह, बुनगाह (फा।) ऊ कोठा जहाँ सामान रखल जाय, कोठार, मख्जन (अ।) भांडागार, कोठार, गोदाम, खानि, खजाना भा शस्त्रागार के बोधक शब्द हवें। पाएगाह (फा।) अश्वशाला, तबेला, बड़ रईस के ड्योढ़ी, फीलखान (फा।) हाथीखाना केनाँव हवें। आबखान (फा।), जाएज़ुरूर (फा।), पखाना (फा। पाखानह), बैतुलखला (अ।) संडास, शौचालय आ गुस्लखाना (अ। फा।), हम्माम (अ।) स्नानघर, ताबखान (फा।) गरमघर भा गरम हम्माम के संज्ञा हवें। इहाता (अ।), चारदीवारी (फा।), चहारदीवारी (फा।), परकोट, फ़सील (अ।), दरबद (फा।) घर, कोठी, बाग या इमारत के घेरा के दीवार, प्राचीर हवें, खारचीं (फा।) खेत के कँटीला बाड़, जिदार (अ।) आम रूप से भीत के वाचक ह। चहारदीवारी के भीतर के बागीची खानबाग (फा।) आ गृहवाटिका पाईंबाग (फा।) ह।

रौजनेदर (अ।फा।), रौजनेदीवार (अ।फा।) भीत के छेद, दरवाजा आ कुव्व (अ।) ताक, ताखा, गवाक्ष, ताबदान (फा।) रोशनदान, झरोखा, दरीचा (फा।), जालार (फा।), बादगीर (फा।) हवादार खिड़की, झरोखा के बोधक शब्द हवें। पर्दएजबूरी (फा।) खिड़कियन वाला घर, बालाखान (फा।), अट्टालिका, छत के ऊपर के मकान, रिवाक (अ।) गैलरी, बरामदा, मंजिल (अ।) मकान के खंड, मिर्क़ात (अ।), जीना (फा।) सीढ़ी, रौशनदान (फा।) मकान में रोशनी आवे के सुराख, तालार (फा।) चार खंभा प बनल रखवाली के मंच, मचान, टाँड़, रफ (अ।) मचान, मंच, दरवाजा के बड़ी ताक के बोधक हवें। आस्तान (फा।), दर (फा।), दहलीज (फा।), चौखट, प्रवेशद्वार के नाँव हवें। जंजीर (फा।), जिर्फीन (अ।) दरवाजा के सींकड़, गल़क (अ।) अरगला भा बेंड़, गुलमेख (फा।) किवाड़ के फुलदार कील हवें। कुगुर (फा।) भवन के शीर्ष पर बनल छोट मंडपाकार गुमटी, कंगूरा, गुंबज, गुंबद (फा।) बड़ गोलाकार संरचना मेहराब (अ।) दुआर के ऊपर के अधमंडलाकार भाग, डाटवाला गोल दरवाजा, मीनार (अ।) दीपघर, ऊँच थंबनुमा स्थापत्य, बुर्ज (अ।) किला आदि के ऊपर बनल छोट मीनार, गरगज हवें। जुल्लः (अ।), सायबान (फा।) छज्जा, धूप से बचावेवाली संरचना, पाएकार (फा।) इमारती मशाला रखे के जगह, पाएदान (फा।) जूता उतारे के जगह हवें। आवाँ भट्ठी आ आतिशखाना (फा।) चिमनी के वाचक हवें। दिमन (अ।), मज्बल (अ।) गू-गोबर, कूड़ा-मइला डाले के जगह, नाबदान (फा।) मोरी के नाँव ह।

दरबारेआम (फा।), दीवानेआम (फा।) ऊ खुला भवन, आस्थान मंडप ह जहाँ आम जनता खातिर बादशाह या सरदार के कचहरी लागत होखे, दरबारेखास (फा।), दीवानेखास (फा।), ऊ राजसभा ह जहाँ केवल गिनल-चुनल राज्याधिकारी शरीक होखस, बारगाह (फा।) दरबार, राजसभा, राजमहल, शाहीमहल के कचहरी के कहल जाला। इशरतकदा (अ।), इशरतखाना (अ।), इशरतसरा (अ।) ऐशगाह, तस्वीरखाना (अ।फा।) चित्रसज्जित घर, परीखाना (फा।), सनमखाना (अ।फा।) परी भा सुंदर स्त्रियन के रहेवाला घर, आ तमाशगाह (फा।), मल्अब (अ।), तफरीहगाह (फा।), बाजीगाह (फा।), मंजर (अ।), क्रीड़ा-कौतुक, सैर के स्थान बदे प्रयुक्त शब्द हवें। असलहखाना (अ।), बैतुस्सिलाह (अ।), आलातखाना (अ।) शस्त्रागार आ तोपखाना (तु। फा।) तोप रखे के जगह ह। नक्क़ारखाना (अ।फा।) नगाड़ा बजावे, नौबतखाना (अ।फा।) शहनाई बजावे के जगह हवें। किताबिस्तान (अ। फा।), कुतुबखान (अ।फा।), मक्तबा (अ।), दारुल-कुतुब (अ।), किताबघर भा पुस्तकालय के नाँव हवें। बैतुल्लाह (अ।) खाम-ए काव, ईश्वर के घर, इबादतगाह (अ।), इबादतखाना (अ।) पूजाघर, ईदगाह (अ।फा।), जाएनमाज (फा।), नमाज के जगह आ इमामबाड़ा (अ।) ताजियादारी खातिर बनल घर, आतिशकदा (फा।), आतिशखाना (फा।), आतिशगाह (फा।) पारसियन के अग्नि-मंदिर, बुतकदा (फा।), बुतखाना (फा।), बैतुस्सहम (अ।), सनमकदा (अ।) हिंदू मंदिर, मूर्तिगृह, कनीसः (अ।), कनाइस (अ।), किनीस (फा।) गिरजा, ईसाई उपासनागृह कब्र (अ।), गोरखान (फा।), दरगाह (फा।), मकबरा (अ। मकबरह), मजार (अ।), रौजा (अ।) समाधि-थल, जियारत के जगह हवें। खानगाह (फा।) फकीरन के रहे के घर ह। काज (फा।) फूस के झोपड़ा, खैम (अ।) पटवास, राउटी, तंबू, कनात (अ।) कपड़ाघर के दीवार के मोट कपड़ा के हवें।

सरकारी इमारतन में दफ़्तर (फा।), आम रूप से कार्यालय के बोधक ह। दारुलअदालत (अ।), दीवानखाना (फा।),
निशस्तगाह, कचहरी, दागगाह (फा।), (कचहरी, जहाँ कागज प मुहर लगावल जाय।) न्यायालय आ दावरीगाह (फा।), न्यायालय भा पंचायत के जगह हवें। जर्बखान (अ।), दारुज्जर्ब (अ।) टकसाल, गुम्रकखान (फा।), चुंगीघर, फोतखान (फा।) कोषागार, लगान के रोप्या रखे के जगह कस्टम हाउस, क़फस (अ।), कुजेकफस (फा।अ।), कैदखाना (अ।), जिदाँ (फा।), बंदीखान (फा।), नौबतगाह (अ।फा।), कारागार, मश्वुरतखान (अ।), मश्विराघर (अ।), दारुश्शूरा (अ।), मंत्रणागृह, दारुज्जैफ़ (अ।), मेहमानखाना (फा।), अतिथिशाला, दारुतर्बियत (अ।) प्रशिक्षण-केन्द्र, दारुलमर्जा (अ।), दारुलश्शिफा (अ।), बीमारखान (फा।), बीमारिस्तान (फा।), मरीजघर (अ। भो।), शिफाखाना (अ।फा।), आरोग्यशाला भा रुग्णालय खातिर प्रयुक्त शब्द हवें। दारुलउलूम (अ।), बैतुलउलूम (अ।) विश्वविद्यालय, दारुलअमल (अ।) गवेषणालय भा प्रयोगशाला, रसदगाह (अ।) बेधशाला, मानशाला, यंत्रशाला, दारुलमुतालअ (अ।) वाचनालय, पुस्तकालय आ दारुलइकाल (अ।) छात्रावास के संज्ञा हवें। नुमाइशगाह (फा।) प्रदर्शनी, दारुलस्सनम (अ।), बुतखाना (फा।), मूर्तिघर के नाँव हवें। दारुलऐतान (अ।), यतीमखाना (फा।), अनाथालय, काजीहौस (अ।) लावारिस जानवर रखे के जगह आ ताजीखान (फा।) कुत्ताघर हवें। मुसाफिरखाना (अ।), फरोदगाह (फा।), फिरोदगाह (फा।), सरा (फा,) सराय (फा।) पथिकघर, धर्मशाला, यात्रीनिवास के कहल जाला। परवरिशगाह (फा।) पालनाघर, बच्चाघर भा लरिकन के पाले-पोसे वाला घर ह।

दुकान (फा।) सउदा बेंचे के जगह, पण्यशाला, कन्नादखान (अ। फा।) शक्कर के कारखाना भा हलुआई के दुकान, दवाखाना (अ।फा।) औषधालय बिसातखाना (अ।फा।) बिसाती सामान के दुकान, कत्लगाह (अ। फा।), कसाईखाना (अ।), कसाईबाड़ा (अ।), बूचड़खाना, बधस्थल भा माँस बेचे के जगह, दौरेखराबात (अ।), बूजखान (फा।), मयकदा (फा।), मस्तब (अ।), मिस्तब (अ।), शराबखाना (अ।फा।), शीरखाना (फा।), मदिरालय, किमारखाना (अ।फा।) जूआघर, चकल (तु। चक्ल), चकला (तु।), बैतुलुतफ (अ।), रंडीखाना, बेसवाघर, बाजारेहुस्न (फा।अ।) रंडियन के बिटोर के जगह, ताराजगाह (फा।) लूट के जगह याकि चोर-डँकइत के रहे के घर, दारुलकोहला (अ।) आलसिन के घर हवें। आसारे क़दीम (अ।) पुरान यादगार इमारतन के खँड़हर, बैतुलअतीक (अ।) पुरान घर, आसेबी (फा।) भूतहा मकान ह।
आसास (अ।), बुनियाद (फा। बुन्याद), नींव, मकान के अधारी, बुनियादेमर्सूस (फा।) रांगा के जोड़ाईवाली मजगूत नींव, गच (फा।), फर्श (अ।) जमीनी सतह पक्का फर्श, पक्की छत, आसार (अ।), खँड़हर भा दीवार के चौड़ाई, फुस्हत (अ।) मकान के लंबाई-चौड़ाई, रुक्न (अ।) स्तंभ, खंभा, थून, लिब्ना (अ।) कच्ची ईंट, कहगिल (फा।) गारा, खाज (अ।) दीवार प लेप के माटी के कहल जाला।
दीरघकाल के मुसलमानी हुकूमत के असर से एजा के लोकभसन में अरबी-फारसी, तुर्की के अतिना शब्दन के मेलन भ गइल जेकरा के तज के मौजूदा भासा-बेहवार ना हो सके। ओइसे, ई कवनो जीवंत भासा के गुन मानल जाला कि ओकरा में आन भासा के शब्दन के आत्मसात करे के सामरथ कतिना अधिक बा।
घर एक बुनियादी जरूरत ह, अदमी के के कहो, हरेक जीया-जंतु के जिनिगी में घर के बहुत अहमीयत बा। एह बात के पुरवासाख ओह लोग से कइल जा सकेला जे बेघर होखे। बकौल सलीम अहमद-

"दर-ब-दर ठोकरें खाई तो ये मालूम हुआ
घर किसे कहते हैं, क्या चीज है बेघर होना।"

(बाँचल अगिला अंक में।)

संदर्भः-

१- ऋग्वेद
२- अथर्ववेद
३- वैदिक इंडेक्स- ए।ए। मैकडौनल, ए। बी कीथ
४- अभिधान चितामणि- हेमचन्द्र
५- छान्दोग्योपनिषद्
६- निरुक्त- यास्क
७- धातुपाठ- जे। एल। शास्त्री
८- वाचस्पत्यम्
९- प्राकृत व्याकरण- त्रिविक्रम
१०- पाइय-सद्द-महण्णवो- हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ
११- चाणक्यनीति दर्पण
१२- संस्कृत-हिंदी कोश- वामन शिवराम आप्टे

◆ ◆ ◆

लछमिनिया

रमेश चंद्र

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा फणीश्वरनाथ रेणु सम्मान से सम्मानित। सम्प्रति- बिहार सरकार के शिक्षा विभाग, जन शिक्षा निदेशालय में बतौर सहायक निदेशक कार्यरत।

लछमिनिया एतना सुन्नर रहे कि बुटन का ओकरा के लुकवा के राखे परत रहे। नज़र से बचे खातिर तमाम टोटका पहिलहीं टांग दिहल रहे। सड़क से सटल घर होखे का चलते ख़तरा बराबर बनल रहत रहे। राह चलत आँख सब एक जइसन त होला ना! एकबेर देख लिहनीं, चलीं कवनो बात नइखे, फिनु डीठि गड़ा के तकला के का जरूरत? ओन्न समय के साथे लछमिनिया निखरत जात रहे। चले त सीना पर साँप लोट जासु। तब बम बाबा खूब तपल रहलें। उनका जइसन उपरवार देखेवाला चार कोस में केहू ना रहे। सवा रुपिया में नज़र-गुजर उतार देसु। हँ, काम हो गइला का बाद पियरी पहुँचावल जरूरी रहे। जब गंगवा कलकत्ता से बंगालिन बिआहि के ले आइल तब गाँव में ख़तरा अउर बढ़ि गइल। बात मटिया तेल नियन पसरि गइल- 'सुन्नर-सुग्घर लइकन के सुग्गा बना के पिजरा में पोस लेली सन'। तबसे बम बाबा के सरसों- बालू महंगा हो गइल रहे। अब पियरी का साथ कुरुतो लागे लागल। लवंग-लोहबान, अरवा चाऊर आ अँड़हुल के फूल के साथ सवा गज एकरंगा एक दिन पहिले पहुँचा दिहल जरूरी रहे। आधा राति के भाव पर बइठत रहलें। अतवार, मंगर के भीड़ एतना बढ़ि जात रहे कि तिजहरिया बादे दतुवन करसु। चँवर में चार कठ्ठा हर साल बनाइए लेसू। रमुनी तीन हप्ता से दउर लगावत रहे। अब जाके बम बाबा के किरिपा बरसल।

समय सरकत जात रहे। दुइए महीना बाद लछमिनिया माई बनेवाली रहे। चउबीसों घण्टा चउकसी बरतल जात रहे। तब बुटन ईंट-भठ्ठा पर पथाई करत रहलें। मालिक के एकदम विश्वासी अदिमी रहलें। अबकी सीजन काम पर जाए लगलें त रमुनी बोललीं, ' एकदम से आन्हरे हउवS का, देखत नइखS, एक-एक दिन काटल केतना भारी परता! पाँच साल सेवा कइलS त न अगुतइलS आ पाँचे दिन में तर-ऊपर होखे लगलS ? अइसे केहू घरे आइल लछिमी के अनादर करेला? कुछ उनइस-बीस हो गइल त कवन मुँह दिखइबS ? भाई-भवद्दी त अइसहीं हाथ धोके पीछे परल बा।' ऊ त खुदे जाइल ना चाहत रहलें। बोललें, 'अब तू कहतारू त नाहिए जाएबि। अंदर गइलें अउर लछमिनिया के निहारे लगलें। रमुनी फिनु टोकलसि, 'अइसे डीठि गड़ा के काहे ताके लगलS, कबो-कबो अपनो नज़र लागि जाला!

बुटन बइठि गइलें। पाँच साल पहिले जब लछमिनिया के ले आइल रहनीं त ऊ बस चार महीना के बछिया रहे। खोरहा बेमारी दुधमुँही लछमिनिया से माई छीन लिहलसि। सोहन साहू के माई बुटन के बोला के कहली- 'बेटा ले जा, तूही ढंग से पालि-पोसि सकत बाडS। बेचारी हमरा इहाँ छटपटा के मरि जाई'। बुटन कहलें, 'कुछ बोल- बतिया के दे देतीं त ठीक रहित। मतलब, बटाई भा कुछ दाम क के॥' मलकिन बात काट के कहली- 'ले जा, अस मन जानS, अब ई तहार सम्पति भइल। सेवा में कोताही मत करिहS।' मलकिन मायालू महिला रहली। हर साल कवनो ना कवनो तीरथ घूम आवत रहली। बात पर संशय के गुंजाइश ना रहे। पगहा पकड़ले बुटन जब घर अइलें त बछिया देखि रमुनी के बाँछ खिल उठल। हँसुली उतार गोड़ पर रखलसि, भर लोटा पानी गिरा के फिनु चाउर खिअवलसि। ओही दिन से ऊ मय घर के लछमिनिया बनि गइलि। सम्पत, गुरदेली आ तेतरी सबेरे से साँझ ले लागल रहसु। सेवा में कवनो कोताही न भइल। लछमिनियो लइकन से खूब घुलि-मिलि गइलि। तेतरी का साथे त ओ के खूब जमे। गुरदेलिया कहे, पहिला फेंसा हम खाइबि। काहें कि घास हमहीं ले आइले। बड़का सम्पत एतराज़ जतावे। सानी-पानी से ले के सगरे काम ओकरे जिम्मे रहे। ए से फेंसा पर पहिला अधिकार ओही के बनता। ख़ुद के गिनती में ना देखि तेतरी लोटा-लोटा के दुब्बर हो जाउ। आख़िर खुदी-कोरायी त उहो डालति रहे। बाद में मइया सुलह-सपाटा करावसु- फेंसा पहिले मय गाँव बाँटल जाई। फिनु, ब्रह्मबाबा आ पीरबाबा के चढ़ी। बम बाबा के ना दे के केहू रार मोल ना लेई। तब जाके घरवहिया नेवान करिहें। बुटन काट देसु- रे, छोट बच्चा त चिरई-चुरुंग-जइसन होला। ऊ तनि खाइए लिहें सन त कवन देवता-पीतर रूठ जइहें? रमुनी डाँट देत रहे, तू चुप रहS, नेम-धरम कवनो चीज़ होला कि ना?

बात रमुनिए के मानल जा। एन्ने लरिकन में अलगे खिचड़ी पाकत रहे- " फेंसा बनाके माई जइसे बाहर जाई, हमनीं चुपेचाप थोरे निकाल लिहल जाई। पता ना, बँटला का बाद बचे कि ना बचे? बाप रे, तीन दिन ले के बाट जोहेला! बाकि, बिलार के गर में घण्टी बान्ही के? तय भइल कि तेतरी कड़ाही से फेंसा निकाली। ए बीच माई अगर आ गइल त दरवाजा पर खड़ा गुरदेली गीत गइहें। तेतरी सतर्क हो जाई। माई का भनक ले ना लागी आ माल हाथे लागि जाई।

ओहि दिन सम्पतवा माधो माट साहेब के साइकिल के चेन का चढ़वलसि, उनके पकिया चेला बन गइल। ए से अकिल आवे लागल रहे। बड़ी सफाई से ऊ ख़ुद के अलगे क लिहलसि। ओहि दिन भोरे-भोरे रमुनी के आँखि फरकल, लागल जरूर कुछ शुभ होई। दउरि के दुआरे गइलि त देखलसि, लछमिनिया सुन्नर बछिया के जनम दिहले बिया। दउरि के बुटन के जगवलसि- 'ऐ, उठS, भगवान जी लर-जर जोरिए दिहनीं। बछिया बेल्कुल लछमिनिया पर गइल बिया। बिना देरी कइले नामो रखा गइल- ई हमार लखरनिया ह।

बुटन के दुआरे आज अचानक चहल-पहल बढ़ गइल। लछमिनिया के थन से दूध के अइसन धार बहल कि कई घूँचा-घड़ा लबालब भर गइल। लागल, गंगा मइया बाबा भोले के जटा से उतर आइल बाड़ी। जेही देखल, दाँतन अँगुरी दबा लिहल। रमुनी के गोड़ आजु जमीन पर ना रहे। जेही आवे, दउरि के स्वागत करे, खाट पर बइठावे। सम्पत भागत-भागत जा के माधो माट साहब के दावत दे आइल। गुरदेली अपना सर-संघतिया लोग के बोलि आइल। तेतरी तमाम सखियन के नेवत आइलि। बम बाबा बिना बोलवले दरसन देबे आ गइनीं। केसर काका के काने बात पहुँचल त भागत अइलें आ लछमिनिया खातिर ढेर- ढेर सावधानी बता गइलें- 'का खाई, का ना खाई, पानी अब्बे ना दिहल जाई।' फिनु बुलाकी पहुचलें। ई नामी गिरहकट रहलें। आँख बन्द डिब्बा गायब करे में माहिर! बुटन के कान में फुसफुसइलें- 'भाई, गाय बेंचे के होखे त हमके बोला लिहS। साढ़े सात स के ऊपर रोकड़ा दिउवा देबि। अइसन गाय सात कोस में दीया बार के ढूंढ़लो पर ना मिली। रमुनी का उनुके बात ना सुहाइल- 'ऐ, राम-राम के बेरा ई बेंचा-किनी के बात काहे करे लगनीं ? झमक के उठलि आ फेंसा बनावे जा बइठलि। कड़ाही छोट देख तेतरी के भेजि फगुनी काकी के बड़ कड़ाही मंगवा लिहलसि। ना चाहतो तेतरी का जाहीं परल। गुरदेलिया रिसिआइल आ इशारा कइलसि, अब हटिहे जनि। बन्दा दरवाजा पर अगोरिया बइठि गइल। सम्पत आवत-जात रहे। लेकिन ॥हाय रे नसीबा, माई टस से मस ना भइलि ! घण्टा भर बाद उठलि त फेंसा तइयार हो गइल रहे। मँहक नथुना में पहुँचल त बच्चा सब बेहाल होखे लगलें। गुम-सुम बइठल गुरदेलिया का गीत गावे के नौबते ना आइल। परात में फेंसा लिहले माई बाहर निकल गइल। लरिका टुकुर-टुकुर ताकते रहि गइलें। बुटनो पत्नी के बदलल चाल देखलें। ओह, बाँटेवाला के हाथ कब्बो- कब्बो केतना बड़हन हो जाला?

मय गाँव फेंसा बाँटके रमुनी वापस आवति रहे। कुछु बचि गइल रहे। सोचलसि, लौटि के लरिकन के दे देबि- 'तेतरी कइसे ताकति रहलि ह ! आजु गुरदेलियो पर तरस आइल। बागड़ ह बाकि गाहे-बगाहे माई के पैरो दबा देला। सम्पतवा समझदार हो चलल बा। ऊ मान जाई।' जग जीत के लौटत रमुनी गुनगुनाए लागलि-' पिया मोरा गइले ए रामा पुरुब हो बनिजिया ॥!'

रमुनी गुनगुनाए लागलि-' पिया मोरा गइले ए रामा पुरुब हो बनिजिया॥!' तब्बे तिरमुहानी पर गंगवा के मेहरारू लउकि गइलि। रमुनी का धक् से लागल। हे भगवान! अब का होई, कहीं ई बंगलिनियाँ नज़र लगा दिहलसि त।! बड़ी भाग से अहिल्या-उद्धार भइल बा! डेग रुकि गइल। साँस साँय-साँय चले लागल। नजदीक आ के गंगवा की बीबी बोललि- का दीदी, हमके परसाद ना खिअइबू? ऊ॥कहत रहले हँ कि तहार गइया बड़ा सुन्नर बछिया बिआइल बिया। फिनु ऊ हाथ पसार दिहलसि। रमुनी का लागल, उहो उनहीं की तरे गाँव के सुन्नर बहुए हई। कतना प्यार से दीदी बोलली ह ! मयगर बन मय फेंसा दे दिहली। बेचारी निहाल हो गइलि आ ढेर देर ले दुआ देत रहि गइलि।

फेंसा के चक्कर में आज भोजन बड़ी देर से बनल। रोवत-रोवत तेतरी सूति गइलि। गुस्सा में गुरदेलिया कवनो काम ना क के परधान के पोखर में मछरी मारे चलि गइल। सम्पत बाप के साथ लछमिनिया के लगे बइठल रहे। कलेवा के बेरा भोजन मिलल। साँझि के दूध ब्रह्म बाबा के खीर-भोजन के खातिर चलि गइल। दुसरा दिन के दूध पीर बाबा के इहाँ मुरकी-मलीदा में मिलावे ख़ातिर चलि गइल। तीसरा दिन के दूध बम बाबा के हवाले हो गइल।

चउथा दिन तिजहरिया रमुनी लरिकन के बढ़िया से नहवा-धोवा के तइयार कइलसि। तेतरी के बढ़िया चोटी बनवलसि। ओ पर ललक्आि रिब्बन के फूल लगवलसि। गुरदेलिया नहाए का नाम पर भड़कि जात रहे। बाकि फेंसा के नाम पर तइयार हो गइल। बुटन लखरनिया खातिर घुघुर-घाँटी किने बंगरा बाज़ार चलि गइलें। एही बीच सोहन साहू आ पधरलें। साथ में बुलाकियो रहलें। रमुनी दउरि के खटिया ले आइलि, चादर बिछवलसि आ हाथ जोरि खड़ा हो गइलि। सहमल तीनू लरिका माई के साथे हो गइलें। सोहन साहू भरि नज़र लछमिनिया का ओर तकलें फिनु बोललें- 'का रे बुटना बो, तीन दिन पहिले गाय बच्चा दिहले बिया आ हमके आजु ले ख़बर ना दिहल गइल? कहाँ बा बुटना? बुलाकी सुर मिलवलें- मालिक, अब्बे त इहाँ सदाबरत चलि रहल बा ! मय गाँव फेंसा खा के निहाल हो गइल। अब, मलिकारे का न मिलल, ई बढ़िया बात ना भइल। हर चलावे से खर खाए आ बकरी अँचार खाय ! रमुनी के सगरी देहे सुरसुरी समा गइल। लागल, कवनो भारी चूक हो गइल बा। हाथ जोरि के बोललि- नाहीं मालिक, हम अइसन गलती काहे करबि? अपने बच्चन के मुड़ी पर हाथ ध के किरिया खात बानीं, दूध के एक्को बूँन कंठ में नइखे गइल। जहाँ मन्नत मंगले रहनीं, उहें चढ़ा आइल बानीं। फिनु रमुनी रोवे लागलि- गलती-सही माफ़ करीं मालिक। आजे दूध पहुंचा देत बानीं। सोहन साहू ठहाका लगवलें- वाह, गाय हमार आ हमरे के दूध पहुँचइबे? दूध छोड़ु, ई बताउ, गइया कब पहुँचइबे ? साहू जी के आइल मामूली बात ना रहे। गाँव में शायदे कवनो घर होई जवन उनका एहसान तरे दबाइल ना होई। जियारी-मुआरी सब में सहाय रहेलें। सूद-बियाज़ के उनके आपन रेट रहे। साहूजी के ठहाका जब लागे त लोगन के कँपकँपी छूट जा। आजुए इहे भइल। भारी भीड़ लागि गइल। जेही आवे, सलाम करे आ किनारे खड़ा हो जा।

जब टोला भर के लोग जमा हो गइल त गाय के दाम खुलल। बुलाकी बोललें- साढ़े सात के नीचे तो कीमत नाहिए चाहीं। अब रमुनी से पूछ लिहल जा, अगर ऊ गाय रखिहें त पौने चार स आपके लवटा देसु। रमुनी का लागल, धरती डोलि रहलि बा। चक्कर आ गइल। बड़ी मुश्किल से ख़ुद के सम्हरलसि- 'मालिक, का ई गाय रउरा बटाई में दिहले रहनीं हँ ? हमरा घरवहिया त कहत रहलें कि मालकिन अइसहीं दे दिहले बानीं। ठहाका फिनु गूँजल साहू के- 'रे, त का हम ख़ैरात बँटले रहनीं हँ? फिनु साहू भीड़ से अपने बात के समर्थन मंगलें। सबका बुटन से हमदर्दी रहे लेकिन सोहन साहू के नाराज़गी मोल लेबे के हिम्मत केहू में ना रहे। सभे मौन हो गइल। नीरव सन्नाटा छा गइल। तब्बे पीछे से कवनो औरत के आवाज़ आइल- 'मालिक, सुनले बानीं कि बड़ लोगन के दिलो बड़हन होला। लेनी-देनी मरद-मानुष के चीज़ होला। अब्बे बुटनो भाई नइखन। फिनु, मामला मालकिन आ उनुके बीच भइल रहे। ए से अब्बे कुछ कइल सरासर नाज़ायज़ होई।' साहू के तेवर चढ़ गइल- 'ई कवनि ह रे, राजा हरीशचंदर के औलाद ? औरत घूंघट उठा लिहलसि। लोग देखल त सहजे विश्वासे ना भइल। हिम्मत क के बोलेवाली बंगालिन रहली। साहू तैश में बोललें- 'का नाम ह तोर, कौन हउवे तें? हम द्रौपदी सरकार, गंगवा के मेहरारू हईं। साहू फिनु ठहाका लगवलें- 'ना गाँव में घर ना सरेह में डेरा! तोर एतना हिम्मत कि मर्दन की सभा में सिर उठा के बात करे लगले? 'अब का करीं मालिक, जब सगरे मर्द सभा में सर झुका के बइठि जासु त कवनो द्रौपदिए क सिर उठावे परेला!' साहू आपा खो के चीखलें- द्रौपदी के सिर उठाकर बोले के अंजाम त जानत होखबे? जी, हम त ओकरा बादो के अंजाम जानत बानीं- 'रहल न कुल केहू रोवनहारा॥' बड़ी बेबाकी से बंगालिन बोलि गइल। साहू तिलमिला गइलें। आज के पहले केहू अइसन करारा जवाब ना दिहले रहे। बात

बिगड़त देखि केसर काका सामने अइलें आ हाथ जोरि के बोललें- मालिक अपने त दस गाँव के पंचयती करीले। हमनीं गरीब-गुरबन के मुँह के कवन मोल ! ई ग़रीब पौने चार स रुपिया कहाँ से ले आई ? बुलाकिया बिहँसल। उहे भइल जवन ऊ चाहत रहे। तय भइल कि पौने चार स रुपिया ले के रमुनी गाय के पगहा पकड़ा दे। बिना देर कइले साहू रुपिया फेंकि दिहले आ बुलकिया गाय खोलि लिहलसि। लरिका रोवे लगलें। गुरदेलिया गाय पकड़ि के झूलि गइल। तेतरी लखरनिया के पकड़ि लिहलसि। बड़ी मुश्किल से लरिकन से गाय के छुड़ावल जा सकल। सम्पत टकटकी लगा ताकते रहि गइल। लछमिनिया जब जाए लागलि त कातर भाव से तकलसि। मानो, कहति होखे- गाय होखे भा बेटी, बन्हाली त दूसरे का खूँटा नु ! फिनु ऊ बढ़ि गइलि॥! बुटन जब घुघुर-घाँटी लिहले लवटलें त एक पहर रात ढल चुकल रहे। लरिका भूखे सूति गइल रहलें। रमुनी जागल रहे। खूँटा ख़ाली देखि बुटन सन्न रहि गइलें। अनहोनी के आशंका घर करे लागल। देखलें, रमुनी घूरा तरे बइठलि रहे। पति के देखि बिलख पड़लि। फिनु सब कुछ बतावत चलि गइलि। पाँच साल के मेहनत पर पानी परि गइल। सुन्नर दिन, सर्द स्याह रात में समा गइल। पल भर के सपना के टूटन टीस दे जाला। इहाँ त पाँच साल के सपना लम्हा में धरासायी हो गइल रहे। बुटन क लागल, शायद अब ना उबर पाइबि ! रमुनी साहू से मिलल रुपिया बुटन के देबे चहलसि लेकिन ऊ छुअबो ना कइलें। रात गहिराए लागल। दूर कहीं से कुत्ता के रोवला के आवाज़ आइल। फिनु, सियार बोले लगलेसँ। बुटन कुछ न बोलि सकलें। तेतरी पर नज़र पड़ल। ऊ फेंसा के खुरचुनी हाथ में छुपवले सूति गइलि रहे। गुरदेलियो के होठन पर खुरचुनी लागल रहे। शायद उहो खइले होई। सम्पत पुआल पर औंधे मुंह पड़ल रहे। पति-पत्नी उहवें बइठल रहि गइलें। बुटन आकाश में देखलें, तिनजोड़िया डूब गइल रहे। अब सतहवा के पहरा परे वाला रहे। जब नींनि खुलल त सुरुज पहर भर ऊपर चढ़ि चुकल रहलें। रमुनी बच्चन सहित बाहर गइलि रहे। अचानक दुआरे मोटरगाड़ी आ के रुकल। फिनु, सफ़ेद साड़ी में एगो बृद्ध महिला उतरली। बुटन गौर कइलें, चेहरा पहिचानल जइसन रहे। ई सोहन साहू के माई रहली। बुटन हाथ जोड़ि के खड़ा हो गइलें। मालकिन बोललीं- 'रात काशी जी से लवटनीं हँ। गइल रहनीं हँ पुन्नि कमाए। लेकिन घरे अइला पर मालूम भइल ह कि तमाम पुन्नि पाप में बदल चुकल बा। बुटन, हम तहसे माफ़ी मांगे आइल बानीं। अपना बेटा के करनी पर लज्जित बानीं। हमके माफ़ क दS। फिनु ऊ हाथ जोड़ि लिहली। बुटन मालकिन के आँखिन में झँकलें, ऊ आँसू से सराबोर रहली सन। ए बीच मय गाँव उमड़ि पड़ल। ग़रीब बुटना के दुआर पर आजु फिनु मेला लागि गइल। मालकिन बोललीं- 'तू जब ले माफ़ ना कर देबS, हम जाएबि ना।आ सुनS, आजु ए तीरथ के पुन्नि हम लेइए के जाएबि। मालकिन उहें जमीन पर बइठि गइली। भीड़ से केसर काका दउरि के बाहर अइलें आ बिनती क के उनके खटिया पर बइठवलें। बात बुटन के समझ से परे रहे। मालकिन के नाम सुन बम बाबा भागल अइलें। बंगालिनियो अइली। बुलाकियो अइलें, लेकिन ऊ ख़ाली हाथ ना अइलें। उनुका हाथ में लछमिनिया के पगहा रहे। पीछे से लखरनिया कूदत आवति रहे। महतारी-बेटी आपन घर देखली त दउरि परली। आ के बुटन से लिपटि गइली सन। मालकिन मुस्कुरइली- बेटा, आपन अमानत सम्हारS। लछमिनिया काल्हियो तहार रहे, आजुओ तहरे बियि आ आगहूँ तहरे रही। ये पर सिर्फ़ तोहार हक़ बा। बुलाकी के पीछे सोहन साहुओ सिर झुकवले खड़ा हो गइलें। ठहाका लगावेवाली आँखि आजु ख़ामोश धरती ताकत रहे। फिनु ऊ बुलाकी के तरफ़ मुड़ली। उनके ओठ सूजल रहे। मालकिन कहे लगली- 'काल्ह साँझि जब ई खरखाही में गाय दुहे बइठल त लछमिनिया अइसन दुल्लती मरलसि कि चेहरा बिगड़ि गइल बा। आजु सुबहो एक्को कनवा दूध नइखे दिहले। काल्ह जवन भइल ओ खातिर सब पंचन से माफ़ी॥ मालकिन जात-जात बम बाबा के अइसे देखली कि उनुके सिटी-पिटी गुम हो गइल। नज़र नीचि क लिहलें ऊ। अलबत्ता ऊ बंगालिन के बुला के गले लगवली आ बोललीं- 'बहू, कब्बो फुर्सत मिले त मिले आवS ना, अब्बे कुछ दिन इहवें रहबि। फिनु ऊ मोटर पर चढ़ि गइली।

रमुनी के लौटते लछमिनिया बेचैन हो उठलि। दूनो अइसे मिलली जइसे सालन बाद ससुरा से लवटल माई-बेटी मिलल होखें। लरिका निहाल हो गइलें। बुटन हाथ का फेरलें लछमिनिया बरसे लागलि। दू बेरा के दूध एक्के साथ दे दिहलसि। रमुनी बोललि- एतना दूध के का करीं ? बंगालिन बहू बोललीं- दीदी, अइसन करS, आधा दूध घर ख़ातिर राखि लS आ आधा॥! फिनु ऊ चुप हो गइली। रमुनी टोकलसि- 'आधा के का करीं? हमार मानS त आधा दूध ओ देबी के चरन पर चढ़ा आवS जे तहार खुशी वापस कइल ह॥!

दूध ले के रमुनी जाए लागलि। बंगालिनो बहू साथे हो गइली। अब ना तेतरी के जल्दीबाजी रहे आ ना गुरदेलिया का गीत गावे के जरूरत रहे॥! ◆ ◆ ◆

बबुआ हो,हीक भर देख लऽ

- उदय नारायन सिह

दोसर केहु पर बीतल रहित त एगो बातो रहे, ई त आपन हारल आ मेहरी के मारल जस खिस्सा बा, हॅसेब मत सभे, सुनिए लीं हमार बिपत के कहानी। हमार टटके-टटके बिआह भइल रहे। सभे के बिआह भइला के बाद जवन होला, उहे हाल हमार आ हमरा मलकिनिओ के रहे।जेने डेग धरीं स, ओनिए गोबर में लात पड़े। कहल जा सकेला, दूनों बेकत चानी काटत रहीं सऽ। एही बीच में हमरा ससुरारी से बोलाहटा आइल- "ए पाहुन, तनीं बबिआ के बड़का बाबू के तबियत कसरिआह बा, ना होखे त एक-दू दिन ला ले ले अइतीं। ऊ देखे के कहतारें बबिआ के। हम रोसिआ के खबर भेजे के चाहत रहीं कि ई डागदरिन हई का बाकिर माई हमार बरज देहली। माने एतने बूझल जाव, अभी सवइओ ना पूरल रहे कि हमरा मलकिनीं के ले के ससुरार जाये के पड़ल।

बेरामी थोरे रहे, जवन होला, उहे रहे। 'बबी अइली-बबी अइली' के हाला भइल आ बुढ़ऊ टनमना के दुइए दिन में अँरचे लगलें। हमहुँ गच्च कि अब घरे लवटेब सऽ बाकिर हमरा चहला ना चहला से का अंतर पड़े के रहे, दू दिन के बदले हफता ले घींचा गइल। हमरा ना चाहते हुए भी रूके के पड़ल।

बात अब ओह घटना के, जवन हम रऊआ सभे के सोझा राखे वाला बानीं। अरगंडी के लूगा में हमार मलकिनीं परी जस लागत रही। ई ऊ लूगा रहे, जवन सास जी कलकत्ता से मंगववले रही आ खूबे मान-दान से विदा कइली। टायर गाड़ी से हमनीं के अमनौर बाजार पर छोड़ल गइल आ उहवाँ पहिले से लागल एगो "पीजो" जीप पर मलकिनीं के बइठा के सभे लवट गइल।चूँकि हमनीं के आवे के तुरते पहिले एगो जीप छपरा खातिर खुल गइल रहे, एह से नंबर में जवन जीप खड़ा रहे, ओकर हमनीं के पहिल पसिजर रहीं स। हम नीचहीं ठाढ़ रहीं आ मलकिनीं गाड़ी पर रही। जोहाए लागल पसिजर कि लोग आवो, जिपवा भरो त खुलो!हम ठाढ़े भइल एने ओने नजर दऊरइनीं त सड़क के ओह पार एगो हजाम भाई के दोकान में देखनीं कि एक आदमी हमरा मलकिनीं ओरि ताकता। हमरा से ओकर नजर मिलल त दोसरा ओरि ताके लागल। बात आइल आ गइल, हमहुँ धेआन ना देहनीं। एक मिनट के बाद फेरु आँख ओनिए गइल त ओकरा के ओहि तरे फेरु देखत पवनीं। ऊ फेरु हमरा के आपन ओरि देखत एने-ओने ताके लागल। ई सिलसिला कुछ देर तक चलल। हम मलकिनीं से पूछनीं- "हउ ताकता तहरा ओरि, तू चिन्हेलु का? कवनो स्कूल के संघतिआ ना नू ह तहार?" मलकिनीं मूड़ी ना में हिलवली। साँच कहतानीं, हमरा मन में ई बात आइल- ऊ काहे देखता?नया बिआहल जोड़ी, ओहु में हम मरद, हमरा भीतरे- भीतर ताव आवे लागल- ऊ देखेवाला के ह, ऊ काहे देखता? भीतरे-भीतर हम अब लड़ाई लड़े लगनीं ओकरा से, जे अभी हमरा सोझा ना आइल रहे। आखिर बात नया बिआहल मेहरारु के जे रहे।

गाड़ी भर गइल आधा घंटा में। हमार मलकिनीं के छोड़ के कवनो दोसर मेहरारू ना रहे पसिजर के रुप में। बइठे के बेरा बिचला सीट के अरिया मलकिनीं,उनका बगल में हम आ बाद बाकी आऊर लोग। मतलब तेरह गो पसिजर में खाली मलकिनीं अकेले रहली। अब ले ना भइल तवन अब भइल-खोजाई शुरु भइल कि डराइबर कहाँ बाड़े, तब ले हजाम भाई के दोकान से उहे आदमी निकल के आइल,जेकरा से हम भीतरे-भीतर लड़ाई लड़ रहल रहीं। साँच कहीं-ऊ हमरा से हर

हर मामला में देखनऊक रहे आ एही से हमार कमजोर मन दू-दू हाथ करे के तइयारी कर ले ले रहे। हम त बुझ ले ले रहीं कि गाड़ी खुलते हमार ई बिपत ओरा जाई, ई त आऊर सट गइल हमरा संगे।

नया जीप, नया डराइबर, हमनीं के नया-नया बनल जोड़ी-मतलब अब रऊए सभे बूझीं। ऊ आवते अपना सोझा के शीशा (जवना से पाछे देखल जाला) के "एंगिल फिट" कइलख। ऊ कवना कोना भिड़वलख, हम का कहीं, रऊरे सभे समझ लीं। हम अपना छाती पर साँप लोटला जस महसूस करे लगनीं। गाड़ी खुलला के पहिले तक ऊ शीशा त शीशा, तिरछिया-तिरछिया के कनखी से कव हाली देखलस। हम ओकरे ओरि डीठ गरवले रहीं। ऊ जब जब देखे, हमरा बुझाए कि कोई हमरा राजगद्दी के हिला रहल बा। ऊ देखे, हम मलकिनीं के देखीं- कहीं सँचहूँ कवनो लइकाईं के इयारी वाला बात नइखे नूँ? बाकिर ऊ त मेहरारू रहस, जे अइसन-अइसन आँख के कवना ढ़ंग से देखे के बा, सब जानत रहस। सभे मेहरारू लोग के अइसन घटना से दू-चार त हरमेसा होते रहे के पड़ेला।

आखिर में गाड़ी खुलल। गाड़ी खुलल का, ई कहीं कि हवाई जहाज उड़ल। खुलते गाड़ी के एतना बिन्न हॅकलख कि बुझाए कि हमनीं कवनो शताब्दी एक्सप्रेस (हालांकि ओह घड़ी ई ट्रेन ना रही सऽ) में बइठल होखीं सऽ! छातिए पर हाथ रहे सभे के। कव हाली टोकाइल, कहाईल- 'बबुआ हो, गते-गते हाँकऽ', बाकिर बबुआ के हाँके के थोड़े रहे, ओकरा त आज एक जानीं के सोझा साबित कर देवे के रहे-एह पृथ्वी के अगसरुआ डराइबर हम! एतना तेज चललो पर शीशा पर त ना बाकिर कनखी से देखे के भी काम रूकल ना रहे उनकर। हम हतयार जस चुप रहे खातिर मजबूर रहीं।

आखिर दिमाग काम कइलख आ अब हमार बारी आइल बदलेन लेवे के। लगभग पचीस किलोमीटर चलला के बाद एगो सुनसान जगहा, जहाँ फैलदवर रहे, हम ओकरा से कहनीं- "ए डराइर साहेब, तनीं गाड़ी रोकीं, हम पेसाब करेब।" शायद उहो अइसन मौका खोजते रहे, किनरवाहीं तरफ ले आ के गाड़ी रोक देलख आ घूम के हमरा मलकिनीं ओरि देखत कहलख- "जाई, जल्दी फुरसताह हो के आईं।" हम उतरे के उतजोग ना कइनीं, चुप्पी नधले रहीं। ऊ अब हमरा ओरि ताक के कहलख- "उतरीं ना महराज, गाड़ी रोकवइनीं पेसाब करे खातिर त जात काहे नइखीं?" हम बोलनीं- "बबुआ हो, हमरा पेसाब नइखे करे के। तू हीक भर देख लऽ। एगो त तेरह पसिजर में एगो मेहरारु, एह मेहरारू खातिर सभकर जान साँसत में डलले बाड़ऽ। हेतना तेज चलावतो बाड़ऽ आ रह रह के सोझा ना देख के इनका ओरि ताकिओ लेत बाड़ऽ। हम कुछो ना बोलब ए हमार बाबू, तू हीक भर देख लऽ। हम आपन मूड़ी फेर लेतानीं। जब देख लिहऽ आ मन भर जाव त गाड़ी चलइहऽ। हम कुछुवो ना कहेब बाकिर बबुआ हो, एगो काम, एके बेरी में करऽ, ना त चलावऽ आ ना त देखऽ!" ऊ अब बुझलख कि हमार दाँव कइसन रहे, कहलख- हम इनका ओरि कहाँ देखतानीं?"हमरा कुछ बोले के पहिलहीं गाड़ी में बइठल दू गो दोसर बूढ़ पसिजर बोल पड़ल- "रे सार! तें त अमनौरे से देखत आवत बाड़े रे। हमनीं के हदसे जान सुखल जाता आ देखतो बाड़े आ गाड़िओ चलावतारे। चलइबे कि ना चुपचाप?"

बाद बाकी रऊओ सभे समझ सकतानीं। गाड़ी खुलल, छपरा भी आ गइल बाकिर बबुअवा एको हाली तकलख ना। ना हम कुछ बोलनीं, ना मलकिनीं बोललीं आ ना डराइबरऊ! उतरे के बेड़ा हमरा आँख से ओकर आँख मिलल। ओकर कातर आँख आजो इयाद बा, साफा पिटऊर लेखा।

◆ ◆ ◆

उदय नारायन सिंह,
रिविलगंज, छपरा

भोजपुरी माई के गोहार

शशिरंजन शुक्ल
'सेतु'

अहँकि-अहँकि कहे भोजपुरी माई
सुनि ल जा लरिका सयान
ए सुगना ॥॥॥
राखि ल अँचरवा के मान

रहसू, गोरख, कबीर निरगुनिया
बिश्वामित्र अस केकर पुरनिया
काशी हवे ज्ञान के राजधानी
उहवें से पसरे बिहान

आल्हा उदल अस धीर लड़वइया
कइसे बिसारी कुँवर के समइया
माटी के करजा चुकवलें हुलसि के
कइसे भुलाई जहान

पवरुस से ऊसर के उपवन बनइलें
धूरा से उठि के अकासे लगि गइलें
गिरमिटिया पुतवन के देखि के बढ़न्ती
मनवा में उमगे गुमान

बावला, महेन्दर, रसूल आ भिखारी
मोती बी।ए। 'अंजन' के हम महतारी
हमरे अँचरवा का छइयाँ में खेललें
बेटवा रजिन्दर महान

अब काहें बखरा परे तीत ताना
देखि-देखि हमरा के बिहँसे जमाना
ईहे बा चिरौरी जो जोगवे के चाहऽ
करि लऽ अतीत के धेयान

हरियर बगइचा न कुम्हिलाए पावे
नाता हमार सभे शान से बतावे
असरा के कोर नाहीं छोड़े ला मनवा
बहुरी ऊ दिनवा पुरान ◆ ◆ ◆

सावन आइल

सावन आइल
सावन आइल रसधार पियवा ना अइले
कजरी माथे पर बजरी ए सखी

दिन ना चैन रैन ना निन्दिया
साटल रह गइल माथे बिन्दिया
काथि पर करी सिगार पियवा ना अइले ॥2॥
ढोल मजिरा ना खजड़ी ए सखी
कजरी माथे पर बजरी ए सखी

रोम रोम बूंदन से सिहरे
साँझ सबेरे झिगुर नियरे
काथि पर माङ बहुराई पियवा ना अइले ॥2॥
गरजे मेघ चमके बिजुरी ए सखी
कजरी माथे पर बजरी ए सखी

मेघ अगिन बरसावत बाटे
रह रह अंगड़ाई आवत बाटे
रोक सकीं ना गिरी भहराई पियवा ना अइले ॥2॥
खेत हरियाली कचरी ए सखी
कजरी माथे पर बजरी ए सखी

दादुल बोल भयावन लागे
झर झर बरसे सावन लागे
का करिहे बैदा गोसाईं पियवा ना अइले ॥2॥
गदरल जवानी हदरी ए सखी
कजरी माथे पर बजरी ए सखी

◆ ◆ ◆

रामप्रसाद साह,
कलैया, नेपाल

खरोंच

कन्हैया प्रसाद तिवारी, 'रसिक'

इहे त चमत्कार हऽ। ब्रह्म बाबा अपना दरबार में एगो नास्तिको के माथा झुका देलन। युद्ध करे के मनसा से दल-बल समेत ब्रह्म बाबा के जमीन जोते खातिर ट्रैक्टर लेके आइल रहे बाकी बलहीन होके लवटल। बिटोरना जब घर से निकलत रहे त ओकर माई चेतवले रही- "अरे पगरजरना ब्रह्म बाबा से रार मत कर, उनुकर बहुत चलती चलेला।" बाकिर बिटोरना त अपना धुन में मस्त रहे भा ई कहीं कि अंधविश्वास के उखाड़ फेंके के जोश में माई के बात प कान ना दिहलसि।

बिटोरना कुछ दिन से अपना परिवार, समाज से कटल कटल रहत रहे, बातो करे त ओकरा बात मे खुराफाते नजर आवत रहे। पुरखा पुरनिया के पूजल पंडित जी के नीचा दिखावे में कवनो कोर-कसर ना छोड़त रहे। धीरे-धीरे धरम-करम से ओकर मन फाटे लागल।

"पहिले त बिटोरना अइसन ना रहे ए बाबा।" रमेसर बिटोरना के बाबा, महँगी से पुछलन।

"ना ए बबुआ, पहिले रोज जबले हलुमान चलीसा ना पढ़े तबले अन्न जल गरहन ना करत रहे बाकी जबले कलकत्ता से आइल बा तबले ओकर बोली बदल गइल बा। ना केहू से डंड परनाम, ना केहू से हँस के बोलता, जब देखीं तब किरोध कपार प बइठले रहता। लोग कहता कि एकरा नक्सलाइटन से संबंध हो गइल बा आ ओहनिये के जोर प ई बढ़-बढ़ के बोलता।"

बिटोरना ट्रैक्टर प बइठ के जसहीं चालू करे खातिर चाभी लगवलस, ओसहीं जोर से चिचिआइल- " बाप रे बाप, साँप!" आ ट्रैक्टर से नीचे गिर परल। बिटोरना के देह मे साँप के बिख भिन गइल बा, दरद के मारे फेंकरता। ओकर बाबा के मशविरा रहे कि ब्रह्मबाबा के चउतरा प बइठावल जाई त साँप के बिख उतर जाई। ई सुनते बिटोरना अपना बाबा के घुड़क दिहलसि। बाबा खीसी कहलन-

"त जो ससुरा, मर। हम कुछ ना करब।"

ओकर हालत खराब देख के टोला मोहल्ला के लोग जबरन ब्रह्म बाबा के चउतरा प ले जाये लगलन। बिटोरना छटपटात रहे आ जाये से मना करत रहे बाकियों ओकर एक ना चलल। ब्रह्म बाबा के पुजारी जी दूरे में रोकवा देलन आ कहलन - " बिटोरन, चउतरा पर बइठ जा।" दु-तीन बे कहलो के बाद बिटोरना ना गइल त डाँट के बोललन- "बइठ बिटोरना, बइठ । बाबा के चउतरा पो बइठ।"

पता ना कवन शक्ति काम कइलस बिटोरना पेनी घसेटत चउतरा प चढ़ गइल। आह ई का ? जवन बिटोरना दरद के मारे फेंकरत रहे ऊ उठके खड़ा हो गइल। दरद छूमंतर। पता ना कहाँ चल गइल रहे। बिटोरना के आँख से झर-झर लोर बहे लागल। ऊ आपन माथा पटके। अतने कहत रहे- " बाबा हमके माफ क दीं ।" ऊ त बाद में पता चलल कि ट्रैक्टर के स्टीयरिग में खोंच रहे उहे बिटोरना के हाथ में गड़ गइल रहे ।

◆ ◆ ◆

कन्हैया प्रसाद तिवारी,
'रसिक'
बैंगलोर

बिन रोके-टोके गले दिहऽ

कोमल मासूम सनेहिया के
दूनो अँखियन में पले दिहऽ।
सरधा के सुघर सपन-शिशु के
अँगना में ठुमुकत चले दिहऽ।

मन मनमानी से मानी ना,
मरजाद होत का जानी ना।
स्वारथ में एक झलक खातिर
छलि जा कहियो त छले दिहऽ।

सुधि के गरमी बेशरमी से,
कुछ नरमी से हठधरमी से,
पघिलावे हठ के बर्फशिला,
बिन रोके-टोके गले दिहऽ।

दियना दरदे के बारल बा,
तबहूँ अन्हियारा हारल बा,
ई सुरुज चान मड़ई के हऽ,
मति फूँकि बुतइहऽ, जले दिहऽ।

पग में जग बेड़ी डलले बा,
कतना बतलाईं छलले बा,
जतना ताना सौगात मिलल,
सगरे 'संगीत' में ढले दिहऽ।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक-
'सिरिजन'

नदी

पल पल हरखत धरती नापत,
उमड़त-पसरत आगे ताकत,
चलत रहऽ लगतार,
ए नदिया!
जालू कवना द्वार?

बाहर से अति शीतल लागऽ
भीतर आगि जरत होई।
देखि धार के धार लगेला
केहू याद परत होई।
बान्ह सरम के तल भहरावत
जालू का प्रीतम का गाँवें
गावत मेघ मल्हार?

नेह-नीर से सींचि धरा के
आँचर भरि-भरि हरियाली,
मोहबंध से मुक्त विरागी
परबत धिय जग-खुशियाली,
कवन रोध पग रोक सकल कब?
बरजि-बरजि बरियारी छेके
तूरत लहर किनार।

ले गोदी संतान अनेकन
चलऽ देत दानापानी।
घाट-घाट पर करत अर्चना
जोगी तपसी मुनि ज्ञानी।
ना केहू से लेना-देना
ज्ञान बिटोरल देखत के ना
सब पावल रसधार।

बूंद सिधु में सिधु बूंद में
ई रहस्य दुर्बोध रहल।
के आइल हऽ के लग भेटे?
जीवन रन प्रतिशोध रहल।
नाम रूप गुन सजी मिटा के
खतम कहानी कहवाँ जा के
सोचे तऽ संसार?

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक-
'सिरिजन'

हरिहर गाछ

जिनगी भर
फूल फल पात देत बूढ़ा जाला
चाम त
घामे में घामा जाला
एकइगो पात पतझड़ में
झर झर के
माई के गोदिये में समा जाला
भरल जवानी में भी ऊ
बुढ़ऊ जस लउक जाला
तब्बो ऊ
केहू के गोड़धरिया ना करे
ना केहू के निहोरेला
ना कबहुँ हहरेला
ऊ वसन्त आगमन के भरोसा
भरल मन से करेला
आ तब्बे त
सज जाला ओकरा देहि पर
हरिहर जामा
आ ऊ भुलाइये जाला कि
कब्बो कुछ टूटल रहे
कुछ छुटल रहे
आ फेरु से
बेहाल हो जाला
ऊ सिरिजन में
कुछ नया करेमें
कुछ नया जोडेमे

◆ ◆ ◆

डॉ. मधुबाला सिन्हा
(व्याख्याता,भोजपुरी,
इंटर महिला महाविद्यालय)
मोतिहारी ,चम्पारण

आपन माईभाषा

कहाँ बिलाइल सभ्यता संस्कृति, कहाँ बिलाइल लाज जी ?
खोजे खातिर निकले सभे, भोजपुरिया समाज जी।

अश्लीलता खुब बढ़ल जाता, बनत जाता गीत जी,
परिवार संहे सुने वाला, कहाँ गइल संगीत जी?
काहें लोग हीन भाव से देखे, काहें जा तानी जा गारत में?
जबकी भोजपुरी ही छेकलस, हर कोना एह भारत में,
एक्कठा होईं अश्लील हटाईं, श्लील देखाईं रुचि में,
तब देखीं भाषा जुड जाई, फट से आठवीं अनुसूची में,
एकरा खातिर किरिया खाइल जा, मिलके हमनीं आज जी,
खोजे खातिर निकले सभे--- --- --- --- --- --- ---२

निकले जब मुँह से माईभाखा, गजबे प्रीत फइलावेला,
हित त छोड़ी, मुदई के भी अपना ओरि बोलावेला,
तबो देखीं गुनगर होके ई, बइठल गन्दगी लपेट के,
अश्लील लोग पाँजा मे बन्हले, भाषा में अश्लीलता चपेत के,
अश्लीलता से निकाल के देखीं, भाषा करीं ई राज जी,
खोजे खातिर निकले सभे --- --- --- --- --- --- ---२

कुछ त बाड़े एह भाषा के, चलते ही ऊ तर गइले,
कुछ के भाग्य एह भाषा के, चलते ही ऊ सँवर गइले,
कुछ भोजपुरी भाषा के बढ़वले, जेकरा चलते अमर भइले,
कुछ भोजपुरी भाषा से बढ़ले, बढ़ते ही ऊ ऊढ़री गइले,
बिगड़ल के सुधारल जा कसहूँ, चाहें 'संग्राम' से बने ई काज जी,
खोजे खातिर निकले सभे --- --- --- --- --- --- ---२

◆ ◆ ◆

संग्राम ओझा 'भावेश'
मुसेहरी बाजार,
गोपालगंज (बिहार)

सवनवा आइल ना

ना आइल बलमुआ, सखी हो सवनवा आइल ना
सवनवा आइल ना हो सवनवा आइल ना-2

बिरह में देहियाँ जरे,
छन-छन पनियाँ परे
सखी हो कब आई बलमुआ ना
सखी हो सवनवा आइल ना

बहे पवन पुरवइया,
कूके बाग़ कोयलिया
सखी हो कब आई बलमुआ ना
सखी हो सवनवा आइल ना

सवातिन भइल सेजरिया,
धई-धई काटे रतिया
सखी हो कब आई बलमुआ ना
सखी हो सवनवा आइल ना

अँखियाँ के काजर बहे,
ना कइल सिगरवा सोहे
सखी हो कब आई बलमुआ ना
सखी हो सवनवा आइल ना

ना आइल बलमुआ, सखी हो सवनवा आइल ना
सवनवा आईल ना हो सवनवा आइल ना-2

◆ ◆ ◆

अखिलेश कुमार अरुण
ग्राम-हजरतपुर, पोस्ट-मगदापुर
जिला-लखीमपुर(खीरी)

आल्हा छंद

तू आव मइया हाथ लइके, बरछी फरसा आ तरवार।
कर संघार सभी दुष्टन के, हर लऽ ई धरती के भार॥
बिनती सुनऽ दीन दुखियन के, रउरे बिन दुनिया अन्हार।
रूप तू काली तू ही दुर्गा, महिमा राउर अपरंपार॥

आइल अइसन मुदइ करोना, सब के सांसत में बा जान।
आपन नेही लुटाव मइया, भगत लोग के रखलऽ मान॥
मात भवानी शेरावाली, मनुजन पर कर दऽ उपकार।
जाये सुनके भाग करोना, कर दऽ आपन धनु टंकार॥

◆ ◆ ◆

डॉ. ऊषा किरण
पूर्वी चंपारण, बिहार

चुनमुनिआ घर

विवेक सिंह
पंजवार, सिवान (बिहार)

"का हो रामदयाल॥ मने आवा में नाद भूला जाता॥?" श्यामबहादुर काका बड़का लाठी ठेंगत रामदयाल के दुआर पर आवते उनका से ई बात कहले।

रामदयाल अपना दुआर के चउकी पर बइठि के अखबार पढ़त रहले। ऐसे उनका श्यामबहादुर काका के बात समझ मे ना अइल। श्यामबहादुर काका अपना टोला के सबसे बुजुर्ग आदमी रहले लेकिन अब इनकर सर थाक गइल रहे। रामदयाल अखबार मोरत उठ के काका के आदर कइले आ चउकी पर बइठे के कहले।

"काका पहिले बइठि आप॥आ अब बताई का कहत रहनी ह रउवा हम धयान ना देनी हऽ।"

"कहे के का बा रामदयाल, अरे घर के घरभोज कइल हऽ आ हमरा के भुला गइल ह नु।" अपना चेट से खइनी के डिबिया निकालत श्यामबहादुर काका कहले।

अइसन रिस्ता में सिकाइत के खटास केना चखे के चाही। जइसे बगइचन में आम भा ईमली के फर लउक जाव आ दाँत कोट के चलते केहू राही ओ फर के स्वाद ना चखे त का मजा रह जाई। ओसही ई गाँव में भाई-देयाद के अपनवत वाला खट्टरुस सिकाइत दाँत कोठ जरूर करी बाकिर अपनवत के अहसास जरूर दिआई। जवना में गाँव के एगो संस्कार झलकी आ दवेस के जगह रिस्ता के महतव समझ में आई।

"द काका खइनी हम बनावत बानी।" रामदयाल! श्यामबहादुर काका से खइनी के डिबिया लेत कहले।

"अच्छा ई बताऊ रामदयाल की जग-परोजन ठीक से निबह गइल नु।" डिबिया देत काका पुछले।

"ह काका तरहा लोग के आशीर्वाद के देन बा कि सब निके-निके बीत गइल।" खइनी तलहथी पर रगडत रामदयाल कहले।

"भगवान जेकर ना बिगदिहे त कवनो आदमनी के बिगदला से केहू का बिगदी। सब उनकरे साथ में बा बस आपन मन साफ राखे के चाही।" श्यामबहादुर काका खइनी ओठ तर दाबत कहले।

"अब का कहि काका, हम कामे में अझुरा के भोरबिसरी हो गइनी आ तहरा के बोला ना पइनी। अब गलती हम कइले बानी तऽ दंडो हमी भोगम, बोली आप का सजा सुनावत बानी।" अपना आपके के अपनवत के पाग में डुबावत रामदयाल ई बात काका से कहले।

"तहरा के दंड का सुनाई तहार ख़ातिरि सब क्षम्य बा। अपना बेटवा के बिआहे में पिअरी पहिना दिहे।" श्यामबहादुर काका हँसत ई बात कहले।

"बस इहे दंड बा तऽ रुकअ हम आवत बानी।" एतने कह के रामदयाल घर के भीतरी चल गइले।

तनी देर बाद जब रामदयाल बहरी अइले त उनका हाथ में एक जोड़ा पिअरी धोती रहे। ऊ सीधा श्यामबहादुर काका के गोर पर ध दिहले आ कहले।

"एगो काहे पहिनब काका जोड़ा पहिन ल आ बेटा के बिआह ले का होई का जाई केहू जानत थोड़ी बा। तू त जानते बारऽ ई घर के सपना केकर रहे आ घरभोज के सवख-सरधा केकरा मन मे रहे।"

ई बात कहत रामदयाल के आँखिन तनी सजल हो गइल। बाकिर ऊ अपना भावना के अपना करेजा में दबा दिहले।

"अरे जो रे रामदयाल, हम त ठिठोली करत रही बाकिर ते त साचो मान गइले। ओह दिन हम ना अइनी कि अब अनाहार में हमरा लउकत नइखे आ कहि राह-पराह में गिर जइती त दोसरे लाग जाइत। अइसे त बड़का नतिआ कहलस की हम बाह पकड़ के ले चली का बाबा बाकिर हमी मना कर देनी आ घर के सभे त अइले रहे।" श्यामबहादुर काका तनी लजात ई बात कहले।

"अब जाए द काका जवन होला ऊ ठीक होला। आ हई लऽ पाव पुजाई अपना के खइनी बीड़ी ले ली हऽ।" रामदयाल सए के नमरी काका के हाथ में धरावत कहले।

श्यामबहादुर काका सरम से भा उपहार के भार से गड़ल जात रहले आ उठ के जात-जात आशीर्वाद के ढेर लगा दिहले।

" अच्छा रामदयाल हम चल तानी बाकिर तोर घर-दुआर बाल-बच्चा फूल अस फुलाइल रहो जहा रहो आबाद रहो आज तहार मलकिनी रहती त अउर चहक-दहल रहित।"

श्यामबहादुर काक जात-जात जवन कहले ओसे रामदयाल के अंदर दबल भावना उफान मारे लागल आ ऊ चुप-चाप अपना कमरा में आ गइले। अउर सोकेस में रखकर अपना पत्नी के फोटो हाथ में लेके देखे लगले।

"आज बहुते देर क देनी आवे में ॥कहा रुक गइल रही।? बसुधा पानी के गिलास देत रामदयाल से पुछली।

रामदयाल पानी पिअत कहले।" का बताई मथुरा भाई के काम से उनका साथे जाए के पड़ गइल हऽ।"

"हूँ ॥! हम जानत रही आपके इहे हाल हऽ, जब ना तब दोसरे के काम में अझुराइल रहेनी।"" गिलास लेत तनी तुनुक के बसुधा बोलली।

रामदयाल- "जे तहरा दुख-सुख में खाड़ रहेला ओकरो काम में साथ देवे के पड़ेला। तू सब जान के अनजान बनेलु। आ हम तहरा से कबो झूठ बोलले बानी जे आज बोलम। फिर हाथ पकड़ के कहले, तुम जब तक हमरा लगे बारू हम कबना बात के फिकिर करी।"

बसुधा- "हम फिकिर करे के थोड़े कहत बानी। बाकिर ई बेरा-कुबेरा आप कहि रहेनी भा कहि से आवेनि तऽ हमरा करेजे प हाथ रहेला। जुग-जमाना केतना खराब बा आप जानत बानी नु।"

रामदयाल हँस के-- "अच्छा तऽ तहरा डर लागेला ना।ठीक बा काल से अब कहि न जाएम तहरा के छोड़ के।"

दाम्पत्य जीवन में अइसने केतना छोट-छोट नोक-झोंक बा जवन अहसास दिआवेला अपना पूर्ण भइला के काहे की आदमी जब तक गृहस्थी के खुटा से नइखे बनहाइल तऽ ऊ अकेल बा, नीरस बा, ओकर जीवन में कवनो तरंग नइखे।

खाना खइला के बाद जब दुनु बेकत सुते ख़ातिरि आँगन में बिछल खाट प गइल लोग तऽ रामदयाल आपन माथा बसुधा के गोदी में रख दिहले। आ बसुधा अपना दाम्पत्य परेम के जतावे ख़ातिरि रामदयाल के अंगूठियां केस में आपन अंगूरी के फिरावे लगली। तबे आकास में लउकत तरेंगन आ घर के छान्हि प मंडरात भूगजोगनी के देखी के रामदयाल बसुधा से एगो बात पुछले।

"बसुधा एगो बात बतावअ तहरा मन के का खवाइस बा आ तू कवना चीज के ज्यादा सोचेलू?

रामदयाल के केस में अंगूरी घुमावत बसुधा सकोच के बोलली। "अच्छा आज रउवा मन में काहा से आइल हऽ की ई बात जे आप पूछनी ह॥?"

रामदयाल बसुधा के आँखिन में देखत कहले- "हमरा मन में ना आइल हऽ। ई त हम एहि तरी पूछ देनी हऽ। आखिर तू हमार अउर ई घर के केतना खयाल राखेलू। बाकिर आपन मन के इक्षा कबो ना बतावेलू, आज बतावअ तहरा मन में का चलेला।?"

बसुधा आकास में देखत मुस्किआ के कहली- "ई तरेंगन के टिम-टिमात अ भुगजोगनी के भूक-भुकात देखी के हम ऐके बात सोचिने। आपन एगो चुनमुनिआ पक्का के घर बनवइती ओकरा बाद ओ घर के घरभोज हम बहुत धूम-धाम से करती। ओमे देवता-पित्तर, गाँव-जवार, भाई-देआद, हितई-परितई के नेवती। सभे के जबान प एकही बात रहित की अइसन घरभोज आज तक केहू नुइखे कइले जवन रामदयाल आ रामदयालबो कइलस लो। सब बितला के बाद हमनी दुनु बेकत घर के खुलल छत प अंजोरिया के टह-टह चमकत चांदी जइसन रात में एक-दूसर के हाथ धके घूमती जा तऽ चाँद केतना लजाइत ई हम देखल चाहत बानी। काहे की चाँद के अपना चाँदनी पर गुरुर बा तऽ हमरा अपना चान प। फिरो हम ई बात जानबुझ के ओ चान से पूछती कि का चान तू अपना

चाँदनी ख़ातिरि कवनो चुनमुनिआ घर बनवइले बारऽ कि ना आ चान केतना लजाइत, सकुचाइत ई बात पर आ ओकर अभिमान चूर-चूर हो जाइत हमरा चान के बनावल ई चुनमुनिआ घर देखी के।"

रामदयाल परेम भरल स्वर में कहले- " ई तऽ बनाउटी बात भइल ऐमे कवनो रस भा तथ्य नइखे।"

बसुधा रामदयाल के आँखिन में झाकत कहली- "का कहत बानी रउवा, कि ऐमे कवनो रस भा तथ्य नइखे। अरे परेम के माप बात के रस भा कवनो तथ्य से नइखे हो सकत। हृदय के हृदय से जोड़े के पड़ेला आ जब एक दूसरा के हृदय जुट जाला तऽ परेम के छोट-छोट बात में रस अउर तथ्य नजर आवे लागेला। जब आप हमरा ख़ातिरि ऊ घर बनवाइब तब आपके समझ में आई कि हम का कहत रही।" रामदयाल ऊ निश्छल परेम के सोझा बसुधा के बात ना काट पवले। एहि तरी एक-दूसरा से बोलत-बतिआवत दुनु बेकत ऊ चाँदनी रात के अकवारी में समात चल गइल लोग। ई जिनगी के दउड़ में नियति के नीयत सबसे बाउर हऽ। जब चाही जइसे चाही खेल खेलाइ आ हमनी बिबस बानी जा खेले ख़ातिरि।

जब आदमी के सुख मिले के रहेला तऽ जिनगी के दउड़ वाला डगर छोट हो जाला। साइद इहे खेल खेललस निअती बसुधा आ रामदयाल के साथे। अइसन समय आइल की घर जब बन के तैयार भइल आ घरभोज के दिन धराइल रहे। बसुधा के एगो पुरान बेमारी रहे जवन ऊ छुपावत आ गइल रही रामदयाल से आ उहे भयंकर रोग काल के रूप ध लेलस। बसुधा उहे काल के गाल में समा गइली आ रामदयाल के अफसोस रह गइल कि जिनगी के डगर में बसुधा हमार साथ छोड़ देली अउर हम उनकर आखरी इक्षा पूरा ना कर पइनी। "बाबूजी॥बाबूजी॥ हम जात बानी आप आपन खयाल राखब।"

ई आवाज जब रामदयाल के कान में पड़ल तऽ ऊ अपना वास्तविक समय में आ गइले। रामदयाल के हाथ में बसुधा के फोटो रहे आ उनका सामने बैग लेले उनकर लड़िका कमलेश खाड़ रहले।

"बाबूजी हम जात बानी आपन खयाल राखब आप। कुछो के कमी-बेसी होइ तऽ हमरा के फोन करब हम टेमना से कह देम ऊ ले- आन दी।"

रामदयाल आपन अंगोछि से बसुधा के फोटो पोछत कहले- "ठीक बा बेटा तू आपन खयाल रखीहऽ। अब अगिला साल तू बिआह क लऽ। काहे कि ई घर के एगो घरनी के जरूरत बा। तहरा माई के जवन सपना रहे ऊ तऽ पूरा भइल बाकिर ऊ ना देख पवली नाही सूखे भोग पवली ई घर के।"

"बाबूजी अभी कवन जल्दी बा होइ नु बिआह।!" ई बात कहत कमलेश अपना बाबूजी के गोर छूके आशीर्वाद लिहले।

"खुश रहअ" - रामदयाल आशीर्वाद देके कमलेश के दुआरी प ले छोड़े आवत बारे। टेमन मोटरसाइकिल स्टार्ट कर के खाड़ बा कमलेश ओपे बइठत बारे आ मोटरसाइकिल धुर उड़ावत रामदयाल के आँखिन से ओझल हो जात बिआ। एक नजर राह के ओर देख के फिर हाथ में रखल बसुधा के फोटो देख रामदयाल कहले।"तहार चान तहरा के छोड़ के कहा जाई बसुधा। चलऽ छत पर चल के घुमल जाओ आ ऊ चान के अभिमान चूर-चूर कइल जाओ। जवन बस एक रात ख़ातिरि अपना चाँदनी के साथे रही काहे की ऊ हमरा निअन अपना चाँदनी ला चुनमुनिआ घर नइखे बनवले।"

◆ ◆ ◆

दारूबंदी

चोरवन के चानी बा, पुलिस के आनंद बा ,
हल्ला बा ! बिहार में दारू बंद बा ।

भइया का बारात में बान्हल आर्केस्ट्रा बा,
भरल कार्टून बा आ दु बोतल एक्स्ट्रा बा ।
थाना आ पुलिस के कइल रजामंद बा,

मऊसी का बेटा के कलकता में घर बा,
खाली तनी जक्सन पर पुलिस के डर बा ।
बेग में बोतल बा, मन सकरकंद बा,

देह जैसे लाठी ह, आम के आँठी ह,
गरई के चिखना आ देसी चुआँठी ह ।
जेठ का घाम में सुतल बा बान्हा पर,
दारु का नासा में गर्मी में ठंड बा ।

बाटे परीक्षा आ यूपी में सेंटर बा,
ट्रेन के टिकट बा दारू के कैंटर बा ।
पीएम, नहाएम, आ भर के ले आएम,
बबुआ का मन में गजबे उमंग बा ।

मालिक का दुअरा पर छीले के घास बा,
आज का दारू के उनके पर आस बा ।
बनिहारी का ऊपर से दस रुपया मिलेला,
पाउच पीके आइल बा मेहरी पर रंज बा ।

तरकुल का गाछी तर लागल उहे भीर बा,
भोर के तारी ह मीठ जइसे खीर बा !
पासी का मउगी के देख-देख पीएला,
मरले बा तीन लोटा, नासा परचंड बा

◆ ◆ ◆

रजनीश ओझा
सारण, बिहार

जिनगी

जिदगी गम के शिकार हो गइल।

कतिने न रंजिश पसारल ह पाँव
रहता में काँट बेसुमार हो गइल।

बदन ही लगे खोखला आजकल
चिता त मन के सिगार हो गइल।

स्वारथ के प्रीति जोड़त ह सबे,
मतलब के दुनिया इयार हो गइल।

उड़ गइले खोता के सगरो पंछी
सुना-सुना घरवा दुआर हो गइल।

केहू पर न कवनो भरोसा रहल,
सब जग करियवा बिलार हो गइल।

◆ ◆ ◆

गुड़िया शुक्ला

जइसे सोरह साल पहिले

विद्या शंकर विद्यार्थी

सोरह साल बाद सुरसतिया हमरा मिलल। बड़हन गो हो गइल रहे। ठीके कहल जाला लइकी जात के सेयान होत देरी ना लागे। जब बचपन में एको द्‌ घंटा देरी होखे त ऊ हमरा के जोहत आ जाए आ जब ना आवे त हमहीं ओकरा के जोहे चल जाईं। हवा जइसे जना देबे ओकरा के कि सुरसतिया चाचा आवताड़न तोर। सुरसतिया बुल देनी घर से निकल धावे आ अंगे लाग जाए। कान्ही पर त चढ़ावहीं के परे ओकरा के। जले कान्ही चहड़ के हाथ ना हिलावे। हमरा पर ओकर रिने रह जाए। हम ओकरा आँखी में आँसू भी ना देख सकत रहीं।

कारज के घर में खाना में देरी होत रहे। ऊ हमरा से आके के ओही लइकईंया लेखा अँगूरी धर के कहलस- "चाचा, जोर से भूख लागल बा।"

हम ओकरा बचपने ओला बोली में घेरा गइलीं, छेंका गइलीं आ बन्हा तक गइलीं। ई कहल कि 'कारज के घर बा तनी भूख आड़', बचपन के हिमालय के छाती में चोट मारल समान रहे। जवन हम कर ना सकत रहीं।

सुरसतिया आज हमरा कान्ही पर ना चढ़े के बलुक जोर से भूख लागे के बात उठवले बिया। हम जाके खाना ले आके दिहलीं। ऊ खाके निहाल हो गइल। जइसे सोरह साल पहिले निहाल हो जात रहे।

◆ ◆ ◆

हमरा भोजपुरिया माई के

सूर्य रहे चमकत जब ले ,
तब ले गंगा में पानी हो ,
हर देश परदेश में फइलल,
एगो भोजपुरी कहानी हो ।
शान बढ़े भोजपुरिया के जैसे,
चांद बढ़े अंजोरिया के ,
मान रहे माईभाषा के जैसे,
मान रहे लरकोरिया के ।
हम हाथ जोड़ि गोहराईं रोजो,
अपना धरती माई के ,
कुशल हमेशा रखिहऽ मइया,
हमरा भोजपुरिया माई के ।
बाग बगइचा रही जबले ,
धरती हरिहर लागी ,
जिनगी जियल बढ़िया होई ,
रोग बेमारी भागी ।
जबले खड़ा हिमालय बाटे,
भोजपुरी के नाम रही ,
जइसे गंगा मइया तइसे,
भोजपुरिया समाज रही ।
हम ऋषि कहीं धर हाथ करेजा,
नतमस्तक धरती माई के ,
कुशल हमेशा रखिहऽ मइया,
हमरा भोजपुरिया माई के ।

◆ ◆ ◆

ऋषि तिवारी
पता-चकरी, सिवान (बिहार)

कृष्णा श्रीवास्तव
हाटा, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

गाँव हमार

गाँव के बाति हमरे निराला हवे।
जहवाँ संगहि में मसजिद-सिवाला हवे।

भात, रोटी आ चटनी में अमरित भरल-
इहवाँ अनमोल हर इक निवाला हवे।

नेह महकल करेला इहाँ ए तरह-
जइसे सिलवट पे पीसल मसाला हवे।

साँच बातिन के गठरी रहेला भरल-
मन मे कउनो ना चोरी घोटाला हवे।

आम, बरगद आ पीपर बा पावन बहुत-
धूर माटी हमन के दुसाला हवे।

डाह बाटे न केहू से कउनो सुनीं-
गाँव व्यवहार के फूल माला हवे।

बाटे 'कृष्णा' ना मन में अन्हरिया इहाँ,
सीख पुरखन के दीहल उजाला हवे।

◆ ◆ ◆

भोजपुरी ग़ज़ल

गजल

1।

साध दिल में बिखर गइल बाटे
आस मन में चिहर गइल बाटे
जिन्दगी सोच के रहल गुमसुम
चोट दिल पर घहर गइल बाटे
बात तऽ बन पहर भ में जाइत
आँख बह के नहर भइल बाटे
चाँदनी रात खर नियन लागे
चाह असहीं घहर गइल बाटे
फूल मुरूझल त जर गइल विद्या
काँट सगरी छितर गइल बाटे।

2।

लोग अपने डरा दिहल बाटे
जिदगी के सरा दिहल बाटे
आग लहकल कबो जराइत ना
डाढ़ बेसी धरा दिहल बाटे
गाँव के हाल का कहल जाई
बाँह घर के गिरा दिहल बाटे
आज के हाल बा रहल अनबन
माथ अलगे फिरा दिहल बाटे
हाथ में बस इहे सहारा बा
गाह के फर फरा दिहल बाटे।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

आकाश महेशपुरी
कुशीनगर,उत्तर प्रदेश

पुरईन के पत्तई

दाली में नेह समाइल आ भाते में प्यार सनाइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

नाश्ता में सेव चले केरा बुनिया बरफी लड्डु गाजा
अंगूर रहे चिकन चिकन नमकीन चले ताजा ताजा
कोशा के जल के शीतलता बा जाने कहाँ भिलाइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

नीचे एके गो पाँती में लोगवा सब के बइठावल जा
परवल के सब्जी दही भात दाली में घीउ चलावल जा
पापड़ में प्रेम रहे एतना मन खुश हो जा मुरझाइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

अब हाथे हाथे थाली ले एने ओने सब धावेला
आ खुद से सभे परोसेला पूछे ना केहू आवेला
बिन पानी भोजन खड़े खड़े कइसन रिवाज उपराइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

आवे जब नाच लगे जमघट आ खूबे मौज मनावल जा
ना तनिको रहे दुराव कहीं बस खाली नेह लुटावल जा
आरकेस्टा आवेला अब त मनवा रहे डेराइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

जनवासा शिष्टाचार मिलन शादी के रसम निभावल जा
बाराती लो के स्वागत में गारी सनेह के गावल जा
अब डी जे वाली झगरा में बा थाना सउँसे आइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

जब होत सबेरा दही जिलेबी चिउरा साथे पावल जा
आ कहीं कहीं मरजाद रहे दू दिन ले मज़ा उठावल जा
अधरतिये के जाये खातिर अब लोग रहे अगुताइल हो
ऊ याद बहुत आवेला पुरइन के पतई पर खाइल हो

◆ ◆ ◆

भोजपुरी दोहे

रार बेसाहत मत चलीं, मत बोलीं बड़बोल।
जाई राउर पोल खुल, कही लोग बकलोल॥

फाटल पहिले से रहे, हो जाई भोंभाड़।
कइल टंगरी छोड़ दीं, बाँचल बा बस हाड़॥

रेंग-रेंग बानीं चलत, बन गोबर के जीव।
माड़ भात खाये दिहीं, ना चाहीं जी घीव॥

अइले ऊ हरियर करे, गइले कर के टाँड़।
हिय के कुछ सोहाय ना, भरल दरद से फाँड़॥

ढीठ बनीं मत लीं चढ़ा, मुँह पो एगो जाब।
बैल एह से ना बनबि, करीं खड़े पेशाब॥

बेचीं घुघुनी फोकचा, ढोसा छोला चाट।
हम ता सभ कुछ बेंच के, खड़ा करबि अब खाट॥

◆ ◆ ◆

सीमवा से बा टेलीफून

मनवा कइले बड़ुए सुनि के खुरखून सजनी
आइल सीमावा से बा टेलीफून सजनी।

माई भारती के हवऽ तू तऽ शान सजना
जाके मुदईअन के कई द हलाकान सजना
हियरा हुलसलि दुगुना कइलू जुनून सजनी,
आइल सीमावा से बा टेलीफून सजनी।

मत करऽ अब देरी जब बाज गइल रणभेरी
राजा काटि काटि के मुंड के लगा दिहऽ ढेरी।
अदहन जइसन खउले बतिया से खून सजनी
आइल सीमावा से बा टेलीफून सजनी।

भगत सिह आजाद कुँवर सिह के हवऽ पुजारी
दुश्मन के कटिहऽ जइसे काटी हम तरकारी
मारब फारब सभनी के देब बिधून सजनी
आइल सीमावा से बा टेलीफून सजनी।

◆ ◆ ◆

विमल कुमार
जमुआँव

सुख-दुःख

राकेश कुमार पाण्डेय
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश

के बा सुख में के बा दुःख में,
का ह सुख-दुःख के पैमाना?
सुख के साधन के चिता में,
बउराइल बा आज जमाना॥

जेकरा लगे ढेर धन बाटे,
कइसे मानीं सुख में होई?
जेकरा धन-दउलत हीं नइखे,
कहाँ लिखल बा दुःख में होई?

ऊ ना रही चैन से कबहूँ,
जे अपना मन के बहकाई।
रोपया पइसा केतनो होई,
ओकर तंगी कबो ना जाई।

ऊ ना रही कष्ट में कहियो,
जे भी मध्यम मार्गी होई।
प्रेम भाव बा जवना घर में,
उहवाँ होई मीठ रसोई॥

दुःख के मन में मत बइठाईं,
हँस के दुःख के दूर भगाईं।
नकारात्मक सोंच हटा के,
सकारात्मक सोंच बनाईं।

खर्च होई जब साधन भीतर,
कवनो बात के गम ना होई।
साधन से अधिका खर्चा पर,
विपदा ना कहियो कम होई॥

सबके जीवन में सुख-दुःख बा,
होइहें राजा चाहे भिखारी।
जे भी चली सोंच से अपना,
ऊ कहियो ना बाजी हारी॥

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
शांति नगर, बेतिया,
प।चम्पारण, बिहार

गाँव आस-पास

गवईं सिवान देखा, भादों क बिहान देखा।
होत भिनुसहरा, चिरइयन क तान देखा।
मुरगा लकार सुना, बछवा हँकार सुना।
गइया दूहत गोरी, चूड़ी झनकार सुना।
गली-गली राम सुना, भजन अजान सुना।
लरिका जगावत, लरकोहरी क नाम सुना।
भरल सिवान देखा, सोहनी आ धान देखा।
कुकुढ़ी के खेतवा में, बड़हर मचान देखा।
बजरा क खेत देखा, चिरइयन क नेत देखा।
झुण्डे-झुण्ड बकुलन क, ताल में अनेत देखा।
कुमुद करेम देखा, पेण्डुक परेम देखा
दनवा चुगावत कागा, कोयली क नेम देखा।
हर हरवाह देखा, बरधा उछाह देखा।
हरे-हरे अरे हाँकत, गावत चरवाह देखा।
कूश-कास फूल देखा, पीयर बबूल देखा।
नागफनी शूल देखा, प्रकृत वसूल देखा।
आउर सूखा धूल देखा, मनुज क भूल देखा।
बड़का रसूख देखा, छोटकन क दुख देखा।
पेड़-पालो कूल देखा, कटि गयो मूल देखा।
झुठहीं क तूल देखा, सच क वसूल देखा।
कवन बखान करीं, चिता बा का नाम धरीं।
बुद्धि आ बिचार करीं, देखि के जहान मरीं।
आफत क कारण इहे, जागि जा निवारण इहे।
पेड़वा लगाई के बचावा, जग तारण इहे।
हरा-भरा गाँव करा, पुरखन का नाँव करा।
आवे वाली पीढ़ी के, बचाई सुख छाँव करा।
लइका पइदा कम करा, देश पर रहम करा।
एतना करम करा, बड़हर धरम करा।
हमरो पुकार सुना, इहे दरकार सुना।
धरती बचावा ना त, मिली दुत्कार सुना॥

◆ ◆ ◆

आइल बरखा बहार

सखिया सहेलिन मधुर गीत गावें,
अँगना में नाचें अ हमके नचावें ।
कजरी के धुन पे निछार हो,
मोर सलमा सितार ।
धानी चुनरिया हमार हो,
आइल बरखा बहार ॥

पूरब के बदरा में लाली सुहावन,
धीरे से झाँकें सुरुज मनभावन ।
चंदन सन महके बयार हो,
तन थिरके हमार ।

अड़हुल कनेर खिलल बा दुआरे,
अमवा के पतइन से चिरई निहारे ।
ताले में पुरइन हजार हो,
मोहे मनवा के तार ।

मंदिर के घंटी अ पूजा के बाती,
मन में बा सरधा के भरपूर थाती ।
मैया दें आशिष हजार हो,
माई किरपा अपार ।

कनिया सुघर धीरे बाहर निहारे,
अँचरा के ओट से साँझे सकारे ।
कब अइहें सजना हमार हो,
बीतल दिनवा हजार ।

मनवा में बाकिर बा ईहे संतोषवा,
देसवे के खातिर बा उनकर परनवा ।
सीमा पर दुश्मन हजार हो,
करिहऽ रक्षा हमार ।

◆ ◆ ◆

संजय कुमार राव
गोरखपुर

गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'
श्रीकरपुर, सिवान

ग़ज़ल

(1)

दोस्ती के हाथ हरदम बा बढावत लोगवा।
नेहिया के डोर हरदम बा थमावत लोगवा।

जिदगी में घुल गइलन मीठ चीनी के तरे।
काम साँचो बात हरदम बा करावत लोगवा॥

दोस्ती के दोष नइखे बदनसीबी ढेर बा।
आग लागल जिदगी में बा जरावत लोगवा॥

देत नइखे साथ हरदम दोस्ती के नाम पर।
साथ देबे के समय में बा सतावत लोगवा॥

प्रेम के अब नाम पर तू पाठ पूजा छोड़ दऽ।
राम जइसन नाम हमके बा रटावत लोगवा॥

(2)

देखि के बाग के फूल मउरा गइल।
का भइल आदमी आज बउरा गइल॥

ना रहल आस जब आँखि पर ओकरा।
आँख अछइत कली आज कजरा गइल॥

गाँठ बान्हल गइल गाछि पर दाबि के।
साँझि ले गाँठि तऽ खूब अझुरा गइल॥

काम के ना रही दू नमर धन कबो।
लूट के भोज से देह गदरा गइल॥

घाम में आजु बाड़े घमाइल रघु।
घेरि के साँझि बेरा अब बदरा गइल॥

◆ ◆ ◆

दुःख में कहूँ ना जाइये

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
भठहीं बुजुर्ग,
कुशीनगर,
उत्तर प्रदेश

अबहिन साले भर पहिले जोधन की दूनू भाई में अलगौजी भइल रहे, अबहिन त ऊ आपन टूटल सम्हारत रहले तले बड़की बेटी के बियाह कपारे आ गइल। ना कौनो नोकरी ना चाकरी, ना कौनो बेसी आथ अलम लेकिन खर्चा अपरंपार। कवनोंगा अबे जेठकी के बियहले तले छोटकियो सयान हो गइल। ओकरी ब्यवस्था के सोचत रहले तले भादो में मेहरारु माया की पेट मे दर्द हो गइल । पहिले त सामान्य रोग जानि के दवा दारू भइल लेकिन कौनो आराम ना, दरद अउरी बढ़ते जाउ । ओ बेरा दवा दारू भी त एतना ना रहे । जे जवन बतावे ले आवसु खियावसु। बरुआ फंकिया के त गल्ला लागि गइल लेकिन दरद तनिको आराम ना। एक सप्ताह ले पीड़ा अंगेजत अंगेजत माया एकदम कमजोर हो गइली रास्ता चले के भी हूब ना रहि गइल।

केहू बतावल कि गोरखपुर में हेमन्त कुमार होम्योपैथिक डाक्टर बाड़े, उनसे तनी देखावऽ। ओ बेरा माने 1968 में गाड़ियों घोड़ा चाहे रोड सड़क के भी त दिक्कते रहे। गाँव से खेता खेती नदी नाला लांघत पैदल पाँच किलोमीटर जाए के पड़े। ओकरे बाद कंचनपुर ले खड़ंजा बाद बाकी देवरिया ले सिगल रोड । सबसे बड़हन दिक्कत त ऊ भादों के महीना रहे। खेत खरिहान सब पानी से लबालब भरल रहे। जेने देखीं ओने पानिए पानी। ओही में माया के दर्द अइसन उपटल कि बिन डाक्टर के देखवले कौनो चारा ना। राति भर माया दरद से केल्हवा कटली। उनके छटपटाइल देखि के करेजा फाटि जाउ। घर के केहू आँखि पर आँखि ना दीहल। दू-दू गो छोट लड़िकन अउरी एगो सयान बेटी के लेके जोधन राति भर सुसुकि-सुसुकि रोअले। दुख के रातियो जल्दी ना बीतेला। बरखा कहे कि आजु ना बरसेब त कहियो ना बरसेब । रातिभर रोअत अउरी राति ताकत बिहान भइल लेकिन बड़का भिनुसारे जइसे चुहिया मुनाद लगवली चिडोला पर चार जन माया के ले के चलि दिहले। सब राहे चउआरे खेते खरीहाने पानी के धार बहे। ओहूमे बीच राहे लबालब भरल घघरी नदी, ओके पार कइल सबसे बड़ समस्या रहे। ओ आफत में कवनेंगा लोग पाँच कोस गइल अउरी कइसे जोधन गोरखपुर पहुँचले बतावल बड़ी मुश्किल बा।

लेकिन जोधन माया के लेके बारह बजे दिन में गोरखपुर पहुँचल रहले। दुःख के समय आपन लोग के आदमी खोजेला। भरि रास्ता जोधन सोचत गइले कि गोरखपुर में उनके छोट भाई रोधन परिवार के साथे रहेऽले। अगर लेट होई त उहें जाके रुकि जाएब, फेरु सबेरे चलि देबि। रोधन के गोरखपुर में बड़ी ठाट-बाट रहे। विभागों ओइसन कि सब बड़े आदमी से उनके जान पहिचान रहे। पूरा एगो मकानिये भाड़ा में लिहले रहले अउरी खूब ठाट-बाट से रहसु। जोधन का बुझाउ कि हमही उनके पढ़वनी लिखवनी, बाद में भले नोकरी होते ऊ अलगा हो गइले लेकिन तबो जेठ के मोल त रखबे करिहें। ई सोचि के खूब निश्चिन्त रहले कि आजु राति उहें रहेबि।

डाक्टरी में माया के नम्बर लगभग चार बजे आइल अउरी डाक्टर के लग्गे गइली। डाक्टर हेमन्त कुमार नाड़ी देखते कहि दिहले कि इनका कैंसर हो गइल बा। सुनते जोधन का काठ मारि दिहलस। अब का करीं? चारू ओर अन्हारे-अन्हा। छन भर में पूरा जिनगी लउकि गइल। कैंसर के कवनो दवाई नइखे, माने माया से साथ के मुराद अब खतम बा। उनका मरहीं के बा, लेकिन मरि जाईं त हमार कौन गति होई। हमार परिवार अब खतम हो जाई। लड़िका हमार भीख मंगिहे सन। केहू देखवइया ना होई। जवान बेटी अउरी दू गो नादान लड़िका

लेके अब हम कौन घाट के होखब। अगर दू गो पइसा ना कमाएब त खर्चा कइसे चली अउरी कमाए जाएब त लइकन के, के देखी? सब स्थिति परिस्थिति आँखि की सामने नाचे लागल अउरी उहें हॉस्पिटल में बइठि के दुनू परानी अहक-अहक खूब रोवले।

हालांकि दवा खइला के कुछू देर बाद दरद त ठीक हो गइल लेकिन ई सब होत जात देखावत-सुनावत साँझि हो गइल। अब घरे जाएके समय कहाँ रहे कि जाउ लोग। बाबूजी कहले कि ए बेरा चलऽ छोटकू किहाँ रहल जाई, लेंकिन माया मना करे लगली कि ना, सुख में कहीं गइल नीमन ह। बीमारी हालत में कहीं गइले लोग बाउर मानी, चलीं स्टेशने पर राति बीता लिहल जाई अउरी भिनुसारे पहिला बस से देवरिया निकल चलल जाई, लेकिन तबो जोधन ना मनले। उनके लिहले रोधन की क्वाटर पर पहुँच गइले ।

साँझ के बेरा रहे। रोड पर बल्व चमकि उठल रहे। रोधन आफिस से आ के लान में खटिया बिछा के बइठल दू तीन जन बगलगीर से बतियावत रहले। तबले जोधन हाथ में झोरा अउरी साथे मेहरारु के लिहले पहुँचले। देखते रोधन उठि के खड़ा हो, हाथ उठा के गोड़ लगले अउरी "कहां अइलहऽ लोगन?" पूछले। उनके देखते जोधन का आहि आ गइल, फफकि-फफकि के रोवे लगले। रोवते बतवले कि बबुनिया की माई का कैंसर हो गइल बा। सुनि के तनी रोधनो के मुँह पर भी गुनान के भाव आइल लेकिन बस एतने कहले कि "अच्छा चलऽ ठीक हो जाई।" कहिके घर मे चलि गइले। एकरी बाद कइसन हालचाल अउरी कइसन खियावल पियावल, कुछु पूछहूं ना निकलले। जोधन का अकेले बइठल-बइठल कोठा-कोठा परान घूमे लागल। 'अगर दवा ना कराईं त मेहरारू मरि जाई। अउरी दवा कराईं त पैसा के धुरछक छूटि जाई, लेकिन तबो मेहरारू ना बची। एने बेटी के बियाहो कपार पर बा। दू-दू गो लइकन के ले के अब त हम कौनो घाट के ना भइनी। ई का कइलऽ हे भगवान, अब हम बिला गइनी। अब त ना रोए के आँखि जूरी अउरी ना पोंछेके कपड़ा। अब लागऽता कि भीख मांगे के पड़ी। सोचि के भीतरे-भीतर कुहुके लगले लेकिन कहसु तऽ केकरा से?

ओने जब रोधन बो सुनली की कैंसर हो गइल बा त कइसन दयादिन का लगे बइठल अउरी कइसन हालिचाल पूछल। डरे उनके घरों में ना ढूके दिहली।

दुआरी पर एगो बोरा बिछा देहली, ओहि पर माया बइठली। पानी पीए के कागज पर एगो लड्डु अउरी माटी की बर्तन में पानी आइल। ई जोग देखिके माया का बड़ी बाउर लागल, ऊ पानी ना पियली। बेमार देंहि बइठल-बइठल जब डाँड़ दुखा गइल लेकिन तनी आरामो करे के जगह ना मिलल त रिसिया के दुआरे मरद जोधन के लगे अइली। जोधन दुआरे अकेले गुमसुम भविष्य के चिन्ता में डूबत उतरात रहले। दुख अउरी गुस्सा के मिश्रण लिहले उनका सामने खड़ा भइली। उनके देखते जोधन पूछले - "दरद ठीक बा?"

"ठीक का बा? चलीं चलल जाउ।" दुआरे बइठल जोधन भी ई बात महसूस करते रहले। चिहाके ऊ मेहरारु के मुँह लगले ताके "ई लोग हमसे जोगाता। ओ लोग का बुझाता कि हमसे छुआ जाई त उनहू का बेमारी हो जाई। घरो में ना ढूके दिहली हऽ! बोरा पर बइठल बइठल डाँड़ दुखा गइल बा। पानी पिये के लड्डु कागज पर अउरी पानी माटी की बर्तन में आइल ह। अब इहे दिन नू देखे के बाकी रहल ह कि चमइनियो के मोल ना रही। एहिसे हम कहत रहूईं की मति चलीं। स्टेशन पर रहि जाइल जाई। रातिये नू बितावे के बा, स्टेशने पर बीत जाई, लेकिन रउरा ना मनुईं। अबो से चलीं ! स्टेशन पर रहल जाई।

माया के बाति सुनि जोधनो का तनी बाउर लागल लेकिन का करसु। मरद जाति अगुतइले काम ना चली। सोचि के उनके समझवले कि "अब गइल ठीक नइखे। एइजा ना आइल रहितीं जा त दूसर बाति रहल ह, लेकिन अब आ के गइल ठीक नइखे। छोटकू का बाउर लागी। अपनी ओर से गलती कइल ठीक ना ह। सूते के बोरा दिहले बाड़ी नू। ओहि पर सूति रहल जाई। राति कटि जाई। बिहाने चलि जाइल जाई। जोधन समझा बुझा के माया के भीतर भेजि दिहले अउरी फेरू ऊ जाके बोरा पर बइठि गइली। तबले एगो टीन के थरिया में उनके भोजन आइल। ऊ थरिया बुझाउ कि कवनो भीखमंगा से माँगि के आइल बा। फूटल रहे। देखते माया जल भून के अंगार हो गइली। 'हम अइसन अछूत बानी कि हमके भीखमंगा के बर्तन में खाएके मिलल बा। जहाँ मरजाद ना मिले उहाँ जाए से का फायदा। छन भर में ही स्वर्ग पाताल सब लउकि गइल। आँखि से झरझर-झरझर आँसू गिरे लागल। भोजन के हाथो ना लगवली, चट उठली अउरी जोधन से जोर से कहली "हाँ, चलीं ! हमार लड़िका रोअता । कहि के घर मे से निकल के चलि दिहली । पीछे-पीछे मनावत जोधन अइले लेकिन जब ऊ ना मनली त उदास मन से उहो जाके आपन झोरा उठवले अउरी पीछे-पीछे चलि दिहले, लेकिन रोधन पूछहू ना निकलले कि काहें जइब लोगन।

◆ ◆ ◆

पिय-वियोग

हम का जननी सूखल नदिया जेठ मास उफनाई ।
हम का जननी रेते बइठल, नाव के लगी खेवाई ॥
जो तनिको जनतीं उफनाइल, आगि लगी तS सूखी ।
देइ खेवाई डूबि ना मुअतीं, घरहीं जाइत लुकाई ॥

जेठ मास ले बइठल पियऊ, आगि में आगि लगवले ।
दहकत सेज मनहि ना भावे, झूठहि हिय तरसवले ।
आस आषाढ़ के पूरल नाहीं, धरती रहलि पियासे ।
सावन सेज उदास पराये, हियरा पिय दहकवले ॥

रैन चैन ना बैन उदासी, झाँकत नैन पियासे ।
मधुबन मोर मगन मोरनि पर, देखत हिया हकासे ॥
रे बदरा तर गतर किये मोर, हकसल हिय डहकाये ।
जा परदेश में बोल पिया से, तिरिया तोर पियासे ॥

◆ ◆ ◆

प्यार के मोल

रउरा खुदे हईं प्यार के रस कलश
प्यार रउरे हईं, प्यार रउरे से बा ।
हम त रउरे से पवनी, बता दीं तबो ।
प्यार केतना भेजा दीं, कमी केतना बा ॥

प्यार लिहल से लेके उड़ल राह से ।
प्यार बैरी लखेदत दुआरे गइल ।
अब बताईं कहाँ प्यार के मोल बा ।
मीठ बोलल उहे हति करेजा गइल ।

मीठ कहि के जे बेंचल, खटे बिक गइल ।
मीठ परल रहल ना बिकाइल कबो ।
बैरी खोजलसि सदा हमके दुर्दिन में ही ।
प्यार खोजत बीतल नाही आइल कबो ॥

प्यार होला कबो रउआ पानी तरे ।
नीच पाई जमीं बहि के जइबे करी ।
डेहरी कोठिला में रखला से का फायदा,
प्यार मिली जहाँ प्यार अइबे करी ।

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
भठहीं बुजुर्ग,कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

पात्र परिचय

1।	किसुन	नायक
2।	संजय	किसुन के बेटा
3।	संगीता	संजय के माई
4।	राजेस	खलनायक
5।	सरपंच	गाँव के सरपंच
6।	रमेसर	किसुन के संघतिया
7।	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8।	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9।	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10।	अंजली	टेसलाल के बेटी
11।	परपंच	गावँ के कुटिल
12।	कमीना	,, ,,
13।	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14।	दरोगा	दरोगा
15।	जमुना	राजेस के बाबूजी
16।	बिमला	राजेस के मेहरारू
17।	पारबती	राजेस के माई
18.	अन्य	अन्य।

विद्या शंकर विद्यार्थी

दृश्य चउथा

स्थान - संजय के डेरा समय - दिन

निरदेस - (संजय बइठल बाड़न। अँजली चाय लेके आवताड़ी।)

अँजली - ल चाय पीअ।

संजय - ले जा तूँ आपन चाय, तोहार हाथ के हम चाय ना पीअब।

अँजली - काहे? दूध कम बा कि चीनी बेसी परल बा, बतइबऽ कुछ?

संजय - तोहरा से हमरा नफरत हो गइल बा।

अँजली - नफरत आ हमरा से?

संजय - हँ हँ तोहरा से। तोहरा से हमरा नफरत हो गइल बा। ('हँ हँ तोहरा से। तोहरा से हमरा नफरत हो गइल बा ' ई प्रति ध्वनि दु तीन बार गूँजे लागता।)

अँजली - (दुखी स्वर में) दुरभाग के लोर पोछे के भइल बा हमरा।अइसन जन करऽ, बात मानऽ, ल चाय पी ल।
संजय - हम कहऽतानी न कि तोहरा हाथ के चाय ना पीअब।
अँजली - त का पीअब, सराब?
संजय - हँ हँ, पहीले त खालि सराबे पीअत रहीं, अब सराबो पिअब आ भाँगो खाइब, हम। केहू ना रोक सकेला हमरा के एह कुल्हि से। जे तूँ हमरा के ई कुल्हि छोड़े खातिर उबिअइले बाड़ु आ हमरा जीवन के एह रंग में भंग डालल चाहऽताड़ु त हम मरद जात डूबा दिहब तोहरा के तोहरे लोर में। हमरा अइसन मरद कठोर हो जालन त कुछो कर देलन, अँजली, कुछो।
अँजली - संजय, मरद जात होके मेहरारू जात पर रोब जन देखावऽ। मेहरारू जात खुसी के सनसार कायम रहे खातिर कवनो हद तक जा सकेली, आ लगा सकेली लगाम।
संजय - (गुस्सा में) अँजली, तोहार सेनुर के सौगंध लगा के कहऽतानी कि हम आपन उपेक्षा अपने से ना सह सकब। नइखु जानत त एतना जान ल कि तोहरा के कर दिहब बदचलन नारी के रूप में हरहोर। फिर कहीं के ना रह जइबु तूँ। रह जइबु त रह जइबु बस एगो उपेक्षित नारी। मरद जात के तिरसकिरित कइल बस्तु मात्र। मरद जात कठोर हो जालन त कुछो कर देलन, अँजली। समझा देतानी तोहरा के बेसी बहके के कोसिस जन करऽ।
अँजली - बहके के कोसीस आ हम?
संजय - हँ हँ, बहके के कोसिस तू करऽताड़ु। एतना जान ल कि जे हमरा से बहके के कोसिस करेला ऊ हमरा नजरि से गिर जाला।
अँजलीं - अहिल्या उपेछित नारी रही तबो जमाना जानत रहे कि उनुका के मरद जाति के कोप मिलल बा।
संजय - पत्थल त ना बनबु बाकि एतना जान ल कि ओहू से बेसी उपेछित हो जइबु। हमरा ठोकरइले कहीं ठौर ना मिली तोहरा।
अँजली - राजेस के कहे से?
संजय - अँजली, राजेस हमार जिगरी संघतिया हवन। तू उन्हका खिलाफ कुछ कहबु त हम बरदास ना कर सकब। एतना जान ल।
अँजलीं - खूब निमन तरे जान गइल हईं हम कि तोहार राजेस तोहरा के कब, कहाँ आ कइसे घात करेलन। आ उहो घात, तोहरा के अपना बिस्वास में लेके।
संजय - (गरजत) हम पुछऽतानी भोरे भोर पगलइबु तूँ।
अँजली - लोढ़ा दिहीं, मार के कपार फोरे खातिर। अब तोहरा हमार इहे गत नू करे के बाकी रह गइल बा। बाप आ महतारी के तेआग दिहलऽ रजेस के कहे से। हमरो के तेआग द। सुता द रेल के पटरी पर। कट जाइब। लोग जान जाई कि अँजली अपने आप जान दे दिहली।
संजय - जेकरा चलते जेकरा ना हँसे के सेहू हँसेला। बिकलांग मेहरारू तू का बतिअइबु हमरा से।
अँजलीं - सुनींला मेहरारू के ताना मेहरारू देली, मरद जात कहिया से देबे लागल?
संजय - हमार मुँह खोलवावत बाड़ु, त खोलऽतानी।
अँजली - त सराब पीके कतना मरद मेहरारू के लुगो खोल देलन सेहू से त हमरा बचे के बाटे। तूँ बाबूजी के एक लोटा पानी ना दिहलऽ सराबे न पीके, नौ महिना गरभ में ढोवे ओली महतारी के आदर ना देलऽ सराबे न पीके, बिना तिलक लिहले इनसान में लिहला के बेबुनियाद आरोप लगा देलऽ सराबे न पीके, आ सरपँच चाचा के कवनो कदर ना कइलऽ सराबे न पीके। केकरा सीखवला में आके, रजेस के न, एगो पाँव पूजे जोग इनसान आँसू पोछत चल गइल। एह घर से देबी नियन महतारी चल गइली। का तोहरा पर उनुकर कवनो अधिकार ना रहे?
संजय - ना रहे। ऊ हमार बाप ना लुटेरा रहे।
अँजलीं - अजस देल ना जाला त ले लो ना जाला।
संजय - हम ना जानत रहीं कि ई बिकलांग मेहरारू साढ़ीन निकली। सिघ लगायी हमरा में।
अँजली - (रोस में) संजय, मेहरारून के झोंटा धर के मारे ओला अधिकार तोहरे नियन मरद रखले बा। ना सुनले रहऽ त सुन ल। (संजय, मेहरारून के झोंटा धर के मारे ओला अधिकार तोहरे नियन मरद रखले बा। ना सुनले रहऽ त सुन ल।' - प्रति ध्वनि दु तीन बार दिहल जाई। (गार्ड संगे म0 प्र0 आवऽताड़न)

म0 प्र0 - अँजली, ई सब का हो रहल बा बेटा?

अँजली - (आँसू पोछत) बेटी जात के बेटा मत कहीं सर, मत कहीं। जदि हम बेटा रहतीं त ई हमार दुरदसा ना होइत, ना कहऽइतीं सर कि हम बिकलांग हईं, आ हम नारी मात्र भोग के बस्तु हईं सर। धरती फटती त समा जइतीं बाकि ई कुल्हि ना सुनतीं, सर, ना सुनतीं। (लोर पोछऽताड़ी)

म0 प्र0 - संजय, तू हमरो भरोसा तूर दिहलऽ?

संजय - स ॥ सर।

म0 प्र0 - मत बोलऽ सर, तोहरा मुँह से सराब पीअला के दुरगंध आवता। तोहरा जाने के चाहीं कि तोहार नौकरी एगो बिकालंग अवरत के जिनिगी सँवारे खातिर ईनाम में मिलल बउए। आ तूँ बाड़ऽ कि ओकरा के फजिहत करे में लागल बाड़ऽ। हम जानल चाहत हईं कि आखिर ई घर बिगाड़त के बाटे? के फैलावता बिभेद? बोलबऽ कुछ? (संजय चुप बाड़न)

म0 प्र0 - चुप बाड़ऽ, घर बिगड़ता मौन सधले बाड़ऽ, बोलत काहे नइखऽ?

अँजली - हम सांच बतायीं।

म0 प्र0 - बताव बेटी संकोचऽ जन खुल के बताव।

अँजली - राउर राजेस।

म0 प्र0 - बस कर बेटी बस कर, सब समझ गइलीं हम। संजय, तोहरा कुछ इयाद हव कि जहिया हम तोहार जोआइनिग लिहले रहीं तहिया हम का कहले रहीं?

संजय - ढेर दिन के बात हो गइल। इयाद नइखे साहेब।

म0 प्र0 - आ तोहरा अँजली?

अँजली - केहू के रोटी पर केहू के डाह ना चली। रउरा इहे कहले रहीं, सर।

संजय - मान गइलीं नारी जाति के असमिरति गहन होला। हम अजुओ भरोसा देतानी बेटी कि तोहरा रोटी पर केहू के डाह ना चली।

अँजली - आ ओह देवता नियन इनसान के का होई, सर।

म0 प्र0 - देवता नियन इनसान? हम समझलीं ना। ओह इनसान के नाम का ह, जेकर घोर उपेछा भइल बाटे।

अँजलीं - किसुन।

म0 प्र0 - उहे किसुन, तोहरा नियन नारी के उद्धारक।

अँजली - जी सर।

म0 प्र0 - त का भइल बाटे उनुका संगे?

अँजली - घोर उपेछा, रउरे चाहब त उनुकर चरन के धूर हमरा सौभाग में भेंटायी।

म0 प्र0 - आ संजय कब ना चहिहें?

अँजली - इहे चहितन त ऊ इनसान के अपमान होइत।

म0 प्र0 - ओह इनसान के अपमान के जर में रजेस के कम हाथ ना होई। का संजय, हमार अंदाज कुछ सही बा?

संजय - (सिर नेवा के) कुछ ना पूरा सही बा साहेब। हमार गलती छमा करीं साहेब।

म0 प्र0 - तोहार गलती पहिले तोहार बाबूजी छमा करिहे, तब हम करब। का जनलऽ?

संजय - उन्हका से हमरा बहुत डर लागता, साहेब।

म0 प्र0 - फिर उहे बात।

संजय - ठीक बा साहेब, हम अपना गलती के छमा मांगब।

म0 पं0 - तोहार आधा वेतन अब उन्हका खाता में जाई। कवनो तकलीफ? (ऊ चुप बाड़न)

अँजली - सर, इन्हिका जब आपन आधा वेतन में दिक्कत बुझाता त उनुका सेवा में जतना पइसा लागी सब हमार लागी। आ हम सेवा करके रिन से उरिन होखब। एह मौका के हमरा हिस्सा में दे दिहीं, सर। राउर निहोरा बउए।

म0 प्र0 - ठीक बा, जब तोहार ललसा बा त तोहरा से तोहार सास ससुर के सेवा के अधिकार केहू ना छिनी। चलऽ संजय, तू अपना बाबूजी आ माई से अपना गलती के छमा मांगे चलऽ।

धीरे धीरे परदा गिरता। (शेष अगिला अंक में)

अजब हाल बा

रसगुल्ला खइला जमाना हो गइल
महंगा साबूदाना मखाना हो गइल।

मेहरारु के माथे एगो लइको भइल
त ऊहो ससुरा ऐंचा ताना हो गइल।

पियक्कड़ी के सवख अतना बा कि
दवा के दोकान मयखाना हो गइल।

अगहन तक बबवा माला फेरत रहे
फागुन से बबवा मौलाना हो गइल।

बिकास त देस में अतना भइल कि
घरे घरे एकऽगो पयखाना हो गइल।

◆ ◆ ◆

हरेश्वर राय

अर्चना के दोहा

लौका लौकत देख के, जे डरिहें नादान।
गरजे ऊ बरसे नहीं, फकरा बरी पुरान ॥१॥

सोच समझ के सभ करीं, अबकी ई मतदान।
बोली गोली फेर मा, बनिहा ना नादान ॥२॥

उठा पटक के चाल मा, नेता बने महान।
माथे ओ के पाग बा, जनता ते नादान ॥३॥

लालच में मारल गइल, बेटा भाई बाप।
जेल पिसाता चाक बा, भोग रहल बा पाप ॥४॥

लोभ मोह सब नास के, पहर बनावे घात।
लालच में आके फँसे, तेकर का औकात ॥५॥

खोलत खोलत थाकिला, मनहि इहो रे गाँठ।
गिरह बंद जब हित सधे, होइ केइ से साँठ ॥६

बोझा बढ़ल किसान पे, सुनते नइखे कोइ।
लाठी डंडा मारके, समाधान का होइ ॥७॥

राज पाट के लोभ मा, आन्हर बनि गंधार।
मामा कारण मिटि रहल, धन जन नींक विचार ॥९ ।

◆ ◆ ◆

अर्चना झा
देहरादून

जब आँखि खुले तबे बिहान

-मीना धर

बगइचा के बीच से निकलल पगडंडी बगइचा के दू हिस्सा में बाँट दिहले रहे। पगडंडी की दूनो ओर हरियाली पसरल रहे। कहीं-कहीं बड़े-बड़े झुरमुट त कहीं हरियर मुलायम दूब। झहर-झहर बयारि बहत रहे। दीनानाथ आपन डगर ध लिहले रहलें। गाय-गोरू चरे खातिर खोल दिहल गइल रहे। एक ओर बगइचा के ओ पार शिव मंदिर के घंटा रहि-रहि के बाजत रहे आ दुसरी ओर प्राइमरी स्कूल में लइकन के आवाजाही शुरू हो गइल रहे। केदार अपने कान्हें पर हर धइले बैलन के हाँकत ओही पगडंडी से अपनी खेते की ओर बढ़त जात रहलें। सुगनी डलिया अपनी माथे पर धइले केदार के पाछे-पाछे चलत रहे। दूनू बैल कब्बो मूड़ी घुमा के झुरमुट नोचें त कब्बो नरम दूबि चरे लागें। जवना के मारे बेर-बेर केदार के रुके के पड़े आ पीछे सुगनी के। बैल त बैल होलें। केदार केतनो हुर्र हट्ट करें तब्बो ऊ एहर-ओहर मुँह मारल ना छोड़ें।

"मारीं न हे! नाद भर खा के चलल ह लोग बाकिर अबहिन पेट खालिए बा ए लोग के।" पीछे से सुगनी खिसियाइलि। "हरियरी चर रहें, चरे दे।" केदार कहलें।

"केतना अबेर हो गइल! ई नइखे देखात? हऊ देखीं त! लोग अपनी खेते में पहुँचि के जोतल शुरू क देले बा आ हमनींके अबहिन खेतो ले ना पहुँचनीं जा।"

"केहू की मुँहे से कवर ना छीने के चाहीं, जनले कि ना? खा लेबे दे एकनी के।" केदार सुगनी के घुड़क दिहलें।

सुगनी रास्ता छोड़ि के एक ओर ठाड़ हो गइल। काहें कि बीच रास्ता में रुकला से ओकरी पाछे आवे वाला लोग के रुके के पड़त रहे आ ई सुगनी के नींक ना लागत रहे।

"चला चला।" कहि के केदार बैलन के धीरे से थपथपा दिहलें। जइसे ऊ केदार के बाति बूझि के खाइल छोड़ि के दूनू पगडंडी से उतर के अपनी खेत की ओर बढ़ि गइलेंसन। खेते में पहुँचि के केदार हर नाधि दिहलें आ खूब जाँच-परखि के बैलन के पुट्ठा ठोक दिहलें। बैल आगे बढ़लें त हर से धरती के सीना चिराए लागल। अब सुगनी केदार के पाछे-पाछे बीया गिरावत चले लागलि। चारू ओर खेतन में हल चलत रहे। बैलन के गले में बान्हल घंटी की आवाज से वातावरण संगीतमय हो गइल रहे। ओही में सुरुज देव आँखि गुँड़ेरत रहलें बाकिर केहू के कवनों असर ना रहे। सभे अपनी काम में लागल रहे। खेत में बीया बो के नवका फसल खातिर सभे आपन-आपन पसीना बहावत रहे।

धीरे-धीरे संझा माई धरती पर उतरे लगली। सुरुज देव अस्ताचल गामी हो के रातिभर के बिछोहे खातिर धरती माई के निहारत रहलें। दिनभर के जतरा से थकल हारल आपन किरन समेट के धरती माई से विदा माँगते रहलन कि संझा माई आपन अँचरा पसार दिहली। जैसे सुरुज देव से कहत होखें कि ढेर मति निहारा उनके। हमार अँचरा ओढ़ि के तनी अपनी देहि के आराम दे ला, काहें से बिहान फेरु से आवे के बा धरती के उजियार करे खातिर। जैसे संझा माई के बाति सुन लिहलें मार्तंड आ धीरे-धीरे ओ पार उतरे लगलें।

सुबहिये के चरे खातिर निकलल गाय-गोरू गाँवे की ओर आ चिरई चुरुगन अपनी बगइचा की ओर उन्मुख रहे। खेत बोआ के हेंगा लाग गइल रहे। केदार बैल रोकि दिहलें। हर खोलि के अपनी कान्हे धइलें आ बैल हाँकत गाँव की ओर चल दिहलें। पाछे-पाछे सुगनी। जैसे देह की साथे परछाई। केदार दुआर पर पहुँचि के बैलन के खूँटे से बान्हि के नाँदे में छाँटी-पानी लगा दिहलें। दिनभर खटले के बाद दूनू बैल नाक डुबा-डुबा के खाए लगलेंसन। अब केदार इनार से पानी भरि-भरि खूब नहइलन। दिनभर के धूर-माटी देहि से हटल तब जा के उनकी जीउ के कल पड़ल। केदार ओसारे से खटिया निकाल के दुआरे बिछा

के बइठि गइलें। एतने में सुगनी लोटाभर पानी की साथे मीठा के ढेली लिहले आ गइल। पानी पी के केदार लोटा सुगनी के थमा दिहलें आ गोड़ पसार के खटिया पर ओठंग गइलें। उनकी देहि में बयारि लागल त बुझाइल कि सब बत्था निकलि गइल।

सुगनियो नहा-धो के काम में जुटि गइल। खाना बनावे के सब तैयारी क के सुगनी बहरा निकलि आइल। घूरा लगे पुआर के ढेर रहे। ओही से मुट्ठी भर पुआर खींचि के ओकरा के लपेट के कटोरीनुमा बना लिहलस सुगनी आ चारू ओर देखे लगल। दहिनी ओर सुखलाल की घर से धुआँ उठत देखि के उनकी घरे की ओर चल दिहलस। दोगहा लाँघि के जैसे अंगना में गोड़ धइलस त सुखलाल ब रोटी पकावत देखा गइली। सुगनी के देखि के उहो मुस्किया दिहली।

"आवा हो दिलीपा के माई! केतना दिन बाद अइलू हो !" रोटी बेलत कहली सुखलाल ब। "आगि खातिर अइनी हँ। तनि दे दीं त हमहूँ चूल्हि बारीं। बड़ी देर हो गइल आजु।"

"आइ हो दादा! काहें एतना जल्दियाइल बाड़ू हो? बइठा तनी साँस ले ला। अगिया कवन भागल जाता!" सुखलाल ब तवा पर रोटी फुलवत कहली।

"कुबेर भइल हे ! फेरू कब्बो बइठब। तनी जल्दी से अगिया निकाल दीं।" सुगनी के जल्दी रहे। काहें से कि ऊ जानेले कि सुखलाल ब टोला भर के खबर राखेली। एक बेर शुरू हो जइहें त सुनते सुनत राति हो जाई बाकिर उनके बाति ना ख़तम होई।

"कुच्छु सुनलू ह! कोसिलवा के पेटे लइका बा।" रोटी फुला के तवा पर गोल नाचा दिहले रहली सुखलाल ब। सुनि के सुगनी के आँखि बहरा निकलि आइल रहे।

"रउरो अनेरे बतिआवेनीं। ले आईं जल्दी से अगिया दीं हमके।"

"नइखू मानत त मुखलाल ब से पूछि ल कि हम साँच बोलतानीं कि झूठ।"

"ए दादा ! गदबेर भइल आ रउरे कोसिलवा के पेटे के पड़ल बा। हमके एतने काम बा का कि सबसे पुरवासाक करत फिरीं?"

"कवनो बाति ना। जहिया लइका धरती गिरी तहिया त मनबू न!" कहि के चूल्ही की मुँहे से एगो अधजल गोंइठा के टुकड़ा निकाल के दे दिहली सुखलाल ब। सुगनी जल्दी से गोंइठा पुअरा पर ध के चले लागलि।

"हे मेहरारू! एकदम बकलोले हऊ का? पुअरवा अगिया ध नाहीं ली?" "एतना जल्दी नाहीं धरी।" आगि ले के सुगनी उल्टे गोड़ लवटि आइल।

"हुँह! सबके ढिढ़-पेट झाँकत रहेले ई मेहरारू। दिलिपा चार-पाँच बरिस के कोरा में रहे तब कोसिलवा उतरल रहे। लइका खातिर एने-ओने मूड़ी पटकत-पटकत हारि गइल त अपनी जेठान के बेटी ले के पाल-पोस लिहलस। उहो बेटी सेयान भइल। अब ऊ पेट ले के घूमी?"

सुगनी मने मन सोचत आपन चौकठ लांघि के भीतर जाए लागल। "ए सुगनी!" केदार अपनी कुरता के जेब टोवत बोलवलें। आवाज सुन के सुगनी ठिठक गइल।

"अब ओहीजा ठाड़ रहबे का?"

सुगनी बूझि गइल कि केदार के बीड़ी के ताव चढ़ल बा। ऊ आ के आगी केदार की आगे क दिहलस। केदार आगी से बीड़ी जला के खींचे लगलें।

"ई रोज-रोज करेजा फुँकाई त देहिया के कवन गति होई? ई कब्बो सोचल जाला?" केदार के धुआँ उगलत देखि के सुगनी के देहि जरि गइल।

"ते जो न भीतर! देख आगी पुअरा ध लिहले बा।" केदार सुगनी के अपनी लगे से हटवला की गरज से कहलें। बाकिर पुआर सहियो में आगी पकड़ लिहले रहे। सुगनी कुच्छु ना बोललस। जानत रहे की बोलले से कवनो फायदा नइखे। अंगना में आ के चूल्हि में पुअरा पतई जोड़ि के आगि ज़रा के कड़ाही चढ़ा दिहलस। बाकिर ओकरियो मन में अब कोसिलवे घूमत रहे।

"का हो केदार! एहिजा बइठि के बीड़ी पीयल जाता बाकिर स्कूले पर अइला के समय नइखे?

कहत-कहत हारि गइनी हम लेकिन तोहन लोगन के ऊपर कवनो असरे नाहीं बा। काने तेल डालि के बइठल बाड़ा जा सब लोग।" केदार चिहुकि के देखलन। मास्टर साहब सायकिल रोक के ठाड़ रहलें आ उनके बीड़ी पीयत देखि के रिसियात रहलें।

"राम-राम मास्टर साहब! अब ए उमिर में पटरी ले के स्कूल गइला पर लोग का कही? इहो बतिया सोचल जाउ।" केदार बीड़ी वाला हाथ पीछे क के खटिया से उठि के ठाड़ हो गइल रहलें।

"जब ई बतिया कहेनीं तब तोहा सब के इहे जवाब होला। ए मरदे !!!! बीड़ी पियले में लाज लागे के चाहीं, पढ़े गइला में नाहीं। बुझला?" कहि के मास्टर साहब आपन सायकिल आगे बढ़ा दिहलें आ केदार बीड़ी तोड़ के फिर से खटिया पर बइठि गइलें।

गदबेरी के बेर रहे। अबले दीया-बाती ना कइले रहे सुगनी। हालि दे उठि के देवकुरी में दीया बारि के गोड़ लागि लिहलस। ढेबरी की बाती से फूल झारि के चूल्हि से जरा के एगो दोगहा में चउकठ पर आ एगो चूल्ही लगे दियरखा पर ध दिहलस। कड़ाही गरम हो के महकत रहे। दू बून तेल चुआ के झट दे तरकारी छौंक के दूसरी ओर तवा चढ़ा दिहलस सुगनी।

"अबहिन केतना देर लागी रे।" अंगना में आ के केदार खड़ा हो गइलें।

"बस अब्बे हो जाता। तबले पीढ़ा खींचि के बइठीं रउरा।" कलछुल से एगो आलू के कतरी निकाल के दबा के देखलस सुगनी। आलू भस्स दे फूटि गइल। केदार लोटा में पानी ले के पीढ़ा पर बइठि गइलें। तबले रोटी तरकारी परोसि के थरिया सरका दिहलस सुगनी। केदार थरिया खींच के खाइल शुरू क दिहलें।

"कुच्छु सुननी हँ रउआ?"

"का ?" रोटी के कौर तरकारी में बोरत पुछ्लें केदार।

"कोसिलवा के कुच्छु होखे के बा।" केदार कुछ ना बोललें।

"ए सुननी हँ हमार बतिया?" सुगनी फेरू से कहलस बाकिर चुपचाप खाना खा के उठि गइलें।

"त एम्मे कवन बड़ बाति हो गइल? ई त ख़ुशी के बाति ह।" मोरी पर हाथ धोवत कहलें केदार आ बहरा निकल गइलें।

सुगनी सोचे लागलि, ई त सही में ख़ुशी के बाति ह बाकिर सुखलाल ब के बाति के कवनो भरोसा ना ह। झूठ-फूर कुच्छु बोलेले ऊ मेहरारू बाकिर भगवान जी करें ओकर ई बाति सही होखे। भले ए उमिरी में होखे बाकिर कोसिलवा के कोखि त जागे। सोचते सोचत सुगनी जल्दी-जल्दी काम समेटे लागलि। दीया ठंडा क के केदार की खटिया लगे लोटा भर पानी ध के बइठि गइल सुगनी।

"केतना दिन भइल बाबू के कवनो चिट्ठी-पतरी ना आइल। कहि के सुगनी जवाब अगोरे लागलि। जब कवनो जवाब ना मिलल त ऊ मरदे की ओर देखलस। केदार सुति गइल रहलें।

उहो जा के आपन बिछौना बिछावे लागल। दिलिपा ओकर बेटा ह। ऊ अपनी मेहरारू की साथे मेहनत-मजदूरी क के रुपया-पइसा कमाए खातिर गाँव छोड़ि के शहर निकल गइल रहे। दूनू मर्द-मेहरारू की मेहनत-मजूरी से जवन कमाई होखे, ओही में से दिलिपा कुच्छु रुपया घरे भेज देला। ओही रुपया से खाद, पानी, बीया सब कुछ होला। पूरा दिन खटे के बाद जब सुगनी खटिया पर पीठ धरेले तब ओकरा बेटा पतोहि के याद आवे लागेला आ ओहीकुल के याद करत-करत ऊ सुति जाले। चुचुहिया के बोली सुनि के सुगनी हउहा के जागि गइल। आजु ढेर देर ऊ सुतल रहि गइल।

बगइचा में चिरइन के चहचह एहिजा ले सुनात रहे। बिछौना सरिया के ध दिहलस आ खटिया उठा के खड़ा क के बगइचा की ओर निकलि गइल। लौटल त केदारो उठि गइल रहलें। दूनू परानी जल्दी जल्दी भीतर-बाहर काम निपटावे लागल लोग। आजु दुसरका खेते में बिया डाले जाए के रहे।

सब करत धरत अँजोर हो गइल रहे। आकाश में सूरज देवता चढ़े लगलें। खेते पर जाए के तइयारी हो गइल। केदार जइसे बैल खोले लगलें वइसे उनके काने आवाज आइल। केदार घूमि के देखलन। सुगनी ताला लगावत रहे आ एगो साधूबाबा ओसे कुच्छु खाए के मांगत रहलें।

"आगे बढ़ीं बाबा! हमके देर होता। जा के अउरी कवनो दुआर देखीं।" कहि के सुगनी चाबी अपनी अँचरा में बान्हे लागलि।

"ए बाबा ! तनी रूकीं ।" बाबा के जात देखि के केदार उनके आवाज दे के बोलवलन।

"गठरी खोलु आ बाबा के खाए दे।" सुगनी के डपटलें केदार।

"सुगनी गठरी खोल के दूगो रोटी आ मीठा के ढेली बाबा की अँजुरी में ध दिहलस। बाबा बड़ी प्रेम से खइलन आ पानी पी के आशीष देत चलि गइलन।

"दूगो रोटी दिहला में तोर कुच्छु घटि जात रहल ह का?" केदार रिसिआत रहलें।

"हमार कुच्छु ना घटत रहल ह बाकिर दिन कपारे पर चढ़े लागल, ई नइखे देखात रउआ।" सुगनियो का रीसि चढ़ल रहे।

"तनी देरिए न होई बाकिर दुआरे पर से केहू भुखाइल चल जा त केतना लाजि के बाति बा।" इहे कुल गिरिहस्थ के धरम ह?" केदार के बात सुनि के सुगनी कुच्छु ना बोललस। फेरू से आपन डलिया सहेजे लागल। केदार फेरू से हर उठावे लगलें कि अबकी उनकी पाछे से आवाज आइल, "तार ॥!" केदार चिहुकि के देखे लगलें कि केकरा घरे तार आइल। बाकिर सायकिल पर बैग टंगले डाक बाबू उनहीं की ओर आवत रहलें। तार के नाव

सुनि के सुगनी के करेजा धक से हो गइल रहे। कुच्छु दिन पहिलवे त टोला में मोहना के मरला के तार आइल रहे आ उत्तर टोला में सत्तन बाबा का घरे उनकी दमादे के मुअला के ।।।। सुगनी के परान कंठ में अटकि गइल। ऊ मने मन देबी-देवता मनावे लागलि।

"हे बरम बाबा! हे डीह बाबा! हे सातो बहिनी! रछा करीं सभे।" सुगनी मनावते रहे कि डाकिया साहब केदार लगे रुकि गइलें।

"तोहार तार आइल बा।"

"ए महाराज! हमार ना होई। पता ठीक से पढ़ीं।" केदार बहँटियवलें।

"केदार तोहरे नाव ह न! कि दक्खिन टोला में अउरो केहू केदार बा?" डाकिया साहब तनी खिसिअइलें। सुनि के केदार ठकुआ गइलें। बाकिर अंगूठा लगा के तार ले लिहलें। तार लिहले केदार के देहि झुरा गइल रहे। बेटा के ले के बाउर-बाउर बाति मन में आवत रहे।

ओहर सुगनी केदार के तार लेत देखि लिहलस। ओकरो देंहि काँपि गइल। आँखी के आगे अन्हार हो गइल। डलिया हाथे से छूटि गइल। ओहिजा धरती पर बइठि के छाती पीटे लागलि।

"अरे हमार बाबू रे ! हमके छोड़ि के कहवाँ गइले रे ! अब हम कइसे जियब हो दादा ! आरे हमरी आँखी के पुतरी रे! हमके केकरी सहारे क गइले रे हमार करेजवा ! करेजा चीरि के कहवाँ गइले रे हमार बाबू!" सुगनी के रोवल-पीटल सुनि के डाक बाबू केदार के मुँह देखे लगलें| केदार साइनपात के तार लिहले अइसे ठाड़ रहलें जइसे साँप सुंघि लिहले होखे। ओहर सुगनी के प्रलाप सुनि के टोला के लोग अपनी-अपनी घर से निकलि आइल। सभे ई जानल चाहत रहे कि का भइल बाकिर केहू कुच्छु बुझि ना पावत रहे। मेहरारू लोग जा के सुगनी के चुप करावत-करावत अपनो आँसू पोंछे लागल लोग।

"ई का भइल ए केदार?" डाक बाबू अचम्भा से पुछ्लें। अबले सुगनी के प्रलाप सुनि के टोला के लोग अपनी-अपनी घर से निकलि आइल रहे। अब त केदारो के धीरज जवाब दे गइल। उहो अंगोछा से मुँह ढाँप के रोवे लगलें।

"ए मरदे ! एकदम बउकड़ हउवा का? तार में का लिखल बा ई जनले बिना आपन दिमाग चलावे लगला तोहा लोग। पढ़वा त लिहले होता!" डाक बाबू के बाति सुनि के केदार तार उनकी ओर बढ़ा दिहलें।"जानताड़ा कि का लिखल बा एहिमें?" ऊ तार पढ़ि के कहलें।

केदार आँसू पोंछत ना में मूड़ी हिला दिहलें।

"अरे दिलीप के बेटा भइल बा। जल्दी से ई खबर पहुँचि जाउ एहिसे ऊ तार भेजले बा। बुझला कि फेरू से बताईं?" कहि के केदार की हाथे तार थमा के डाक बाबू आगे बढ़ि गइलन। सुनते केदार की देहि में ख़ुशी के लहर दउड़ि गइल। ऊ भागि के सुगनी लगे पहुँचि गइलन।

"ए सुगनी! होश में आउ रे! दिलिपा के बेटा भइल बा। हमनीं के ईआ-बाबा बनि गइनीं रे!" केदार के ख़ुशी के ठेकानि ना रहे। जइसे ई बाति सुगनी के काने पड़ल ऊ आपन अँचरा सहेजत केदार की ओर देखे लागलि।

"का कहनीं हँ? फेरू से एक बेर कहीं त!" सुगनी के विश्वास ना होत रहे केदार की बाति पर।

ओही समय मास्टर साहब ओने से जात रहलें। केदार की दुआरी भीड़ देखि के रुकि गइलें आ मामला का ह बुझे के प्रयास करे लगलें। केहू कुच्छु त केहू कुच्छु बतावत रहे। ऊ भीड़ फ़रिआवत केदार लगे पहुँचि के ठाड़ हो गइलें। केदारो उनके देखि लिहलें|

"हमार विस्वास ना होखे त मास्टर साहेब से पूछि ले।" केदार सुगनी के मन के बाति बूझि के तार मास्टर साहब के थमा दिहलें। मास्टर साहब पढ़ि के सब बाति समझ गइलें|

"हँ हो। तार से खुशखबरी आइल बा। मुँह मीठ करावल जाला कि बिना जनले बुझले डँहकल जाला?" भीड़ में

चित्रः www.gaonconnection.com से साभार

खुसुर फुसुर होखे लागल। मेहरारू लोग लुग्गा मुँह पर लगा के मुस्किआए लगली। मर्द लोग धीरे-धीरे जाए लागल। सुगनी छाती पीटि के बेहाल हो गइल रहे। धरती पकड़ के उठे के प्रयास में ओहिजा ढिमिला गइल। एकदम से केदार के जिउ डेरा गइल। ऊ जल्दी से सुगनी के उठा के खटिया पर सुता दिहलन आ ओकर हथेली मले लगलें। सुगनी लस्त-पस्त पड़ल रहे। केदार मास्टर साहेब की ओर देखे लगलें। घबड़ा जनि हम देखतानीं, शायद डॉक्टर साहब बइठल होखें। मास्टर साहब आपन सायकिल गाँव के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र की ओर भगा दिहलें। अब केदार के परान सूखत रहे कि ख़ुशी के खबर कहीं मातम में न बदल जाउ। सुखलाल ब बेना हाँकत रहली। बाकी मेहरारू लोग में सन्नाटा पसरल रहे। तब्बे मास्टर साहब के साथे

डाक्टर साहब के आवत देखि के ठाड़ हो गइलें केदार। डाक्टर साहब सुगनी के देखे लगलें। "कमजोरी बा, अउरी कवनो चिंता के बाति नइखे। कुच्छु दवाई देतानीं, समय पर दे दीहा आ एगो टानिक के शीशी लिखि देतानीं। बजारे से किन ले अइहा। सुनि के केदार की जान में जान आइल। डाक्टर साहब चलि गइलें। धीरे-धीरे जवन भीड़ रहे उहो छँट गइल। खाली मास्टर साहेब रहि गइलें।

"अब समझ में आइल कि दुगो अक्षर ज्ञान केतना जरूरी ह? अब्बो देर नइखे भइल केदार।" मास्टर साहब कहलन।

"लोग का कही मास्टर साहब ?"

"देखिहा !!! तोहरी पाछे टोला के सब लोग पढ़े आ जाई। 'जब आँखि खुले तब्बे बिहान होला।' ई कहावत सुनले बाड़ा न !" अब बाति केदार के समझ में आइल। ऊ सुगनी के बेना करत-करत सोचत रहलें कि मास्टर साहब क बेर कहि भइनीं कि साँझ के एक घंटा सब जने इकट्ठा हो के कुच्छु पढ़ा लिखा लोग। बाकिर केहू ना सुनल। उनके बाति आजु मनले रहितीं त सुगनी के ई हालि ना भइल रहत आ लोग तमाशा देखल, ऊ अलगे।

"सुगनी ठीक हो जाउ त हम दूनू जने पढ़े आइब मास्टर साहब! रउरा अपनी रजिस्टर में हमनीं के नाम चढ़ा दीं।

"काहें? दिलिपा लगे ना जइबा का?" "हमरी ओर से दिलिपा के एगो तार भेज दीं कि ओकर माई-बाबू अब पढ़े जाता लोग। उहे मेहरारू के ले के घरे चलि आवे।" केदार आ मास्टर साहब दूनू लोग हँसि दिहल।

मास्टर साहब चैन के साँस लिहलें। उनके विश्वास रहे कि केदार आ सुगनी के 'पौढ़ शिक्षा केंद्र' में आवत देखि के दुसरो लोग आवे लागी। मास्टर साहब सायकिल उठा के चल दिहलें। उनके चेहरा पर संतोष रहे कि उनके प्रयास तनि देरिए से सही, सफल भइल।

◆ ◆ ◆

मीना धर

भइल बा

आजु ललकी किरन के बिहान भइल बा।
सखी अमहीं नगर में जुटान भइल बा।
भीड़ आरा से बा जाम छपरा से बा-
भोजपुरी के रंग आसमान भइल बा।

लोग बलिया जवनपुर से जूटल इहाँ-
काशी बगसर देवरिया सिवान भइल बा।
झाल ढ़ोलक नगारा आ तुरही बजे-
मीठ बीना तंबूरा के तान भइल बा।

गीत झूमर ग़ज़ल प्रीत सोहर गवा-
ज्ञान निर्गुन के आजु गुनगान भइल बा।
सुर कजरी के नगरी में बदरी लगल-
रंग पीत आजु सारा जहान भइल बा।

हाथ में हाथ बा साथ में साथ बा-
भोजपुरी समाज के मिलान भइल बा।
नाद गर्जन भइल तब फूहरपन हटल-
एक कोशिश से नीमन निदान भइल बा।

लोक के लाल ललिता छटा देखि के-
अमरेन्दर के मुख मुसुकान भइल बा।

◆ ◆ ◆

अमरेन्द्र कुमार सिंह
आरा, बिहार

बेटी के गोहार

मन बा हमहूँ पढ़ीं ए माई, सबका संगहीं बढ़ीं ए माई ।
घर का तहखाना का बहरी ऊँचा पर्वत चढ़ीं ए माई ॥

भइया का कान्ही पर बस्ता, हमके चूल्हि चुहानी रस्ता
भइया के तू समझ महंगा, हमरा के तू समझ सस्ता
दूनो जना अँखिए क पूतरी, हमहीं काहें गड़ीं ए माई ॥
॥ मन बा हमहूँ

भइया के तू प्यार करेलू हमरा के दुत्कारेलू
कबो कबो कोखिये का भीतरी हमरा के तू मारेलू
अइसन अत्याचार कर मत, तोहरी पइयाँ पड़ीं ए माई ॥
॥ मन बा हमहूँ

भइया से जांगर ना कम बा, माई हमरो ओतने दम बा
भइए से बस इज्जत बाढ़ी, माई तोहरा गलत वहम बा
मन में तनिक विचारि के देख, हमहीं सृष्टि गढ़ीं ए माई ॥ ॥
मन बा हमहूँ

के कोमल या के कठोर बा, एकर कहवाँ ओर छोर बा
समुझ के भी तू समुझत नइखू, केकरा चलते बहत लोर बा
जब भी आँच लगे तोहरा के, बारिश बन हम झड़ीं ए माई ॥
॥मन बा हमहूँ ॥॥ ॥

◆ ◆ ◆

कृष्ण मुरारी राय
टुटुवारी, बलिया

हिया में उतरेला

मन के घाव जब बढके भाव से गुजरेला
रोंआँ-रोंआँ में जइसे आग कवनो धनकेला
बयार घेरेला लागे फक बिन के रसरी बाँधेला
पलकन के उजजयारा में लोर जबरी ढारेला
अचके से ई मनवाँ ना जाने कइसे बबिरेला
भाव पीर के फिर हमरा हिया में उतरेला
सुगबुग खोके जाने कवन कवन बन घ मे
मन के आँख न जाने कवन नजर ढूँढ़े
चेतत-चेतत ख्याल के का-का सूझे
गुनत-गुनत अपना आप मे डुबे
जाने कवन अनुराग से एतना बहकेला
भाव पीर के फिर हमरा हिया में उतरेला

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह
कोलकाता

बाप बेटा में पटे ना

बाप बेटा में पटे ना रहें आपसे में अझुराइल,
माई बाप के पूछे केहू ना अस जमाना आइल।

मोह ना तनिको लागे बंधु बेटवा बनल कसाई।
हालचाल पूछे ना तनिको लगे कबो आई॥
प्रेम भाव के डगर आज मान मर्यादा भुलाइल॥
माई बाप के पूछे केहू ना अस जमाना आइल।

होखे कचाइन बिना विराम घर में दिन रतिया।
आपन जनमल समझे बूझे सुने नाहीं बतिया॥
ऊ रोटी देस ना बाबू जे पे रहे लोग धधाइल॥
माई बाप के पूछे केहू ना अस जमाना आइल।

समय ढेर बाउर चलता आज काल्ह ये भइया।
चार दिन में मेहरी हीत बनली बैरी मइया॥
दीपक मन भइल घवाहिल॥
माई बाप के पूछे केहू ना अस जमाना आइल।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

अपना मन के सूरुज कबो।।।

ई जिनगी भरोसा भले छोड़ि देवे,
आपन भरोसा मत टूटे दिहीं।

जिनगी के रहिया बा उबड़-खाबड़,
मेहनत के डोरिया मत छूटे दिहीं।

सरोकार चाहे केतनो तंगहाल होखे,
उठीं आ कवनो करिश्मा करीं।

उमेद के धागा पिरोअत रहीं,
कामयाबी के नया एगो चादर बुनीं।

आसमान के सूरुज भले बुझ जाव,
अपना मन के सूरुज मत बुझे दिहीं।

◆ ◆ ◆

अशोक मिश्र
प्राचार्य,
डीएवी कैमोर,
कटनी,म।प्र।

आखर-आखर टोना

शब्द-अर्थ सब व्यर्थ भइल बा, आखर-आखर टोना।
कइसे साबुत बची देश के, सुन्दर रूप सलोना॥

पाँव महावर रकत बुझाला, बिछुवा बिच्छू डंक।
पैजनियाँ जस काटे धावे, हियरा जाय अदंक॥
ऐना जइसे मुँह बिजुकावे, काजर लगे घिनौना॥कइसे

मन पर मन भर बोझ चढ़ल बा, हरदम लागे भारी।
कँवल करेजा मुँह के आवे, चले उहाँ जस आरी।
नस-नस में बा जहर घोराइल, बचल न कवनो कोना॥कइसे

सतलज, ब्यास, चेनाब के पानी, भइल जात जहरीला।
धू-धू करि केशर के क्यारी, देखलावति बा लीला।
हिसा खुलि के नाच देखावे, सुने न रोना-धोना॥कइसे

राम, कृष्ण, गौतम, गान्ही के, भूलल कथा सजी।
कवनो मन्तर काम करे ना, सगरे ईश तजीं।
पानी बचल न तनिको एम्मे, फूटल सजी भगौना॥कइसे

जइसे सब पढ़ि-पढ़ि आइल बा, शबद, रमैनी, साखी।
लिए लुआठा हाथ फूँकि घर, रोज करें सब राखी।
रोज भैरवी नाच देखाता, पिये रकत भरि दोना॥कइसे

जनमी राम, किसुन फेरु एइजा, सगरे भूत भगाई।
जादू टोना भागि पराई, फेरु केहू गीता गाई।
इहाँ नेहि के बँसुरी बाजी, अइसन सभे कहो ना॥कइसे

◆ ◆ ◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर

राजनीति के माने मतलब

तारकेश्वर राय, "तारक"
सोनहरिया, गाज़िपुर, उत्तरप्रदेश

भारत के कोना अंतरा में बसल गाँव आ ओह गाँव के पलानी मड़ई खपड़ा नरिया आ माटी के घर मे रहे वाला ऊ गँवई समाज भी बिकास के चमकत रोशनी में नहाई। मुफलिसी आपन मुलह चोरवा के गाँव से मूल समेत गदहा के सिग नियन नपाता हो जाई । खुशहाली के नावा इबारत लिखी बिकास खातिर तरसत गाँव। सुन के नींक लागता न? इहे दिवा स्वप्न देखा के त राजनीति के माहिर खिलाड़ी आज तक ले जनता के अरमान पर आपन रोटी सेंकत आ रहल बाड़े। आगे भगवान जानसु।

देखीं ना अपना देश के हालत। जइसे लइकन के कहल जाला पढ़बे ना त पास कइसे होइबे? उहे हाल राजनीति के हो रहल बा। मंत्री लोग पर अपना काम के सही समय पर शत प्रतिशत सफलता के साथ अंजाम देवे के अतिरिक्त दबाब बा, ना त कुरसी जाए के डर बा। ओइसे त एह संसार के कुछउ स्थायी ना होला, लेकिन आजकाल मंत्री पद भी आलाकमान के रहमोकरम पर ही बा उहो स्थायी नइखे। अब ऊ समय नइखे जब कहात रहे कि मिल गइल त पाँच बरिस रहबे करी।

हाल ही में देश में कई गो राज्य के मुख्यमंत्री लोग के आपन आपन सीट समय से पहिले छोड़े के मजबूर होखे के पड़ल। कवनो कवनो राज्य में त दू तीन बेर "इनके हटाव उनके बइठाव" भा "उनके हटाव इनके बइठाव" के यथार्थ में बदलल ही सक्रिय राजनीति के पहिचान होला। एकरा अलावा राजनीति में अउरी कुछ होला का? हमरा त नइखे बुझात अउरी कुछ होला। होखे के त बहुत कुछ हो सकता लेकिन होखबे त ना करे इहे त लोकतंत्र के रोना बा। सभे कुरसी क फेरा में बाझल बा। राजनीति कुरसी के इर्दगिर्द ही घूम रहल बिया।

राजनितिक दल त लोकतंत्र के जान होला, एकरा बिना लोकतंत्र के कल्पना भी नइखे कइल जा सकत। स्वस्थ लोकतंत्र खातिर स्वस्थ चरित्र वाला राजनितिक दल के होखल जरूरी होला लेकिन आज के हालात के देखल जाव त ई कुल झूठे बुझाता। आपराधिक चरित्र वाला हावी बा आज के राजनीति में। कानून तुरेवाला के ही कानून बनावे के जिम्मेदारी दियाइल बा। कुकुर के ही हड्डी अगोरे के काम सँउपल गइल बा। कुछ लोग अबो अपवाद स्वरूप बा, गिनती ढलान पर बा।

भारत में अब ऊ लोकतंत्र बचले नइखे जेकरा के दुनियाँ के सबसे बड़का लोकतंत्र होखे के तगमा दियात रहे, एहिजा के राजनीति के गिरत चरित्र ना जाने कबके ऊ लोकतंत्र के नटइ दबा के मुआ दिहलस। जवना लोकतंत्र में जनता के अधिकार पर राजनीति हावी हो जाई ओहिजा लोकतंत्र कइसे बाँची?

साँच कहीं त राजनीति से सेवा जइसन चीझ बड़ बुजुर्ग के सम्मान नियन दिन पर दिन घटते जाता, राजनीति के मतलब सत्ता में बनल रहल ही बा॥ एही से खाली सत्ता के चिन्ता जनसेवक के बेचैन कइले रहता। जवना विचारधारा के लेके राजनीतिक दल के गठन भइल ऊ कगरी फेंकाइल बा, धूल फाँक रहल बा। जे सत्ता में बा ऊ एकरा के छोड़ल नइखे चाहत ऊ एह कोशिश में लागल रहता कि हमेशा ई बनल रहो, चाहे एकरा खातिर केतनो नीचे गिरे के परो, केहू से समझौता करे के परो। राजनीति के खूबी होला एक ओर खात पियत

मलाई चाभत जमात होला त दूसरा ओर एकरा खातिर भुखाइल लोग। जी हँ, इहे सच्चाई बा आज के राजनीति के, एगो के सत्ता पक्ष कहल जाला त दूसर पाला बिपक्ष के नाँव से चिन्हाला। हवा के रुख देखि के पाला बदले के आम रिवाज बा। सेंध लगा के भी एहर से ओहर जाइल जाला।

कबो कबो अंतरात्मा के आवाज सुनि के भी एह पाला से ओह पाला तक के सफर के तय क लिहल जाला। एह प्रक्रिया में बकायदा पेशेवर तरीका से मोल भाव कइके नफा नुकसान पर गहन चितन मनन कइल जाला, कुछ लोग एह मामिला के जानकार होलन ऊ बिचौलिया के अहम भूमिका के अंजाम देलन आ डील फाइनल होला। एतना भइला के बावजूद भी भीतर के बात भीतरे रहेला, बाहर के दुनियाँ के कानों कान भनक ना पड़े। कबो अंदर के बात बहरिया जाले त बात के बतंगड़ बनि जाला आ ई तबे तक चर्चा में रहेला जब तक कवनो नावा बखेड़ा ना उठ जाव। राजनीति में धमाका कइल कवनो अनहोनी घटना ना मानल जाला लेकिन कवनो धमाका के पुरहर खुलासा कबो ना होखे ऊ अझुरइले रहि जाला। सत्ता पक्ष होखे भा बिपक्ष सन्देह के लाभ पावे के दुनो के अधिकार होला आ ऊ पइबो करेला।

आज के राजनीति आन्हर हो गइल बा आ जनता गूंग। दिन पर दिन गिरत स्तर से नीचे उतरत राजनीति के नीति सिद्धान्त के तड़का मारके आपन आपन उल्लू सीधा कइल जाला आ अपना झिझक के त्यागल जाला। रहल बात लोकतंत्र के प्रमुख कड़ी लोक के त ऊ त बस "ज्ञाता दृष्टा" के भूमिका में ही रहेलन। निरनायक कदम उठइबे ना करेलन। कबो धर्म-करम, जात-पात, क्षेत्रवाद में त कबो शराब कबाब के लोभ में अझुरा जालन। इहे कारन बा कि ई होखस चाहे ऊ, स्थिति में खास बदलाव ना आवे काहें कि हमनीं के रोजी रोजगार बिकास के नाँव पर वोटे ना दिहींना जा आ दुनो दल त बराबरे बा। कहाँ कवनो अन्तर बा?

साँचे कहल जाला चुनाव आवेला, पार्टी बदलेला, चेहरा बदलेला लेकिन चरित्र ना बदले, फितरत ना बदले ऊ पुरनके रहेला। ओइसे राजनीति से हमार कवनो सीधा सरोकार नइखे। सरोकार बस एतने बा कि जब जब चुनावी बिगुल फूँकाला तब तब हम आप एकाएक आम से खास हो जानीं जा। भाग्यविधाता के भूमिका में आ जानीं जा। जनसेवक लोग हमनीं के दुआरी सीस नवावे खातिर आतुर हो जालें। हमनीं के तनिका तन जानीं जा, एगो अजीब अधिकार बोध से भर जानीं जा। काहें कि मतदान के अधिकार बा हमनीं के लगे आ ई काम होते ओहन लोग के काम बनि जाला आ हमनीं के खास से आम हो जानीं जा। जनता के भीड़ में हेरा जानीं जा। लोकतंत्र में लोक ही मालिक होला ई बात सत्ता पवते जनसेवक भूला जालन आ उनकर रंग ढंग राजा महाराजा जइसन हो जाला। लोक एके आपन भाग आ नियति मानि के, मन मसोस के भारी मन से स्वीकार क लेलन। का करो, कवनो चारा भी त नइखे?

देश खाली चुनावी राजनीति से ना चलेला। ई चलेला सिस्टम से, जिम्मेदारी से, जबाबदेही से आ ई बनावे के परेला। आ ई दुर्भागे कहाई कि आजादी के बाद से सरकार के जोर सिस्टम बनावे पर, जिम्मेदारी लेवे पर, जबाबदेही तय करे पर रहबे ना कइल। हमेशा चुनावी राजनीति छवले रहेला आ एही में बाझल रहेले सरकार आ ओकर पूरा धियान चुनाव जीते खातिर उपाय करे पर ही रहेला, चाहें ऊ कवनो पार्टी के होखे। बिजली, पानी, टीभी, लैपटॉप, साइकिल, स्कूटी जइसन चिझन के मुफ्त देवे के वादा के साथ जीतल दल एही के बंदरबाँट में बाझल रहेलें। बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, सड़क, रेल जइसन जरूरी मुद्दा दब जाला। बिपत अइला पर कमी बुझाला, कोरोना काल मे स्वास्थ्य बेवस्था के पंगु होखे के जीवन्त उदाहरण बा जवन सभका सोझा बा। राम के देश राम भरोसे ही चल रहल बा।

मौजूदा लोकतंत्र में आम आदमी के हालत सिद्धि बाबा के मन्दिर में लटकल ऊ बड़का पित्तर के घण्टा नियन ही बा जे के हर सरकार पूरा दमखम लगा के बजावेले, चाहे भले अपने ऊ लूल्ह होखे, लंगड़ होखे, आन्हर होखे, बहिर होखे, अल्पमत के मिलीजुली होखे, बहुमत के होखे । बिपत परला पर शासन प्रशासन के पानी पी पी के गरियावलन जनता जनार्दन आ फिर सभे भूला जाला। ई सिलसिला अनवरत जारी रहेला। जनता के राज बा त जनता ही न मालिक कहाई। लेकिन हमार मन जानत बा कि ई मालिक के जिए खातिर केतना पापड़ बेले के परेला कवना कवना घाट के पानी पिए के परेला। मंत्री से लेके सन्तरी तक, नौकरशाही आ हुक्मरान लोग के आगे माथ नवावत ही जिनिगी के गाड़ी खींचा रहल बा।

◆ ◆ ◆

सुख बाटे चरदिनहा

सुख बाटे चरदिनहा पहुना आइल बा पहुनाई में
दुखवा लागे घर के लइका बइठल बा अंगनाई में

अजब सवारथ में दुनियाँ लसराइल बा
रिस्ता नाता पोरे पोर घवाइल बा
कहवाँ जा के पीर सुनाईं हियरा के
सब केहू त अपने में अझुराइल बा
जेकरा के बुड़बक समझेनीं उहे बा चतुराई में
हरिहर गाछ झुराइल जाता काहे दो पुरवाई में
सुख बाटे ...

सब केहू के रोटी दाल नचावेला
होत फजीरे बरबस उहे उठावेला
अदमी के गोड़े में चकरी बान्हल बा
खाली पेटवा काथी ना करवावेला
कइसन कइसन रंग भरल बा दोकरा आना पाई में
बिन बातन के जंग छिडल बा इहवाँ भाई भाई में
सुख बाटे ...।

कबहूँ त दुइए गो बून गिरावेला
खेतवन के फाटल हियरा तरसावेला
कबहूँ सँउसे गाँव बहेला पानी में
बदरा जब तिनतसिया चाल देखावेला
नेता जी के उड़न खटोला नाचे हवा हवाई में
राहत के सामान बँटाला भासन के लबराई में
सुख बाटे ...।

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्त
बेतिया,पश्चिम चम्पारण

सुरेश गुप्त
बेतिया,पश्चिम चम्पारण

ननकी दियरिया

ननकी दियरिया के मनवाँ में चोर बा
नीचे अन्हरिया बा उपरे अंजोर बा

गाधे मचवले बा दुखवा नयनवाँ में
पपनी से पुतरी ले बदरा सजोर बा

जिनगी के गछिया में ऊपर से नीचे ले
आधा में असरा बा आधा में खोर बा

चनवा चकोरवा के तकले बा रात भर
भोरे में लउकल कि पतई पर लोर बा

अब के पुछवइया बा चिरई परेवा के
सगरो अटरिया पर बइठल चिल्होर बा

◆ ◆ ◆

डिजिटल हो गइनी

निर्भय शुक्ला
"निनाद"
बड़हलगंज, गोरखपुर

खेत खलिहान सब भुलाइल
अउर पगडंडी के राह भुलाइल
दुइए दिन गइल शहरिया बाबू
ओकर भोजपुरिया शान भुलाइल,
हाँ, हम सबे डिजिटल हो गइनीं।

बाऊजी/पिताजी आ माई/अम्मा
अब पॉप/डैड आ मॉम हो गइनें,
फुआ फुआ के भी लइके भुलाए
अब त इहो सब मेहमान हो गइनें

गुल्ली डंडा/आइस पाइस के जाने
अब त लइके सब कुछ भुला गइनें
भिनहीं दौड़ लगावे के जाए मैदाने में
अब सब पबजी से ही बाजी मारि गइनें

शुद्ध हिंदी बोलहीं ना जाने बाकिर
सब हाऊ आर यू कह बतियावत ह
रियल हीरो के नाम न जाने केहू भी
एक्टर लोग के नाम खूब गिनावत ह

सहजता, बंदगी, करुणा, दया के जाने
अब त सब ट्विटर, फेसबुक,
व्हाट्सएप पर भाव जतावत ह।

सब संस्कृति, सभ्यता ले लिहलस ई
टिवटर, फेसबुक तबो खूब चलावत ह
एक ईकाई, दुइ दहाई सब गइल बिलाय
अब त वन, टू सब केहू गिनावत ह
सत्तर, उनहत्तर के जाने अब त
सब एटी नाइन दोहरावत ह
लाइट भगले पे मैच खेले भाग जा सभे
अब त व्हाट्सएप खूब चलावत ह
गुरुजी देख लें एकबेर खाली
त सब कुल करम हो जा
उहे अब त गुरुजी के आँख दिखावत ह।

गोड़ लागत बानीं, पाय लागत हईं
ई त देखले कई दिन हो गइल
अब तो गुड मॉर्निंग नाईट से काम होत ह,
बजारे के रौनक का जाने केहू
अब त ऑनलाइन बाजार होत ह

चैत/वैशाख के जाने!
मई जून के जमाना हो गइल,
बफर के सिस्टम ई का भइल कि
पंगति में बैठ खइले जमाना हो गइल

चाचा चाची, फुआ फूफा, दादा दादी के जाने
अब त परिवार भी पाप मॉम ब्रो सीस हो गइल ह।
बापे के नाम पता पूछ पूछ केहू भी पहुँच जात रहे
अब त मकान नम्बर गूगल मैप के सहारा हो गइल ह।

◆ ◆ ◆

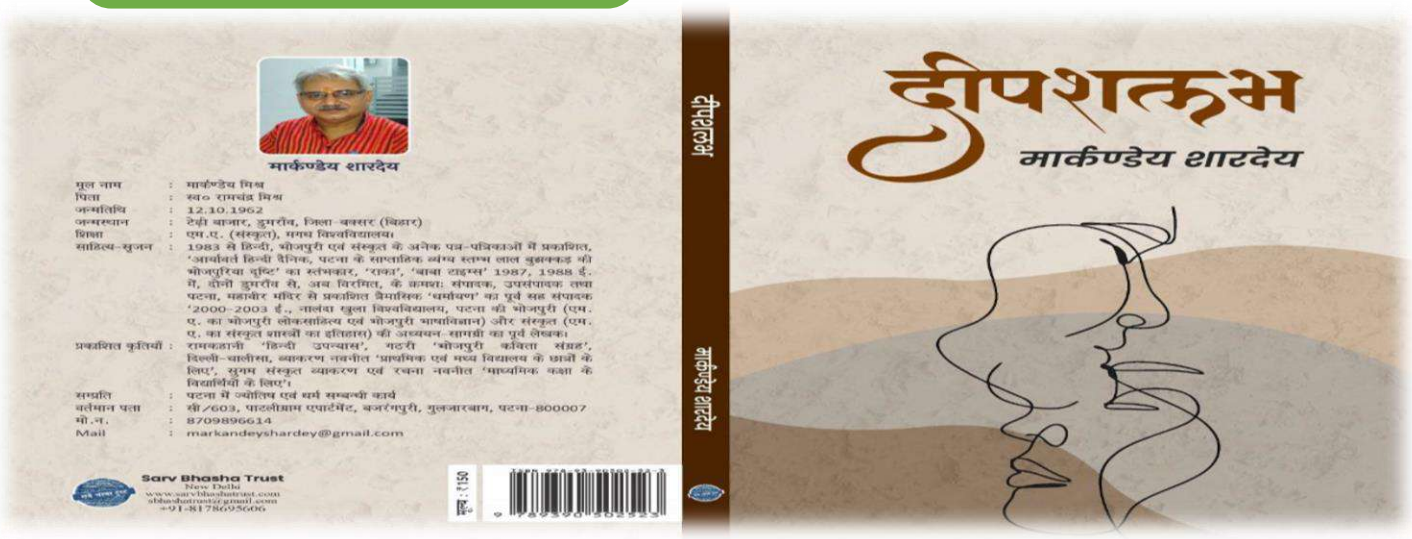

(पाठकवृन्द! - एह अंक से मार्कण्डेय शारदेय जी द्वारा रचित प्रबन्ध काव्य 'दीपशलभ' के यथावत् प्रकाशन कइल जा रहल बा। ई काव्य एकपक्षीय प्रेम पऽ आधारित बा। एह काव्य के अनुसार अकबर के खजांची गयासुबेग किहाँ मुंशी के काम करेवाला सुरनाथ शर्मा संस्कृत के बड़ विद्वान रहन। गयासुबेग अपना बेटी मेहरुन्निसा के संस्कृत पढ़ावे खातिर शर्माजी के संस्कृत-शिक्षको नियुक्त कऽ लेले रहन। ऊ पढ़ावे लगलें, बाकिर मेहरुन्निसा के रूप पऽ आसक्त हो गइलें। एह प्रथम सर्ग में ऊ सन्ध्यावन्दन करे यमुनातट पर आइल बाड़ें, बाकिर ऊ अइसन भुलाइल बाड़ें कि साँझ से राति हो जा तिया, बाकिर सन्ध्योपासना ना कर पावताड़ें। अन्त में पछतात लवटि जात बाड़ें।प्रकृति-चित्रण के साथे कइसे कहानी बढ़ऽतिया, एकर एह सर्ग में आनन्द लीहल जाउ। - सम्पादक)

दुसरका सर्ग

1

कोशाध्यक्ष गयासु बेग के यश फइलावे वाली।
कुल के अपना सभ प्रकार से मान बढ़ावे वाली॥
रूप, शील आ सर्व कला में रहली सभसे आगे।
उनुका सोझा जाये में विद्वानो में भय जागे॥

2

नाम मेहरुन्निसा रहे आ सब कुछ नामे जइसन।
लक-लक पातर काया-काठी गोर भभूका जइसन॥
खून निकलि आई सींकी से खोदबि तऽ अस लागे।
अइसन रही मुलायम तन के उपमा नइखे आगे॥

3

सुन्दर चंचल बृहन्नयन आ ओठ सरस अति पातर।
रस से भरल कटोरी जइसन गाल, शंख-जइसन गर॥
पातर लमछर करिया कुचु-कुचु नरम केश मन मोहे।
रेशम के करिया में रँगि के सूता सझुरल सोहे॥

4

अंग-अंग सुघराई के आधार रहे उत्कर्षक।
नाम गिनाईं कतनन के सब के सब अत्याकर्षक॥
रूपसुधा के पान करे के सभ आतुर हो जाला।
एको बेर परल दृग जेकर ऊ सुध-बुध खो जाला॥

5

शिक्षा-दीक्षा मकतब में ना घरही पावत रहली।
मेधा के मत बात कहीं, ऊ जे कुछ सीखल चहली॥
सीख निपुन भइली फिर पूछीं जहवाँ से मन भावे।
देरी ना होई इचिको तब लागबि उत्तर पावे॥

6

बुला किताबनि के हर पन्ना नीके चाटत रहली।
चटली बस ना सारतत्त्व ऊ पवली अइसन महली॥
गिहिथिन रहली कामू रहली सरबे गुनवा आगर।
छूके रहे घमंड न उनुका प्रेम-दया के सागर॥

7

गुन-गिहिथाँव सिखावत रहली जे जे सीखे आवे।
सखी-सहेली सीख-सीख के नया-नया गुन पावे॥
सीये-पूरे अउर बिने-काढ़े के नया तरीका।
खोजे के ऊ ले लेले रहली शायद ठीका॥

8

खोजि-खोजि के सखियन के बइठा-बइठा बतलावसु।
खूब सराहसु लोग देखि के अपनो बड़ सुख पावसु॥
फारसी पढ़ावे खातिर सुबहे एक मोलबी आवसु।
भाषा के तत्त्वज्ञ रहन ऊ ओकर मरम बतावसु॥

9

अदब-कवायद खूब पढ़वलें कुल्हि तजुर्बा देलें।
जे कुछ पवले रहलन सउँसे दौलत आपन देलें॥
जइसन पात्र रहेला तइसन द्रव पदार्थ हो जाला।
जतना ज्ञान-पियासल चेला ओतने ज्ञान दियाला॥

10

गुरु-द्रव के ना दोष दोष बा शिष्य-पात्र के मानीं।
बलुथर मे सुबहित खेती ना हो पाई ई जानीं॥
गुरु के आगे ले जायेके काम करेला चेला।
गुरु तऽ गौण रहेलें हरदम मुख्य रहेला चेला॥

11

गुरु तऽ गाय दुधारू हउँवे दूहीं पीहीं मन भर।
दूहे ना जानबि ना पीये दोष कहाँ बा उनुकर॥
नचिकेता-अर्जुन अस चेला कबो-कबो मिल जालें।
जवना से यमराज-कृष्ण के ओर-छोर हिल जाले॥

12

मन से ना तऽ पेंचे कइसों गूढ़ रहस्य बतावसु।
सुनि-सुनि गुनि-गुनि अन्तेवासी ज्ञान-प्रदीप जरावसु॥
एक योग्य आ एक न बाटे तब नइखे कुछ फैदा।
ई सम्बन्ध असहिये लागी बर पऽ पीपर पैदा॥

13

गुरु के बरतन खाली होखे चेला रहे पियासल।
कुछ ना पइहें मृगतृष्णा में मिरिगा मरी तरासल॥
गुणग्राही जन गुणवानन के साथ जबहिये लगिहें।
अन्धकार चिकटल दिमाग के शीघ्र तबहिये भगिहें॥

14

हरमेसा ना कबो कबो ही योग्य योग्य के पावसु।
पाके खुद के परिष्कार कर हरदम मोद मनावसु॥
योग्य पात्र खोजसु सद्दाता अर्थी नीमन दायक।
मिल जालें तऽ हो जालें तन-मन जीवन के लायक॥

15

रहन मोलबी साहब बहुते योग्य अउर सुजनाचारी।
उनुका मन अनुरूप मिलल ऊ रही गयासु-दुलारी॥
भला करसु कोहें क्रिपिनाही एसे ऊ ना कइलें।
जतना विद्या भरले रहलें खुश हो उझिलत गइलें॥

16

शब्दसाधना भावसाधना अर्थसाधना पवली।
फारसी जुबां में बढ़िया से ऊ आपन पहुँच बनवली॥
चार घरी ही रोज पढ़सु ऊ बाकिर तन्मय होके।
तदनन्तरे अउर सभ कारज समय मुताबिक होखे॥

17

अपराहन में संस्कृत के गुरु काव्य-न्याय बतलावसु।
नृत्य-गीत गन्धर्व सुविद्या के शिक्षक तब आवसु॥
सकल कला में अभिरुचि लेके सकल ज्ञान अपनावसु।
गुरुजन बुद्धि-विवेक देखिके मन लगाइ बतलावसु॥

18

आँखिन के पुतरी रहली बाबू-माई के अपना।
एसे पूरा करत रहन जा अपना मन के सपना॥
खाये-पीये पहिरे-ओढ़े के रानी अस साधन।
मिलल रहे ना दुख कुछुओ के सब कुछ हाजिर तत्क्षण॥

19

लक्ष्मी-सरस्वती दूनों के एक बराबर आदर।
होत रहे एसे ना बरिसे दुख के कबहूँ बादर॥
कोशाधिप-कार्यालय में सुरनाथ नाम के पंडित।
मुंशी के जे काम करत रहलें विद्वत्ता-मंडित॥

20

शर्मा जी उपनाम रहे आ प्रकृति-सरल ऊ रहलें।
गुणगण-गणना कर गयासु जी स्वच्छ हृदय से चहलें॥
दीनकथा उनुकर ऊ सुनि के कइलें खूब भलाई।
उनुके नेह दया से शर्मा जी के बढ़ल कमाई॥

21

मेहेर के संस्कृत के शिक्षा ऊहे देबे आवसु।
मासिक वेतन एह वृत्ति के मन अनुरूपे पावसु॥
शिष्या के सुन्दरता से मन उनुकर डोले लागल।
नीति-रीति आ धरम-करम के गीरह खोले लागल॥

22

हिरदय में हिलकोरा होखे यौवन से गदराइल।
भावलय के सम्मिश्रण से मादकता बढ़ियाइल॥
सुता-पिता सम्बन्ध भूलि के मन बउराये लागल।
सिरहन कम्पन सकल गतर में त्वरित समाये लागल॥

23

उन्माद तपन शोषण स्तम्भन सम्मोहन के द्वारा।
होखे लगलन खूब घवाही चले न कवनो चारा।
सउँसे देह भीतरे भीतर होखल झँझरी जइसन।
एह रोग के औषध का बा जेसे छुट्टी पइहन?।

24

आत्मनियन्त्रण कइल जरूरी बा बस, इहे बुझाइल।
एही से बहकल मन-घोड़ा के लगाम फरियाइल॥
घोड़ा के कुछ चाल भइल कम, बाकिर पूर्णतया ना।
सिधवा लागे कबो-कबो आ कबो ढिठाई नाना॥

25
मनोभाव सामने कबो ना कबहूँ कतहूँ कइलन।
लाख मुसीबत सहलें, बाकिर रोज पढ़ावे अइलन॥
घरे जासु त मन छपिटाके खूबे झोरे तन के।
अइसन रोज बुझा कि गँवाके आइल होखसु धन के॥

26
कार्यालय में काम करत जब बेरा ढरके लागे।
मेहरुन्निसा किहाँ जाये के मनवा सरके लागे॥
लागत रहे कि जादू-टोना केहू कइले होखे।
लोहा के खींचे खातिर भा चुम्बक धइले होखे॥

27
समय-चाल से चुम्बक नियरा अधिकाधिक आवेला।
आके अपनावे के खेला रोजे दिखलावेला॥
आजु व्यग्रता अधिक रहे कुछ उनुका में फफनाइल।
सुन्दर सूरत जवना कारण लउके बड़ झँउराइल॥

28
आके शिष्या के अभिवादन अनमन अस स्वीकरलें।
उच्चासन पर बइठ विचिन्तित पुस्तक के उटकरलें॥
शिष्या लेके बइठल रहली लक्षण-ग्रन्थ पढ़ेके।
रस के लक्षण भेद निदर्शन लेके रहे बढ़ेके॥

29
हाय! थिराइल पानी में का ढेला फेंक दियाइल!
हाय! जोड़ के दरद बढ़ाके पुरुबा बा अगराइल॥
हाय! घवाही शान्त साँप के चुपके खोद दियाइल!
अनझटके ही हाय! कटल पर जइसे नून दराइल॥

30
हाय! बुतात आगि में सूखल लकड़ी डालि दियाइल।
हाय! पाठ के देखि करेजा फिर से बा अँउजाइल॥
शर्मा जी सोचे लगलन, 'हम कइसे आजु पढ़ाईं?
बिया खुदे रसवती भला तब रस पर का बतलाईं?।

31
दीप दिखावल सूरज के का योग्य कबो होखेला?
विशेषज्ञ के सोझा प्रवचन दीहल का शोभेला?
बाकिर अपना बारे में बेचारी का जानेले?
आँखि समूचा दुनिया देखे पर खुद के देखेले?

32
हरिना का जाने ढोंढ़ी में हमरे बा कस्तूरी!
धन्य विधाता के ई लीला धन्य ज्ञान के दूरी!!
भरल लबालब रस बा जेमें रस का ह ना जाने।
ई पागलपन अउर न कुछुओ खुद के ना पहचाने॥

33
रसाधीश शृंगार हमेशा सबसे पहिले आवसु।
अंगोपांग तेकरा बादे काव्यसुधी बतलावसु॥
आजु परीक्षा खड़ा बिया मुँह बाके खा जायेके।
अतने ना सब ज्ञान-ध्यान के जड़ बिलवा जायेके'॥

34
दू-दूगो यौवन से मातल रहिहन जहाँ परानी।
मनोयोग्य अवसर पाके बचिहें ज्ञानी-अज्ञानी?
सब अनर्थ के जड़ सिगार ह यौवन के खदकावे।
ज्ञानचक्षु के फोरि अधरमी सदा अनेति करावे॥

35
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग केहू के न बकसलस।
हटे लउरधर मरद हमेशा एके लउरी हँकलस॥
विश्वामित्र नियन तपसी के मन के बड़ उदबेगलस।
एक नर्तकी के सोझा उनुका के तुरत पटकलस।

36
सुधी पराशर तरीवाह के कन्या पऽ भहरइलें।
महाराज दुष्यन्त कण्वकन्या पऽ मोहित भइलें॥
गुरु-पत्नी तारा पऽ विधु के मर्यादा मटियाइल।
पुरूरवा अस महावीर के वीरभाव ओरियाइल॥

37
का का गिनीं गिनाईं बहुते बा उदाहरन सोझा।
एह अनेति से बान्हल बा कतने गाथन के बोझा॥
सकल बखेड़ा केहू के ना हऽ सिगार के मानीं।
ईहे बा सबसे बड़ पापी सोचीं बूझीं जानीं॥

38
अतना गिरल चाल हऽ एकर कहत कहा ना पाई।
कुल में दाग लगा देही ई धन-जन के बिलवाई॥
एकरा किहाँ पवित्र न कवनो रिस्ता-नाता होलें।
एकरा किहाँ न भ्राता भगिनी पुत्री माता होले॥

39
दीप-शलभ अस रूप देखि के जन अइसन बउरालें।
घर-परिवार मान तन तक के छन में बिलवा जालें॥
एही माया में पड़ि-पड़ि के कतने स्वाहा भइलें।
रूप-राशि के छाँह तरे आत्यन्तिक सुख ना पइलें॥

40
भावलय से रससत्ता होखेले सभ जानेला।
सात्त्विक राजस आउर तामस के निवास मानेला॥
विष्णु नियन बहुरुपिया छलिया हउवन जेकर स्वामी।
साँवर हवें सँवारसु सभके मोहित होलें कामी॥

41
एकाएक बुझाइल उनुका दोष सिर्फ देतानी।
दोष गिने में गुन सँउसे कइसे भुलात हम बानी॥
दोष अधिक जेमे होला गुण कुछ ना कुछ त होई।
दुर्गुण खाली देखि समीक्षक निज गुणवत्ता खोई॥

42
गुन-अवगुन दूनो के लेके दुनिया के बा टाटी।
गुन अधिका तऽ सोना मानीं अवगुन अधिका माटी॥
कवन चीझु में दोष न बाटे केमें गुण ना पाइबि।
एक वृत्त में घूमबि त ओही जगहा पऽ जाइबि॥

43
ओही तरे बनल बा ई शृंगार उभय के लेके।
दोष देख ही के चाहीं आ चाहीं गुण देखेके॥
जब नायक के मन लट्टू अस देखि नायिका नाचे।
मनुहारे हिरदय से साफा स्वारथ से ना ठाँचे॥

44
एक दोसरा प मर जाये के परतिग्या होले।
परतिग्या कथनी तक ना करनी में भी टकटोले॥
तबे प्रीति के गाँछी में हरियरी बुझाये लागे।
तबे प्रीति संस्तुत्य बनेले अउर पुजाये लागे॥

45
जब बसन्त में गाँछिन के कुछ अंग-अंग गदराला।
यौवन के निखार फूलन से अउर अधिक हो जाला॥
अनायास राहिन के मनवा एपर जा अँटकेला।
ओही सुन्दरता के प्यासा बन भौंरा भटकेला॥

46
बरसा रितु में लतर फफनि के जब जवान बलखाले।
नियरे कवनो पेड़-रूख के अँकवारी में जाले॥
जब शृंगार चटकवाही ना करित तऽ का तब होइत।
दुनिया निर्जन मरूभूमि बन फूँका फारत रोइत॥

47
मनु-शतरूपा में मिलान ई जब न करावल चाहित।
तब कइसे ई सृष्टि चलित आ कइसे केहू होइत?
नैसर्गिक ई देन विधाता के विधान के बाटे।
एही से केहू केहू पऽ प्रीति लपेटऽताटे॥

48
प्रीति नियन दुनिया में कवनो कतहूँ नइखे बन्धन।
गीरह ना दे अझुरा के राखेला सभकर तन-मन॥
रुपया-पइसा सोना-चानी आउर हीरा-मोती।
जवन काम ना कर पइहें ऊ तवन काम ई जोती॥

49
जहाँ दिमागी हरकत से बान्हल ना जाला केहू।
तहाँ प्रेम से बान्ह दियाला मूर्ख निदय बा सेहू॥
दूर देश के दूगो राही चलत-फिरत मिल जालें।
बात-बात में रामकहानी कहत-सुनत चल जालें॥

50
जहाँ वासना के समेटि के प्रेम उमड़ आवेला।
उहवें शुम्भ-निशुम्भ दैत्य के रूप निखर आवेला॥
जब वासना राक्षसी लेखा कबो झपट्टा मारी।
तब मानवता के बन्धन के आग लगाके जारी॥

51
प्रेम अधिक होला जब तब बलिदान दियाला तन के।
तन के ही ना अर्पण होला, होला तन मन धन के॥
तब 'त्वमेव सर्वम्' के समुचित पुष्टि कहाई, होखी।
तबे प्रेम आ प्रेमी जन के नित्य बड़ाई होखी॥

52
शर्मा जी के मन बानर अस डाढ-डाढ पर फाने।
लाख मनावसु रोकल चाहसु बाकिर ऊ ना माने॥
जइसे शलभ दीप के भीरी आवेला, हट जाला।
छिन-छिन कादो सोच-समझ कुछ हट जाला सट जाला॥

53
ओही शलभ मतिन उनुकर मति छनभर में अँउजाइल।
ज्ञान-ध्यान के मोट मोटरी बहुते दूर धराइल॥
रखल फलक पर उघरल पुस्तक असहीं रहे तँवाइल।
गुरु-शिष्या आमने-सामने रहलें बइठि चुपाइल॥

54
जीभ हिले केहू के ना बानी मन तक अझुराइल
एक घरी तक कहवाँ बानी केहू के न बुझाइल॥
शिष्या सोचसु कवन बात बा कहवाँ मन अँटकल बा?
सुझरल हटे दिमाग किन्तु काहें अब भटकल बा?

55
कवनो रोग पटाइल जागल? रस का हऽ ना जानसु?
असमर्थता प्रगट ना होखे एही से न बतावसु?
बाकिर ना, विद्वान हवें विद्वत्ता जानत बानी।
इनिका में जे ज्ञानरत्न बा हम पहचानत बानी॥

56
बार भले नइखे पाकल पर बुद्धि बिया पकठाइल।
वाङ्मय के मर्मज्ञ हवें ई हमरा कबे बुझाइल॥
भला उम्र के जरिये कबहूँ गुण पहचानल जाई?
जे-जे बूढ़ भइल बा से-से पंडित-सुधी कहाई?

57
करिया अक्षर भँइस बराबर कतना जन जानेलें।
उनुकर ढरकल उमिरि देखि का ज्ञानी मानल जालें?
कमे उम्र के बाड़ें पर कतना शास्त्रन के ज्ञाता।
दैवयोग से पइले बानी हम अइसन गुणदाता॥
58
काहें आजु पढ़ावत नइखन कादो सोचत बाड़ें?
जब से आइल बाड़ें तब से कुछ ना बोलत बाड़ें॥
घुमरि परेउवा इनिकर मन काहें दो खेलत बाटे।
का कवनो उरेब आइल बा ऊहे बोलऽताटे?
59
आँखिन में आँखिन के डलले लगली टोवे कारन।
चतुर-सयानी रहली बाकिर मिलल न एको दुख-कन॥
डर गइली, लगली सोचे, हम कवन उपाय करीं अब!
वैद्य-हकीम बोलाईं कवनो कइसे रोग हरीं अब॥
60
कहली, 'गुरु जी! का अपने के होखल बा बतलाईं।
काहें बा बेचैन बड़ा मन? करके कृपा सुनाईं॥
कहतीं, कवनो वैद्य बुलइतीं कष्ट दूर हो जइतें।
बानी बहुते परेशान कुछ औषध देइ हटइतें'॥
61
सुन उनुकर कोमलतम भाषा शर्मा जी भकुवइलें।
तन-मन के संयत कइलें आ शुद्ध रूप में अइलें॥
स्वप्नलोक के यायावर के जइसे नीन पराइल।
तइसे उनुका सकल गतर में नव्य चेतना आइल॥
62
'कहलें हमरा कुछ न भइल बा घबराये के नइखे।
वैद्य-हकीम भला का करिहें बुलवावे के नइखे॥
रोग रहित त कहतीं बाकिर हमरा कुछ न भइल बा।
आजु न जाने काहें दो मन भारी नियन भइल बा॥
63
इच्छा नइखे आजु पढ़ा ना पाइबि घर जातानी।
सुनऽ, अन्यथा मत लीहऽ तू बहुते पछतातानी'।

(बाँचल अगिला अंक में।)

मार्कण्डेय शारदेय

हाल ई हमरो जाई के

देश की सेवा खातिर अइनीं,
देशवे पर हम मरि मिटि गइनीं।
केतने गोली बन्दूक से निकलल,
केतने गोली सिनवा पर खइनीं।

झुके नाही दिहनीं तिरंगा
अपना भारत माई के ।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के।

जइते माई जब पुछिहें हमरो
हाल बतावऽ मोर बाबू के।
तनिको ना सोचिहऽ ना रोइहऽ ,
दिलवा के रखिहऽ काबू में।

बेर-बेर ऊ देखत होइहें,
नित सपना नया सजाई के।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के ॥

कहिहS बैरी घुस गइल बानें,
अपनी देशवा मोर माई हो।
घरवा क एक दीप जलत बा
दोसर दीप बुझि जाई हो।

उनका से सब कुछु कहि दिहऽ
जरत दीप बुझाई के।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के।

बाबूजी मनिहें नाहीं पुछिहें,
हाल का बा मोरे लइका के?
ओकरे सुधि में बहू भुलाइल
बाप-माई निज मायका के।

उनका के समझइहऽ तुहूँ
हाथ के ठेगना गिराई के।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के ॥

बहिनी हमरो दउड़त अइहें
भइया तोहरो के कहिहें हो।
सबका नियर उहो हमरो,
हाल त पूछल चहिहें हो।

कइसे कहबS तू उनसे
हाथ के सूत चटकाई के।
हे सिपाही भइया कहिहS
हाल ई हमरो जाई के।

ओकरा पीछे ऊ नई बहुरिया
देहरी पर ठाड़ ऊ पूछि पड़िहें।
ना जो चहबऽ तुहूँ बतावल
पूछला खातिर ऊ अड़ि जइहें।

हथवा में चूड़ी लेके जइहS
फोरिहS तू उहें गिराई के।
हे सिपाही भइया कहिहS,
हाल ई हमरो जाई के ॥

रुनुक-झुनुक तब बिटिया मोर
पुछिहें का हाल बा पापा के?
सालचे कहऽ तू चाचा सिपाही
तबो न खोइहऽ आपा के ॥

'मणि' जब कुछु कहि ना पइहऽ
खेलइहऽ कान्ह उठाई के।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के ॥

जानि पड़ी जब उहाँ हकीकत
पुका फारि सभे बिलखाई हो।
जवले जान रहल हम कहनीं
अब कुछऊ ना कहि पाइब हो।

तवले उहवाँ हमहूँ पहुँचब
तिरंगा में लिपटाई के ।
हे सिपाही भइया कहिहऽ
हाल ई हमरो जाई के ॥

रघुबंशमणि दूबे

टीकर, देवरिया

महाकवि

मिला जुला के पढ़ लेइला, कवि हई हम धाँसू,
कविता सुन के श्रोता चिढ़ें, निकले आँख से आँसू।
एक छंद पर बीस चुटकुला, दे दनादन मारीला,
आपन छोड़ दूसरे क हम, पोथी पतरा बाचीला।

संचालन भी करीला जम के, शेर भकाभक छोड़ीला,
दाँत चियार के मुँह बनाईं, अपने मन कऽ बोलीला।
फुरसत हमके तनिको नाहीं, नाकी ले आयोजन ह,
शायर शायरा गिरें गोड़ पर, हमरे लग्गे संयोजन ह।

महाकवि क लिस्ट बनी जब, सबसे ऊपर नाम रही,
देखे खातिर हमके एक दिन,सड़क गली कुल जाम रही।
नाहीं कब्बो रहीं अकेले, कहीं दोस्त के चेला चप्पड़,
घर दुआर से मतलब नाहीं, घुमिला हम बनके फक्कड़।

कवियित्रिन पर कब्जा समझीं, तनिको कहाँ लजाइला,
जवन बात न माने ओके, कुल्टा गुरु बताइला।
एक बार हम जहाँ पहुँचलीं, लच्छन कुलहि देखा देहलीं,
अपने जीवन पर खुद हमहीं, करनी से ग्रहण लगा लेहलीं।

फेसबुक यूट्यूब पर लाइव, कविता पाठ कराइला,
जेकर रचना सुने न केहू, ओहि के बोलवाइला।
हाथ जोड़ के नाक रगड़ हम, मञ्च झटक चढ़ जाइला,
कविसम्मेलन के पर्ची से, चन्दा माँग के खाइला।

टीबी चैनल आउर रेडियो, कुछउ नाहीं छूटल बा,
जे भी हमसे सटल समझला, किस्मत ओकर फूटल बा।
नवयुग के साहित्य क झण्डा, हम कान्ही पर ढोईला,
सूर कबीर जायसी तुलसी, सबकर इज़्ज़त धोईला।

नवहन क आदर्श हईं हम, भौकाल त पूरा टाइट हौ,
मक्कारी में अव्वल बाड़ीं, फीका हमसे सनलाइट हौ।
केतना आपन गुन हम गाईं, कर्म अनन्त ई कथा अनन्ता,
देख योग्यता दिव्य विलक्षण, चिंतित बाटें सृष्टि नियन्ता॥

◆ ◆ ◆

अवधेश मिश्र रजत
मंडुवाडीह, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

भोजपुरी ग़ज़ल

बड़का छोटका के पहिचान,
ना धन पद ना मान से होला।
बड़ आ छोट के निरनय त,
सुन लऽ बिचार बेवहार से होला॥

बाप के पइसा खेती बारी,
नाहीं घर दुआर से होला।
सरकारी नोकरी से नाहीं,
शादी रहनदार से होला॥

परदेश गइल परिवार से नाहीं,
गुजर बसर पट्टिदार से होला।
ना विद्वान ना मूरुख से,
असली मजलिस जोड़ीदार से होला॥

ना खपड़ा नाहीं कट्रैन,
मड़ई खरपतवार से होला।
ना चउकठ नाहीं छत से,
झगरा त परिवार से होला॥

पिपासु प्रमोद
जिगना दूबे, गोपालगंज

नवगीत (भोजपुरी)

ज्ञान बुद्धि बिक गइल,
अब नोट के बाजार में।

का कहीं हम आपन हाल,
देखत होखे उज्जर बाल,
तनिको ना आवे पसंद-
हमरा नेता सब के चाल।
झूठ बेइमानी उग गइल-
अब खेती अउ बाड़ में। ज्ञान बुद्धि ----- ॥

पढ़ले लिखले घास छिले,
अंगुठा छाप के गद्दी मिले,
केकरो घर चूल्हो ना जरल-
केहू पूआ पूरी गिले।
धरम करम सब ताख गइल-
झूठ अउर भ्रष्टाचार में। ज्ञान बुद्धि ----- ॥

बेगरज पइसा फेंकेला,
सिनेमा अउ सर्कस देखेला,
लंदफंद में हरदम रहे-
कबहूँ जे ना सच बोलेला।
एको पैसा कबो ना बँटलें-
दीन दुखी लाचार में। ज्ञान बुद्धि ----- ।

पूनम सिन्हा "प्रीत"
देवघर, झारखंड

माई से बढ़िके माई के इयाद

भगवती प्रसाद द्विवेदी
पटना, बिहार

दुनियाँ में अइसन का बा कि एक बेरि बिला भा हेरा गइला प ऊ फेरु हासिल ना हो सके। एकर बस एकही जवाब बा-माई। जइसे कवनो जीव खातिर राम से अधिका महातम राम के नाँव के होला, ओइसहीं माई से बढ़िके माई के इयाद के महिमा बा।एगो कवि के कहनाम बा-के अपना बछरू के खातिर

मछरी-अस छपिटाई,
रहि-रहि मन परि जाले माई!

हमरा-अस अभागा खातिर त माई के इयादिए में दुनियाँ-जहान के सरबस सुख बा। बाकिर गुर के सवाद-मिठास के बयान-बखान का कबो गूंग करि सकेला? ना नू!

फेरु महतारी के नेह-छोह आउर ममता के भला सबद भा बानी में कइसे बान्हल जा सकेला! गोसाईं जी कहलहीं बानीं-

जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

भाई सुभाषचंद्र यादव जी के इहो बात सोरहो आना साँच बुझात बा-

जग में माई अइसन केहू सहाई ना होई,
केहू कतनो दुलारी,बाकिर माई ना होई।

तबे नू, भगवान भा कुदरत का बाद भगवान-कुदरत लेखा अगर केहू होला, त ऊ माइए नू होली! संसार के हर संतान के आपन महतारी दुनिया के सभसे सुन्नर-सुभेख आउर महान नज़र आवेली। हमरो माई हमरा निगाह में ओइसने लागेली। बाकिर जब हम होश सम्हरलीं आ जेकरा के आपन 'माई' कहिके बोलावत रहलीं, ऊ हमार माई ना रहली। हालाँकि ऊ ममता के मूरत रहली आ माइए लेखा हमरा पर साँच परेम आउर नेह-छोह लुटावत रहली। हमरा के पाले-पोसे आ हर किसिम के हुलास-उछाह, सुख-सुविधा देबे में उन्हकर अगहर भूमिका रहल। ऊ हमार बड़की माई रहली आ उन्हकर नाँव रहे मुनीश्वरी देवी। उन्हकर सासु आपन मए जर-जमीन हमरा बाबूजी का नाँवें लिखि देले रहली, काहेंकि ऊ हमरा आजी (मइया) के सहोदर बहिन रहली। बड़की माई मोसमात रहली आ उन्हकर आपन कवनो औलाद ना रहे। उन्हकरा जिनिगी के बड़ा अकथ कहानी रहे। बहुत धूमधाम से बड़का बाबूजी का संगें उन्हकर हाथ पीयर भइल रहे, बाकिर गवना का पहिलहीं ऊ एगो बेमारी के शिकार होके दम तूरि देले रहलन। बड़की माई पहिले हाली जब असवारी में बइठिके ससुरा अइली, त एगो बेवा का रूप में। खाली बियाह के रसम हो गइला के कारन ऊ आपन पहाड़ नियर जिनिगी बड़का बाबूजी के इयाद में गुजारि दिहली। ओह सरगबासी बड़भागी पति के इयाद में, जेकरा से ना कबो भेंट-मुलाकात भइल रहे आ ना कबो सुरतिए आँख-भर देखे के मोका मिलल रहे। उन्हकर सँउसे जिनिगी बाटे जोहत गुजरि गइल रहे।

उन्हका जिनिगी के अनकहल दास्तान हमरा मरम के अइसन उदबेगले रहे कि हम एगो 'बाट जोहत' शीर्षक से कहानी लिखे खातिर अलचार हो गइल रहलीं।ताजिनिगी अपना आँतर के मए दु:ख-कलेश बिसरा के ऊ शिवाला में शिवजी के पूजा-पाठ में लवसान रहत रहली। हमरा में त उन्हकर जान-परान बसत रहे आ माई जशोदा लेखा नेह-ममता लुटावत ऊ अपना जिनिगी के सरबस, हमरे के सँउपि देले रहली। उन्हकर नेह-छोह का हम कबो भुला-बिसरा सकेलीं? कबो ना!

बाकिर जइसहीं हम अपना गोड़ पर ठाढ़ होके 'माई ' खातिर किछु करे के काबिल भइलीं, ऊ हमरा माथ प हाथ धइले शिवजी के नाँव जपत हरदम-हरदम खातिर आँखि मूँदि लिहली। उन्हका जिनिगी में कबो किछु पावे के चाह ना रहल। हरदम दिल खोलिके नेह-छोह बाँटल आ लुटावल उन्हकर जिनिगी रहे। साँचो के मुनीश्वरी रहली ऊ। हमार माई, जे हमरा के अपना कोखी से जनमवले रहली, खाली नाँवें के रागिनी ना रहली, बलुक सभ तरह से रागात्मकता से ओत-प्रोत रहली आ मए परिवार के सेवा-टहल उन्हका जिनिगी के मकसद रहे। उन्हका नइहर के पढ़ल-लिखल सम्भ्रांत समाज रहे, जवना में

पाँच बहिन, एक भाई के परिवार में सभ केहुए शिक्षित रहे। हमार मामा बरमेश्वर उपाध्याय ओह इलाका में अकेला बैरिया इंटरमीडिएट कालेज,बैरिया में अंगरेजी के जानल-मानल प्रवक्ता रहलन आ चाँदपुर-चजपुरा के इलाका में उन्हकर बौद्धिक लोगन में नीमन धाक रहे। बाकिर हमरा होश सम्हारे के पहिलहीं हमार माई एह निठुर दुनियाँ से नेह-नाता तूरिके कूच कऽ गइल रहली आ ओह घरी हमार उमिर महज दू बरिस के रहे। एह बीचे हमार बड़ भाई काँचे उमिर में सरगबासी हो चुकल रहले। बाँचि गइल रहली हमार बड़ बहिन कृष्णा कुमारी। हमरा जनम के दू बरिस बाद एगो छोट मूवल बहिन के जनम देते खा, माई दुनियाँ छोड़ि देले रहली। सँउसे परिवार, टोला-परोस एह सदमा में डूबि गइल रहे।

गाहे-बगाहे माई के गुन-गिहिथान के चरचा घर-परिवार आउर टोला-महल्ला में अक्सर होत रहत रहे। केहू उन्हका मिलनसार सुभाव आ सेवा-टहल के गुन गावे, त केहू सामूहिकता में जीएवाला उन्हकर हँसमुख शख्सियत आउर अगल-बगल के लरिका-लरिकिन के पढ़ावे-लिखावे के हुनर के बड़ाई करे। आजी (मइया) के आँखि का सोझा से त उन्हकर सूरत बिसरते ना रहे। ऊ अकसरहाँ सुबुकत कहसु-' सासु का सोझा पतोहि दुनियाँ छोड़ि दिहली, एह से बढ़िके अनहोनी अउर का कहाई! देवी रहली ऊ, पुन्यात्मा रहली, एही से सरगे चलि गइली आ हम बुढ़ारियो में नरक भोगत बानीं। देहि-धाजा त उन्हकर अइसन रहे कि निमना-निमना लोग के सुनरई के मात दे देसु। हँससु, त गाल में गड़हा परि जात रहे। सबसे सुन्नर रहे उन्हका मन के सुनरई। दोसरा के दुःख उन्हका से इचिकियो बरदास ना होत रहे आ ऊ जीव-जान से सेवा करे लागत रहली। कसीदाकारी-पढ़ाई में ऊ माहिर रहली आ गीत-मांगर में उन्हकर मन रमत रहे। ओइसन लोग का कबो मरि सकेला?' किसिम-किसिम के लोग, किसिम-किसिम के बतकही।

बाबुओजी के जिनिगी में बुझिला माई अमिट छाप छोड़ले रहली। तबे नू, चढ़ते जवानी में विधुर भइला के बावजूद ऊ फेरु बियाह ना कइलन आ हीत-नात के बहुत दबाव के बादो हम दूनों भाई-बहिन खातिर मयभा महतारी ले आवे से साफे इनकार कऽ देले रहलन। माई आ बड़की माई-दूनों हमरा खातिर माइए रहे लोग। दूनों एक से बढ़िके एक। परदुखकातरता आ संवेदनशीलता साइत ओही लोग से हमरा विरासत में भेंटाइल रहे। आजुओ जब हम किसिम-किसिम के मुसीबत के सामना करेलीं आ जब कवनो सभ्य दईतन के अनेति हमरा के ललकारेला, त एह भकसावन अन्हरिया में माई के इयाद के अंजोरिया हमरा में जीवटता आ आत्मबल भरत साफ-फरिछ राह देखावत रहेले। सचहूँ, हमरा खातिर माई से बढ़िके बिया माई के इयाद।

◆ ◆ ◆

विजयादशमी

एगो समूहवाची अभिव्यक्ति

-परिचय दास

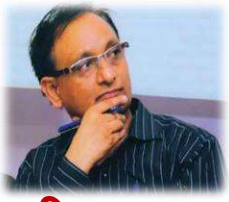

परिचय दास
प्रोफ़ेसर आ अध्यक्ष
नव नालन्दा महाविहार सम विश्वविद्यालय
(संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार), नालन्दा

विजयादशमी शक्ति क उत्सव ह , मंगल क हेतु। कइसन शक्ति ? जवन अन्याय क प्रतिरोध करे, जवन निर्बल के संबल दे। जवन करुना के समन्वित क के पुरुषार्थ के आधार बनावे। **'जे लरै दीन के हेत सूरा सोई'।** हर केहू के जीवन में वनवास आवेला। ओम्में अपने के बचा के साहसपूर्वक जहवाँ भविष्य-गमन होखे, ऊहे विजयादशमी ह। विजयादशमी से पूर्व नौ दिवसीय उपवास क शक्ति। उपवास यानी निकट रहल। ई निकटता वास्तव में अपनहीं से होखे के चाहीं। जे अपने से निकट ना , ऊ केहू के निकट ना हो सकेला। केहू के निकट होके , केहू अउर के निकट होखल श्रेयस्कर ह। समकालीन दुनिया में अदिमी अपने के खोवत जा रहल हवे। सब कुछ पवाला के बावजूद स्वयं क रिक्तता। ईहे विपर्यय ह। पद-प्रतिष्ठा-रुतबा-संपर्क आदि तब ले द्वितीयक हवें जब ले स्वयं [निजता] क आभा ना होखे। निजता के शक्ति से हीन व्यक्ति शक्तिशाली ना हो सकेला , विजयादशमी ईहे इंगित करले। राम आत्मिक उदात्तता के चरम छन के विरल संगीत हवें । सीता आ राम खाली हमनीं के परम्परा क गति ना , यतियो हवें, छंदो हवें जवन हजारन बरिस से हमनीं के अभिव्यक्ति बनल हवें ।

हर केहू में अच्छाई -बुराई क संधि ह। अनुपात अलग-अलग हो सकेला। कवनों -कवनों क्षेत्र धूसरो हो सकेला, मने ग्रे एरिया। भारतीय सामान्य व्यक्ति क प्रश्नाकुलता प्रश्नाकुलता के स्वर विजयादशमी में हवे जवन हमनीं के धमनी आ शिरा में वास करे लें । हमनीं के संकल्प-भावना क मूर्तिमंत रूप। जब अन्याय होखे त ओसे संघर्ष क आरेखन विजयादशमी में मिलला। सामान्य के इकठ्ठा कऽके संघर्ष कइला क कला राम के लग्गे हवे। सत्ता से दूर रहिके मैत्री-कला केहू उनसे सीखे। मैत्री क निर्वाह कइलो ऊ जानेलन । ऊ लंका पर राज ना करेलन । ऊ विस्तारवादी नीति के नियामक ना। रावन एगो अइसन प्रतिनायक ह , जवन विद्वान् हवे आ प्रकृति के वश में रखेला। रावन से सीखे खातिर लछुमन रावन के मृत्यु के घरी में सादर उनका लग्गे जालें। रावन विराट शक्ति आ प्रतिभा क धनी रहे। ओकर शक्ति आ प्रतिभा जदि स्त्री के हरला में ना खपत आ मन-विस्तार होत त साइत राम-रावन संघर्ष क दिशा कुछ अ लउरू होत। **'रह गयल राम-रावन क अपराजेय समर'।** कब्बों ख़त्म ना होला

हमनीं के भित्तर क संघर्ष - प्रकाश आ अन्धकार क। जइसे अन्हियारो में विशिष्ट क्षमता होली सन ओइसहीं रवनवो में बेहतरी कई बार देखल जा सकल जाला। भारतीय मन केहू में खाली नकारात्मकते ना देखेला , ऊ सकारो खोजला। चाहे कहीं - खोज लेला। शम्बूक आ सीता- निष्कासन के प्रसंगो के लोक अपना समझ से देखेला ।

महत्व जदि सत्ता, संपत्ति , कृत्रिम लोकप्रियता , धाक आदि के सहारे प्राप्त भइल त ओकरे कम हो गइले क संभावना अधिका होले । जदि अच्छाई एकरे विधायक गुण -संपत्ति से बनल आ बुनल होखे त ओम्में धुंधलापन अइला के अधिक आशंका ना होला। राम क जवन अर्जित हवे , ओके विधायक सृजनशीलता कहल जा सकल जाला |आधुनिकतावाद औद्योगिक विकास , बुद्धिवाद आ विज्ञान के वर्चस्व के प्रगति आ सभ्यता के साथ जोड़ दिहल गइल रहे, जबकि उत्तर आधुनिकतावाद संस्कृति के एक के बजाय अनेक आ केंद्रित के बजाय विकेन्द्रित करार दिहलस । अब्बे देखीं त नया सिरा से अब संस्कृति डिस्कोर्स क मुद्दा बनल रहल हवे , जेम्में जरिन क तलाश , अतीत आ परम्परा के नया अवगाहन महत्त्वपूर्ण बनत गयल हवें ।

राम के नया सिरे से आविष्कृत कइला खातिर उनहूं के गहराई से समझे के होखी जवन 'अन्य' के रूप में रहल हवें आ कई बेर साहित्य आ इतिहास से बहरे मानल जात रहल हवें , जइसे- दस्यु, राक्षस आ आदिजन । येह सबाल्टर्न क समीचीन व्याख्या आवश्यक होखी । सीता, उर्मिला , मांडवी आदि के भी नया सिरे से देखे के होखी । येह पढ़ले क प्रक्रिया के गायत्री स्पीवॉक चक्रवर्ती 'ट्रैन्जेक्टिव रीडिग" कहेली । एह तरह नये अर्थन आ सन्दर्भन क दुनिया के दुवार खुलेलन ।

एतनी सगरो अर्थच्छवियन , दृष्टियन क संकुलता आ बहुवचनात्मकता से संपृक्त कथा हज़ारन साल से लोक व्यवहार , आचार आ स्मृति में रंगमयी झिलमिलाहट से भारतीय समाज के रचत रहल हवे ॥ अइसन निरंतरता , जवन जीवन क उत्सव बन जाय ॥॥ भारतीय बिम्ब सदा मंद्र आ तारसप्तक के बीच होला। उहां अतिवाद के स्थान ना। एही खातिर प्रतिपदा से दशमी खातिर अइसन सुऋतु चयनित हवे, जहां ना शीत हवे ना गर्मी । जहवाँ स्वच्छता पर बल हवे : अंतः आ बाह्य परिमार्जन। एक ना , ई कथा सैकड़न रूपन में हवे। खाली एगो पाठ ना, सैकड़न पाठ। एगो पाठ राम क त अन्य पाठ सीता क। एगो पाठ लछुमन क त अन्य पाठ उर्मिला क। राम ,लछुमन - भरत के अन्तर्सम्बन्ध एगो भिन्न कोटि क पाठ बनावलन। रामायन, रामचरितमानस, अध्यात्म रामायण, साकेत, रामचंद्रिका , आनंद रामायण, बौद्ध रामायण आदि। ओम्में अलग-अलग दृष्टि। दृष्टियन क बहुलता वाली अइसन विजयादशमी क विजय-पाठ अंततः जदि सामान्य अदिमी क प्रेरक स्मृति क सुगंध से ना जुड़ल होत त ऊ अर्थमय ना होत आ हमनीं के भित्तर -बहरे के चौक-चौबार में मेला न बन जात। एगो अइसन मेला , जहां हमनीं के स्वयं से मिलल जाला लोको से । नायक से मिलल जाला, प्रतिनायको से । समय से मिलल जाला , भविष्यो से । काव्य से मिलल जाला, महाकाव्यो से । अंत से मिलल जाला , अनंतो से । भाषा से मिलल जाला , भाषा से परहूं । हद से मिलल जाला , बेहद से भी।

◆ ◆ ◆

भोजपुरी के संतकविः धरणीदास

-निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

बिहार राज्य के सारण जिला आ उत्तर प्रदेश के बलिया जिला का सीवान पर सरयू नदी का किनारे बसल बा माँझी नाँव के एगो बहुत प्राचीन गाँव। माँझी छपरा- बनारस रेल खंड पर बिहार के अंतिम रेलवे स्टेशन आ सारण जिला के एगो प्रखंड ह। एकरा लगहीं ऐतिहासिक महत्त्व के स्थान गोदना सेमरिया स्थित बा, जवन गौतम स्थान के रूप में प्रसिद्ध बा। पौराणिक आ धार्मिक मान्यता बा कि गौतम ऋषि के पत्नी अहिल्या, जे पति का सराप से नारी से पथर बन गइल रली उनकर उद्धार इहईं` भइल रहे। भोजपुरी के संत कवि धरनीदास जी के जनम एही माँझी गाँव में भइल रहे। ऊ जाति के श्रीवास्तव कायस्थ रहस। बेल्डियर प्रेस से सन् १९११ में छपल 'धरनी दास की बानी' के फुटकर शब्द में एगो पद बा, जवना में उहाँका अपना कुल के परिचय देले बानीं-

"जग में कायथ जाति हमारी,
पायो है माला तिलक दुसाला, परमारथ ओहदारी।
कागद जहँ लगि करम कमायो, कैंची ज्ञान रसारी।"

धरनी दास जी के भाई के एगो वंशज डॉक्टर प्रेम शंकर सिन्हा अभी भोपाल होमियोपैथी कॉलेज में प्रिंसिपल बानीं आ एगो वंशज श्री जवाहर प्रसाद माँझी में ही रहीले। जवाहर प्रसाद का सौजन्य से डॉक्टर प्रेम शंकर सिन्हा के एगो पोस्ट व्हाट्सएप्प पर मिलल। डॉक्टर प्रेम शंकर सिन्हा के पोस्ट का अनुसार धरनीदास जी के पितामह बाबू टिकयित दास उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिला के बेलहरी से माँझी आ के बसल रहीं। इहाँ के बाबूजी के नाँव परशुराम दास आ माई के नाम वीरमा रहे। धरनी दास चार भाई रहस। चारों भाई के नाँव रहे- लछी राम, छत्रपति दास, बेनी राम आ कुलमन दास। धरनी दास जी के जनम, जीवन चरित आ निधन काल का बारे में प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध नइखे। बेल्डियर प्रेस से छपल 'धरनी दास की बानी' में इनकर जीवनी तीन पन्ना में उपलब्ध बा, ओ में कहल गइल बा-'इनका जन्म माँझी नामी गाँव में संवत् १७१३ विक्रमी में हुआ पर चोला छोड़ने का समय ठीक मालूम नहीं होता।' डॉक्टर राम कुमार वर्मा के प्रसिद्ध पुस्तक, 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में लेखक के कहनाम बा कि

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव
राँची, झारखंड

"धरनी दास की मातृभाषा भोजपुरी थी, इसी कारण 'प्रेम परगास' में भोजपुरी के कतिपय पद मिलते हैं। इसमें कहीं भी इनकी जन्म तिथि नहीं दी गई है। 'प्रेम परगास' में धरनी दास जी अपना जनम स्थान आ परिवार का बारे में लिखले बानीं-

"हरिजन सेवक जहँ कर वासा,
नाम ठाम सगुण करहि प्रकाशा।
मध्य देश माँझी असथाना, सुरपुर सम सरयू सनिधाना।
चारहि ओर सघन अमराई, ताल तड़ाग कहीं कितनाई।
तहँ-तहँ पुहुप-वाटिका लाऊ, वापि, कूप तहँ बहुत बँधाऊ।
देव स्थल वहु देखिये ताहाँ, हरि को चर्चा निशिदिन जाहाँ।
श्रीवास्तव श्रीपति के दासा, करहि सहित परिवार निवासा।
'टिकयित दास' तहाँ तप आगर, कायथ कुल महिमा अतिसागर।
परशुराम सुत तिन कहँ भयऊ, सुयशबेलि जिन वसुधा कमऊ।
विष्णु उपासक अति सुर ज्ञानी, निर्मल यश चहुँ दिशा बखानी।
पत्नी तासु 'वीरमा' माई, पुरविल करनी बहुत कमाई।
दया धर्म दृढ़ दुनु प्रानी,
पाँच पुत्र विधि तिनकहँ दयऊ, पंचन माँह उजागर कियऊ।
तिनके नाम कहत हौं जानी.
लछीराम ओ 'छत्रपति', धरनी बनी राम।
'कुलमनि'सहितो पाँच जन, साधु संघति विश्राम।"

ऊपर का पद से स्पष्ट बा कि बाबा धरनीदासजी का समय में माँझी गाँव आस-पास के इलाका 'मध्येम' भा 'मध्यदीप' का नाम से प्रसिद्ध रहे. मध्यदीप का पूरब और हरिहर क्षेत्र आ पश्चिम और दर्दर क्षेत्र रहे। ई दुनों पुण्यक्षेत्र रहे। माँझी का नियरे ब्रह्मक्षेत्र रहे जवना वजह से माँझी खुद ब्रह्मक्षेत्र कहात

रहे। माँझी गाँव समृद्धशाली नगर रहे, जहवाँ नवाब जमींदार के महल रहे, चारों और तालाब, कुआँ, बगीचा आ फुलवारी रहे। बीच-बीच में सुन्दर हात लगत रहे। जगह-जगह पर देवस्थान के बाहुल्य रहे, जहाँ बराबर हरिचर्चा होत रहे।

'प्रेम प्रगास' में धरनी दास जी संन्यास लेवे के बारे जिकिर त कइले ही बानीं, सन्यास लेवे का तिथियो का बारे में जिकिर किइले बानीं –

"धरनी के मन अनुभव भयऊ, प्रेम प्रकाश कथा एक ठयऊ।
सहजहि जिय उपजो अनुरागा, सोवत हुतो चिहुकि जनु जागा।
उत्पति कहौ कथा कछु आगे, भक्ति भाव अभि-अंतर लागे।
सर्गुनिया सर्गुन लौ लावै, निर्गुनिया निर्गुनहि सुनावै।
संबत सत्रह सौ चलि गयऊ, तेरह अधिक ताहि पर भयऊ।
शाहजहाँ छोड़ी दुनियाई, पसरी ओरंगजेब दुहाई।
सोच विचार आत्मा जागी, धरनी धरौ भेस वैरागी।"

डॉक्टर राम कुमार वर्मा का अनुसार ऊपर का पद में 'शाहजहाँ छोड़ी दुनियाई' के अर्थ ई नइखे कि शाहजहाँ के मृत्यु संवत् १७१३ में भइल रहे। शाहजहाँ के मृत्यु त सन् १६६६ याने संवत् १७२३ में भइल रहे, सन् १६५७ का सितम्बर महीना में शाहजहाँ बहुत जोर से बेमार पड़लन। उनका बेटा लोग में राज्य खातिर लड़ाई शुरू हो गइल। एह लड़ाई में औरंगजेब के जीत भइल आ अपना बाप के कैद कर लेलें। बेमारी का बाद शाहजहाँ एक लेखा से अधिकार-च्युत हो गइल रहस। डॉक्टर राम कुमार वर्मा के कहनाम बा कि ऊपर का पद में धरनी दासजी एही बात का और संकेत कइले बानीं अगर संन्यास के ई तारीख मान लेहल जाव त निश्चित रूप से उनकर जनम तिथि एकरा पहिले होई। अगर ऊ चालीस बरिस का उमर में सन्यास लेले होइहें त उनकर जनम तिथि संवत् १६७३ याने इसवी सन् १६१६ का लगभग होई। आपन किताब 'संत काव्य' में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के कहनाम बा, 'उनके अनुयायियों द्वारा बतलाया गया उनका जन्म-काल संवत् १६३२ से बहुत पहले जाता हुआ जान पड़ता है।'

हिन्दी साहित्य कोश, भाग 2, (नामवाची शब्दावली) में ई जिकिर बा कि उनकर अनुयायी लोग मानेला कि उनकर जनम सन् १५७५ ई० में भइल रहे। डॉक्टर बड़थ्वाल का मुताबिक उनकर जनम १६५६ ई० में भइल रहे। धरनीदास जी के बचपन के नाम गैबी रहे। घर में खेती-बारी के काम होत रहे। इहाँ के पिताजी विष्णु के उपासक रहीं। माताजी भी धार्मिक प्रवृति के रहीं। गाँव में देवालय बहुत रहे जहाँ बराबरे हरि चर्चा होत रहत रहे। धरनीदास जी गाँव-घर के धार्मिक वतावरण में पललीं-बढ़नीं। एकरा वजह से उहाँ का लड़िकाइएँ से सत्यनिष्ठ रहीं, भगवान् के आराधना आ पूजा –पाठ में श्रद्धा रहे, मन में हमेशा वैराग्य-भाव रहे। धरनी दास जी के दादा टिकयित दास जी के मृत्यु का बाद उनकर पिता परशुराम दास जी अपना पिता का जगहा माँझी के नवाब किहाँ दीवान बहाल भइनीं आ उनका मरला का बाद धरनीदास जी नवाब का दरबार में दीवान बहाल भइनीं। उहाँ का संत रहनीं लेकिन अपना काम में बहुत सतर्क रहत रहीं। धरनी दास जी का बारे में बहुत चमत्कारी घटना प्रचलित बा।

एक दिन जब उहाँ का दरबार का दफ्तर में काम में मगन रहीं, अचानक उहाँ का बाही-खाता आ कागज का बस्ता पर पास में रखल पानी भरल लोटा गिरा देनीं आ उहाँ से चले लगनीं त लोग उनका के पकड़ लेलख, लेकिन पुछला पर उहाँ का कुछुओ जबाब ना देनीं। जब ई खबर दरबार में पहुँचल त नबाब उहाँ खुद अइलन। नबाब का प्रधान का पुछला पर धरनी दास जी कहनीं-"मोहि राम नाम सुधि आई, लिखनी नाहीं करौं रे भाई।" हम तोहार कुछुओ नइखीं बिगड़ले। हम त आरती का बेरा जगन्नाथपुरी में ठाकुरजी के कपड़ा में लागल आग बुझावत रहीं। कहाँ जगन्नाथपुरी आ कहाँ माँझी। सैकड़न कोस का दूरी रह के आग बुझावे के बात नबाब का पागलपन बुझाइल। नबाब साहेब अपना भरोसा के कुछ लोग के जगन्नाथपुरी भेज के तहकीकात करवलन त पता चलल कि जवना घड़ी धरनी दास जी जमींदारी का कागज-पतर पर पानी गिरवले रहनीं, ओही घड़ी आरती के बेरा जगन्नाथजी का वस्त्र में आग लागल रहे आ धरनी दास जी के सूरत-शकल के एगो आदमी प्रकट होके आग बुझा गइल। ई हाल सुनके नबाब बहुत लज्जित भइलें आ धरनी दास जी से छमा मांग के फेर से दीवान के काम सम्हारे के कहलन लेकिन उहाँ का इनकार कर देनीं आ कहनीं कि अब हमरा के भगवान के भजन करे द। एकरा बाद बाबा धरनी दास गृहस्थ आश्रम छोड़ के साधू हो गइनीं आ माँझिए में कुटिया बना के रहे लगनीं। उहाँ का गृहस्थ आश्रम में चंदर दास नाम के साधू से दीक्षा लेले रहीं। संन्यास धारण कइला का बाद उहाँ का केकरा से दीक्षा लेले रहीं एमें थोड़ा मतभेद बा। 'धरनी दास की बानी' आ 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में ई उल्लेख बा कि संन्यास धारण कइला का बाद उहाँ का सेवानंद से दीक्षा लेनीं लेकिन 'भारतीय चरित कोश' के लेखक लीलाधर शर्मा आ 'संत काव्य' के लेखक परशुराम चतुर्वेदी के कहनाम बा कि उहाँ का मुजफ्फरपुर जिला के पातेपुर के स्वामी विनोदानंद से दीक्षित भइल रहीं। धरनी दास जी के शिष्य लोग उनका प्रचार-प्रसार में लाग गइल लोग। ऊ लोग 'धरनेश्वरी' सम्प्रदाय के स्थापना कइलख। माँझी में धरनी दास जी के मठिया आजो विद्यमान बा। धरनी दास जी के वंशज जवाहर प्रसाद जी बातचीत का सिलसिला में बतवनीं कि माँझी के नबाब धरनी दास खातिर एगो मंदिर बनववले रहस। ओह मंदिर के रूख पश्चिम मुँहे रहे। ऊ मंदिर अबहींओ बा। बाबा धरनी दास जी का बारे में दू गो और अलौकिक कथा के चर्चा करे चाहतानीं। एक बेरा अहीर जाती के कुछ चोर उनकरा कुटिया पर पहुंचलें आ उहाँ से गीत गवाके सुनला का बाद ऊ लोग चोरी करे खातिर चल देलख। चोरी कइला का बाद ओ लोग के आँख का सामने अइसन अन्हार छा गइल कि ओ लोग का रस्ते ना सूझत रहे। ओ लोग के हलकान देख के धरनीदास जी अपन बड़ चेला सेवानंद के भेज के ओ लोगन के बोलवनीं। बाबा का समने पहुँचते ओ लोग के आँख खुल गइल। ऊ लोग उहाँ के गोड़ पर गिर गइल आ चोरी-चकारी छोड़ के साधू हो गइल। एही तरह के एगो आउर घटना प्रसिद्ध बा। एक बेर बहुत साधू लोग रमते-रमते धरनी दास जी का कुटिया पर पधारल। सब लोग के भोजन के प्रबंध भइल। भोजन करे का बेरा ऊ लोग शरारत कइल। ऊ लोग कहलख कि तू त जात के कायस्थ हव आ द्वारिकाधीश के छाप लगा के शुद्ध नइख भइल। हमनी तोहर अन्न ठाकुर जी के कइसे भोग लगाईं? धरनीदास जी ओ लोगन के बहुत समुझवनीं लेकिन ऊ लोग ना मानल। आखिर में आजिज आ के उहाँ का कहनीं कि थोड़ा मोहलत दीं सभे हम द्वारिका जा के छाप ले आवतानीं। एतना कह के उहाँ का अपना कुटिया में घुस गइनीं आ थोड़हीं देर में बाहर आ के अपना बाँह पर द्वारिकाजी के छाप देखा देनीं। सबलोग अचरज में पड़ गइल आ उनका गोड़ पर गिर पड़ल।

अइसहीं एगो कथा धरनी दास जी के शरीर त्यागला का बारे में बा। जब उनकर समय आइल त उहाँ का अपना शिष्य लोगन से कहनीं कि अब हम विदा लेतानीं। उहाँ का ओह जगह अइनीं, जहवाँ गंगा आ सरजुग के संगम बा आ पानी पर चादर बिछा के आसन लगा के बइठ गइनीं। थोड़ा देर तक धारा का साथे बहत नजर अइनीं, फेर उनकर चेला लोग का पानी में आसमान तक उठत आग के लपट दिखल आ धरनी दास जी गायब हो गइनीं। इहाँ का संवत् १७३१ के सावन कृष्ण नवमी के शरीर तेयगनीं। अइसन कथा पर संदेह भइल वाजिब बा लेकिन ई उनका भक्तन के आस्था रहे जेकरा चलते ऊ लोग अइसन अलौकिक कथा पर विश्वास करत रहे। सचाई जे होखे अतना त जरूरे कहल जा सकता कि बाबा धरनी दास अइसन महात्मा के महिमा अइसन कथा के मोहताज नइखे। बाबा धरनी दास का बाद उनका गद्दी पर उनकर गुरमुख चेला सदानंद जी बइठनीं। उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग आ बिहार में उनकर बहुत अनुयायी रहे लोग। कुछ लोग अबहूँ बा। बाबा धरनी दास पहुँचल संत रहनीं। इनका रचना से उहाँ के गंभीर साधना के परिचय मिलेला। ईसा के सत्रहवाँ शताब्दी में जेतना संत लोगन के आविर्भाव भइल ओ में धरनी दास जी के बहुत

महत्त्वपूर्ण स्थान बा। इहाँ के तीन गो रचना प्रसिद्द बा- 'शब्द प्रकाश', 'रत्नावली' आ 'प्रेम प्रगास'। 'शब्द प्रकाश' सन् १८८७ ई० में नरसिह प्रेस छपरा से प्रकाशित भइल रहे। 'शब्द प्रकाश' में भोजपुरी के गेय पद बा। इलाहबाद का बेलडियर प्रेस से सन् १९११ ई० में 'धरनी दास की बानी' प्रकाशित भइल रहे। ए में अधिकांश पद 'शब्द प्रकाश' से लेहल गइल बा। प्रकाशक के कहनाम बा कि एह पुस्तक के पद आ साखी में से कुछ त बाँदा जिला के तेरही के मुआफीदार बाबू सरजू प्रसाद जी दिहनी आ कुछ पुरनिया जिला के जोतराम राय के संतमत सुसैटी के सेक्रेटरी धीरज दास जी के भेजल वरक से चुनल गइल। बाकी दुनू रचना ना छपल। 'प्रेम प्रगास' सूफी लोग का प्रेमाख्यानक शैली लिखल प्रेमगाथा ह, जेकरा में मनमोहन आ प्रानमती का प्रेम-कहानी के वर्णन बा। 'रत्नावली' में उहाँ का अपना गुरु-परम्परा के उल्लेख कइले बानीं। एकरा अलावे ए में कुछ आउर संत आ नाथ-सिद्ध लोग के परिचय भी देहल गइल बा। बाबू राजबल्ल्भ सहाय का कृपा से डॉक्टर उदय नारायण तिवारी का 'प्रेम प्रगास' के हाथ से लिखल प्रति मांझी का पुस्तकालय में मिलल रहे। ए में एकर नकल तैयार करे के तिथि भादर (भाद्र) शुक्ल नवमी १२८१ फसली साल देहल बा। फसली साल ईस्वी सन् से ५९२ या विक्रम संबत से ५३५ बरिस पाछे बा। एह हिसाब से ई नकल सन् १८७३ के जुलाई- अगस्त महीना में तैयार भइल होई। ई नकल माँझी के श्रीमती जानकी दासी उर्फ़ बर्ता कुँवर खातिर महंत रामदास जी तैयार कइले रहीं। धरनी दास जी के मठिया में उनकर लिखल तीनों ग्रन्थन में से कवनो ग्रन्थ उपलब्ध नइखे। धरनीदासजी के जवन तीन गो रचना के उल्लेख आचार्य परशुराम चतुर्वेदी आपन पुस्तक 'संत काव्य ' में कइले बानीं, इहे तीनों रचना के जिक्र श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिह के पुस्तक, 'भोजपुरी कवि और काव्य' में भी, `जेकर संपादन डॉ० विश्वनाथ प्रसाद कइले बानीं, भइल बा. लेकिन कवनो पुस्तक में ई तीनों रचनन के रचना-काल का बारे में कवनो सूचना नइखे। एह वजह से ई नइखे कहल जा सकत कि धरनीदासजी अपना तीनों ग्रन्थन के रचना कब कइले रहीं। बाबा धरनी दास जी बहुत बड़ शब्द-अभ्यासी रहीं। उहाँ का रचना का बारे में विद्वान् लोग के मत बा कि विनय,आत्महीनता, नाम-स्मरण, उद्बोधन, योगनिरूपण आ आध्यात्मिक संयोग-वियोग के चित्रण उनका रचनन के प्रमुख विषय बा। उहाँ का 'शब्द प्रकाश' के गेय पद के रचना भोजपुरी में कइले बानीं आ 'प्रेम-प्रगास' के रचना अवधी भाषा में बा। भोजपुरी का पदन में व्यक्त उनकर माधुर्यभाव उल्लेखनीय बा। ए में लोकजीवन के सरसता बा। उनका साखी में अभिव्यक्ति के प्रांजलता बा। ' 'शब्द- प्रकाश' में बँगला, पंजाबी, मगही, मोरंगी, उर्दू भाषा के प्रयोग भइल बा। छंदन के नाम भी भाषा का नाम पर कइल बा, जइसे राग मैथिली, राग बंगला, राग पंजाबी. 'धरनी दास की बानी' में अलग-अलग छंद के आ अलग-अलग विषय के रचना अलग-अलग शीर्षक से संकलित बा-'फुटकर शब्द', 'आरती व भोग', 'चितावनी गर्भ लीला', 'शब्द', 'कवित', 'ककहरा', 'अलिफनामा', 'पहाड़ा', 'बारहमासा' 'बोधलीला' आ 'साखी'। 'शब्द' में भजन आ विनय के पद बा। कुछ पद 'गंधार', 'कल्याण' 'बेलावल' आ 'केदार' राग में बा। एह से पता चलता कि धरनी दास जी का संगीत के भी बहुत अच्छा ज्ञान रहे। इनका बानी में कई एक जगह अलंकारिक भाषा के प्रयोग भइल बा।

कबीर का लेखा धरनी दास जी के 'ककहरा' आ 'साखी' भी प्रसिद्ध बा। साखी के विषय अलग-अलग बा। जइसे, 'गुरु', 'भेष', 'दर्पण', चेतावनी', 'शब्द', 'नारी', 'प्रेम' वगैरह. उहाँ का फ़ारसी भी खूब जानत रहीं। 'अलिफ़नामा' में इनकर फारसी के ज्ञान देखल जा सकता। इहाँ का बारहमासा, दोहा आ पद भी कहले बानीं। इहाँ का छंद के बहुत अच्छा ज्ञान रहे। उनका मत आ विचार पर विशिष्टाद्वैत के प्रभाव साफ-साफ देखल जा सकता। धरनी दास जी दार्शनिक होखे का पहिले स्वतंत्र साधक रहीं। इनका कवनो वाद से कवनो सीधा संबंध ना रहे। ए में कवनो शक नइखे कि उहाँ का बहुत उच्च कोटि के साधक आ संत आ संत-काव्यधारा के बिचला काल का उत्तरार्ध के प्रसिद्ध कवि रहीं।

◆ ◆ ◆

दुर्गा वन्दना(चंचला छंद)

फूल- खाँड़ धूप-दीप दूब चन्दनादि थार।
आरती पुनीत मात वन्दना करीं स्वीकार॥

जो कृपा करीं महान भक्त होइ जा सुजान।
मेंटि जात अन्धकार दीं प्रकाश ऊर्ध्व ज्ञान॥१॥

शेर हो सवार मात आइ जासु नवरात।
विध्यवासिनी मयात दर्स दीं पुराइ बात॥

रोग-शोक से उबार दुष्ट देइ दीं पछार।
आसरा पुरे हमार बा इहे सुनीं पुकार॥२॥

भक्त के करीं सनाथ ना बने कबो अनाथ।
लोग-बाग जोरि हाथ बा खड़ा नवाइ माथ॥

भूल-चूक क्षम्य मात सत्य राह गम्य मात।
दीं दया दयालु मात टारि दीं अन्हार रात॥३॥

चंचला छंद

तब से लेके आजु ले, सब शापित पर शाप बा।
बरगद के पूजा सदा, काटत जग के पाप बा॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

सीता के पिण्ड दान गाथा-चौपाई

गया धाम पितृपक्ष महत्ता।
जहाँ पितर परलौकिक सत्ता॥
राम लखन सीता वनवासी।
पिण्डदान पितु हेतु उदासी॥१॥

कुतप समय नियराइल आवे।
साधन दूनू भ्रात जुटावे॥
दूर नगर चलि गइलें भाई।
पिण्डदान पितु मांगे आई॥२॥

सीता जी दुविधा में परि के।
पिण्डदान करि दिहली डरि के।
बरगद गाइ केतकी साथे।
साक्षी रहल फालगू माथे॥३॥

लवटि राम सुनि बड़ रिसिअइनीं।
का प्रमाण, कहि के हठि गइनीं॥
केत्की गाइ नदी से सीता।
उत्तर पावें सब विपरीता॥४॥

बरगद दिहलें सही गवाही।
बाकी सब के गलत मनाही॥
सीता कुपित उहाँ तब भइली।
तीन जना के शापित कइली॥५॥

गाइ पुजइहें जुठिहर खइहें।
केतकी कबो काम न अइहें॥
फाल्गू नदी नीर से हीना।
रेत मिली मिलिहें ना मीना॥६॥

बरगद के वरदान तबे से।
पूजल जइहें उगे जबे से॥
सीता जी ऊ पहिली नारी।
पिण्ड दान के जे अधिकारी॥७॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
पंचदेवरी, गोपालगंज बिहार

शब्द

शब्द शब्द के नाप तउल क
बोलल बहुत जरूरी होला।
कवन शब्द केतना वजनी बा
जोखल बहुत जरूरी होला॥

हरसट्ठे अनगरजे बोलल
आपन परिचय दे जाला।
केकरा से, का बोले के बा
सोंचल बहुत जरूरी होला॥

शब्द सुधा ह, शब्द ह माहुर
शब्द खीर ह, शब्द ह जाउर।
शब्द अश्व के नाथ, रास के
रोकल बहुत जरूरी होला॥

शब्द प्रभाव पड़े दुई भाँति
हुलसावे, धधकावे छाती।
अपनावे से पहिले, शब्द के
होखल बहुत जरूरी होला॥

अपनन से बतियावत बेरा
बोली बाण चलावत बेरा।
शब्द के नोखी, मुरकावल भा
मोड़ल बहुत जरूरी होला॥

दम्मी साधल ठीक ह, बाकि
कन्नी काटल नीक ह, बाकि।
राह के भटकल राही लोग के
टोकल बहुत जरूरी होला॥

◆ ◆ ◆

अरविन्द श्रीवास्तव
एकमा, सारण, बिहार

मोल अँचरा के बुझाये लागल

आदमी जबसे बिकाये लागल।
मोल अँचरा के बुझाये लागल।

दर्द हियरा में बा उठल उनका,
ठेस लागल तऽ दुखाये लागल।

लोर अँखिया में त भरलऽ बाटे,
प्रेम पइसे से किनाये लागल।

जान बनिके ही ऊ बसल दिल में,
देख हमरा के लुकाये लागल।

प्रेम बन रौशनी जरतऽ नइखे,
दीप नेहिया के बुताये लागल।

इश्क़ कइले के बा मिलल तोहफा,
बेवफ़ा नामऽ धराये लागल।

का कहीं केकरा से सचिन बोला,
देख सब लोग पराये लागल।

◆ ◆ ◆

पं. संजीव शुक्ल 'सचिन'
मुसहरवा (मंशानगर), पश्चिमी चम्पारण, बिहार

1. हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक विष्णु प्रभाकर का अनुसार एगो भरल सभा में जैनेन्द्र कुमार से केहू पूछलस, 'रउआ शराब काहे ना पीहीं?' एमें कवनो दोष बा का?
ऊ सभा सभी लोग के रहे, सभ्यता पुराण ना रहे। जैनेन्द्र जी बिना झिझकले सहज भाव से कहनी, "दोष शायद इहे बा कि एकर नशा उतर जाला।"

2. अंग्रेजी के महान नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ से मिले एगो महिला अइली। बतकही का बीचे ऊ शॉ से कहली- 'उनका उमिर के अंदाजा कोई नइखे लगा सकत'। ऊ पूछली- "हमरा उमिर का बारे में राउर का खेयाल बा?"
शॉ ओ महिला के गौर से देखलें आ कहलन, "देखीं रउरा सिर के बाल घना आ सुनहरा केश देख के अइसन लागता कि रउरा अठारेह बारिस से जेयादा के ना होखिब, राउर मोती अइसन दाँत देख का बुझाता कि रउरा सतरे बरिस से जियादे के ना होखिब आ राउर चंचलता देख के लागता कि रउरा सोरे बरिस से जेयादे के नइखीं।' ऊ महिला इतरा के कहली, "साँच बताईं ना, हम कतना साल के लाग$तानीं?'
"सही उमिर खातिर अठारे में सतरे मिलाईं आ ओ में सोरे जोड़ दिहीं।"

3. मजिस्ट्रेट का कोर्ट में एक्सीडेंट में घायल एगो आदमी के मोकदमा चलत रहे।
मजिस्ट्रेट साहेब पूछ्लें, "जब तू देखलS कि एगो जवान लड़की गाड़ी चला रहल बिया त तहरा सड़क का किनारे हो जाए के नु चाहत रहे?"
घायल आदमी कहलख, "सरकार! हम त दिशा फराकित खातिर निकल रहीं। जवना घड़ी ई हमरा के ठोकली ओ घड़ी हम जमीन पर लोटा रखि के खेत में खड़ा होके बीड़ी पीअत रहीं।"

जंगल में एगो भँइस बदहवास होके भागल जात रहे। एगो चूहा ओकरा के रोक के पूछलस, "बहिना! अतना बदहवास हो के काहे भाग रहल बारु?"
भँइस जबाब देहली, "हमरा मालूम भइल ह आज जंगल में हाँका पड़ी। हाथी पकड़े खातिर शिकारी आ पुलिस के दल आ रहल बा।"
चूहा कहलन, " हाथी पकड़े खातिर हाँका पड़ी त तू काहें घबराइल बारू?"
'तू का जनबS? एक बेर हाथी का गफलत में पकड़ा गइनीं त कोर्ट में ई बात साबित करे में बीस साल लागि जाई कि हम हाथी ना भँइस हईं।"

बटेसर कवि सम्मेलन में आपन नया कविता पढ़लें। बड़ा बाहबाही भइल। एगो श्रोता खड़ा हो के पूछलें, ''ई कविता राउरे लिखल नु ह?"
बटेसर जबाब देहलें, "बिलकुल। एकर एक-एक अच्छर हमार लिखल ह।" श्रोता खुशी जाहिर करत कहलें, "अहो भागि हमार कि रउरा से भेंट भइल, आदरणीय मैथिलीशरण गुप्त जी! हम त कई बरिस पहिले सुनले रहीं कि रउरा अब एह दुनियाँ में नइखीं।"

निरंजन श्रीवास्तव

◆◆◆

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

इहे त जीवन हऽ

सौरभ भोजपुरीया
सिवान, बिहार

दिन भर के थकान से चूर हो के रात के खाना खा के अपना बिछावन पर सुतल रहनी आ आपन बुढ़ापा के बारे में सोचत रही । सोचते सोचते आँख लाग गइल आ हम अपना के बुढ़ापा के सपना में देखे लगनी ।

जनवरी के महीना। हाड़ में समा जाएवाला जाड़ पड़त रहे । रात के साया दिन के अँजोरिया के धीरे धीरे अपना भीतर छुपावले जात रहे ।

"ए बूढी सुनत बाड़ू-ऊ-हो-ओ, तनी चाय पीया देतू एक हाली आउर।" हम आपन धर्मपत्नी से कहनी जे घर के भीतरी कवनो काम करत रहली। अरे लीं, हम त बूढी के बारे में बतइबे ना कइनी । इनकर नाम मीनाक्षी हटे। जइसन इनकर नाव बा वइसे इनकर सुघराई बाटे। बड़-बड आँख झील नीयन गहिर । गुलाब के पंखुड़ी नियन होठ । सावन के मेध नियन केश उनकर गेहुआ रंग में चार चाँद लगावे ला । पैसठ सत्तर के उमिर में देखला के बाद हम अपना के रोक ना पावेनी आ दू चार लाइन गुनगुना देनीं- ये कौन आ गई हैं दिलरुबा बहकी बहकी .....
लिखा जो खत तुझे तेरी याद में....

"ए जी रउवा अभी ले बहरी का करत बानी? भीतर चली देखत नइखीं कतिना ठंढा बढ़ गइल बा?" हमार साल के ठीक करत मीनाक्षी कहली । जाये के त कोशिश बहुँत कइनी ह बाकिर ठेहुना साथ ना दीहलस ह, तनी सहारा द हमरा के। भीतर अइला के बाद- "का भइल बूढी, लछिमिया आज ना आइल हियऽ का?" लक्ष्मी बगल के पडोस में रहे ले आ बराबर हमरा घर के काम काज में मीनाक्षी हाँथ बँटा देबे ले, बाकिर जब आपने साथ ना देबे ता गैर के जमाल पर कवन अख्तियार ।

जवान आँख के देख के हम शायरी- गजल लिखत रही । आज उहे पीड़ा के कारण बन गइल बा । मोतियाबिन्द के बेमारी आ दर्द रौशनी के धूमिल कर देले बा । जवना आँख से हमनी दुनो प्राणी लाखों सपना देख के सकार कइनीजा उहे आज दुःखदायी हो गइल ।

पाँच भाई में हम सबसे बड़ हई। बड़हन कम्पनी से संचालक के पद पर रहीं । जब तक नोकरी में रही सब ठीक रहे । छोट भाई -बहिन बेटा -बेटी के देखत ई आँख ना दुःखाव । जीवन के सारा ख़ुशी हम परिवार के गोद में रख देत रही । सब पर असीम प्रेम लुटावत रही बाकिर कहल बा कि असली प्रेम आ प्रेमी के त बुढापा में ही पहिचान होला । बुढापा में सहारा के सबकरा जरुरत पड़े ला ।

उच्च शिक्षा पा के बेटा-बेटी-भाई आपन-आपन घर गिरहस्थी में मगन हो गइल लो । हम रिटायर्ड भइला के बाद आपन गाँव के पुस्तैनी घर पर दुनो बेकत रहे लगनी । कबो-कबो दु-चार बरिस पर बेटा पतोह जब घुमे आवे लो तब हमनी दुनो के धुँधली रौशनी आँख से ख़ुशी के असंख दीया झिलमिल करे लागे। हम दुनो प्राणी आपन बेटा के परवरिश में सर्वस्व लुटा दिहनी जा चाहे ऊ प्रेम होख़े रुपिया पैसा होख़े। बदला में कबो कुछ ना मँगनीजा बाकिर ई धुँधली हो गइल आँख आ मन के कब तक रोक पाइब जा ई हरदम बस में ना रह पावे ला । कबो-कबो कुछो पावे के लालसा भीतर जाग जाला... जेकरा परवरिश में सरबस लुटा दिहनी जा ओकरा साथे कुछ क्षण बितावे के इच्छा .. मन के भीतर के भाव के बतावे के इच्छा, नाती के गोद में सुता के लोरी सुनावे के इच्छा .....

"बाकिर दुनिया के ता इहे रीत ह चिरई के बच्चा तब ले खोता में रहे ले जब ले पाँख न रहे ला। पाँख भइल कि आसमान के ऊँचाई के छू लेबे के मन में उमंग होख़े लागेला आ धीरे-धीरे धरती आ खोता से दूर हो जाला। कबो-कबो मन थोर हो जाला का मनुष्य भी अब जानवर चिराई जुरुंग हो गइल ? जेकरा लगे समय नइखे कुछ पल कुछ घरी परिवार समाज के साथ देबे के।

बूढी हमरा शादी से ले अब ले सारा काम बखूबी से करेली । कबो चाय ता गर्म पानी खाना रूपया पैसा के हिसाब सब । जिनगी के हर सुख सुबिधा बा बाकिर ई बुढ़ापा के लाठी, बेटा साथे नइखे। बस अगर केहू साथे बा ता हम दुनो के प्रेम आ जीवन के साथे बितावल याद आ जाय । समय पाँख लगा के तेजी से उड़े लागल । उमिर के ई पड़ाव में हमरा हाँथ पाव आ शरीर के जोड़ में दर्द होख़े लागल । डॉक्टर से देखवला पर मालूम पड़ल कि हमरा गाठिया रोग हो गइल बा

बूढी के शरीर धीरे - धीरे जवाब देबे लागल हमेसा सिर दर्द के शिकायत । डॉ बाबू देख के बतावले कि उनकरा शुगर हो गइल बा ! आ एही से सिर में दर्द रहत बा ! जब ले आँख के आपरेसन न होई ता ई दर्द ना जाई बाकिर शुगर के बेमारी के चलते आपरेसन में दिकत बा । हम अंदर से टूट गइनी हे नियति ई का खेल खेल रहल बाड़ू साथ में । हम आपन दर्द के भुला गइनी आ बूढी के काम में हाथ बटावे लगनी । बूढी के प्रेम समर्पण भा नियति के खेल के आगे सब भुला गइनी आउर ऊ सब काम करे लगनी जवान बूढी कबो करे न देत रहली ।

लक्ष्मी (नोकरानी) के भरोसे जिनगी ढाहत ढिमलात चलत रहे । हे ईस्वर ई सत्तर में उमिर में ई रोग दुश्मन के भी मत दिहा । अचानक बूढी के अपना बिस्तर पर देख के हम खिसक गइनी। तकिया के गीलापन बुढी के मालूम हो गइल । ई का जी अभी ले जागल बानी आ रउवा रोवत बानी का बात बा बताई। काँपत आवाज में उ कहली। रोवत त तुहूँ बाडु आ कवन कही कि तू सुत गइल बाड़ू। पाहिले इ बताई की रॉवा ई गठिया क बेमारी हमरा से काहे न बतवले रहनी हँ। अतना बड़हन दुःख सहत हमरा के तनिको मालूम न चले देहनी । आपन दुःख पीड़ा में हमारा के भागीदार काहे ना बनवनी सुबक-सुबक के रोवे लागली । असल में हम तहरा के दुःखी देखे के ना चाहत रहनीं.... चेहरा पर जमाना भर के दर्द सिमट गइल, साँच पूछ त ई दर्द के चलते कई बार मन करे कि आपन जीवन लीला समाप्त कर ली बाकिर जब तहरा बारे में सोची तभीतर से काँप जाईं ।

"अब कवन अस्तिव रह गइल बा हमरा जीवन के ? हम त बस अब तहरे खातिर जीयत बानी । जीवन के अंतिम पड़ाव में बस अब कबो-कबो एकही इच्छा करे ला कि हम दुनो हाँथ में हाँथ डाल के दूर तक टहल के नदी के तीर पर जा के डूबते सूर्य के घन्टो निहारत रहती बस इहे मन करे ला बार-बार हमार गला बैठ गइल । हे प्रभु हमरा त अब ई आखिरी इच्छा पूरा कर देस कि जब हमार प्राण निकले से पहिले धुँधली रोशनी वाला आँख से राउर चेहरा के मन भर ले देख सकी आगे के बात बूढी के हिचकी में समा गइल। हम दुनो आँख से मोती गिरावत एक दूसरा के बाह में समा के प्रेम के अंतिम सीमा में समा गइनी जा । बस इहे आवाज आइल इहे ता जीवन ह .... इहे त जीवन ह। आँख खुलल ता ई ना समझ पावनी कि ई सपना हा किआवे वाला समय के सच्चाई। बस इहे समझ आइल कि इहे त जीवन ह ... इहे त जीवन ह॥ ◆ ◆ ◆

कहाँ गइल

दुख में देख रोए ऊ इयार कहाँ गइले
हँसत खेलत ऊ दुआर कहाँ गइले!

भाई - भाई काका पितिया बोली
मिलल डाँट ऊ बेवहार कहाँ गइले!

माई मेहरी के नाता रिस्ता सब
लजाइल छुपल श्रृंगार कहाँ गइले!

कूदि कूदि नमक रोटी खास बबुआ
का्था सुनसु ऊ हुँसियार कहाँ गइले!

हर बतिया पर डाँटे भेंटास हँसी
खिलखिला उड़े ऊ संसार कहाँ गइले!

एके जगे जुटले सभनी थपथपावल
पीठिया ठठाइल ऊ पेयार कहाँ गइले!

बोलिया सब कड़वे रहे बुढ़वन के
मिलल साधु के बिचार कहाँ गइले।

◆ ◆ ◆

शैलेंद्र कुमार साधु
मिश्रवलिया, जलालपुर,
सारण, बिहार

कहाँ गइल

केकरा से कहीं, केकरा के सुनाईं,
हम अपना दिल के बात।
जब सभे व्यस्त अपना में,
डूबल बा अपना सपना में,
पुरावेला दिन रात ...
केसे करीं हम अपना दिल के बात ।

कहाँ फुरसत बा लोग के,
जे मिले कबो संजोग से।
बड़ा मतलबी भइल बा लोग,
पड़े मतलब त मिलावे हाथ ..

हम कुछ कहीं ओहसे पहिले,
लोग अपने दर्द सुनावेला।
हमरे मनभवना के बिना सुनले,
हमरे जज़्बात के मजाक उडावेला।
बात बात में एहसास हो जाला,
हमके आपन अवकात ..

अइसन बिगड़ल बा,
मोर जिनगी के खेला।
भीड़ में रहि के भी,
लागे हम बानीं अकेला।
बिन दौलत"राजू" केहू ना पूछे,
छोड़ दिहल सभे साथ ..
केसे करीं हम अपना दिल के बात।

राजू साहनी
मदनपुर,देवरिया,
उत्तर प्रदेश

दू गो सहेली के फोन पर बातचीत

दू गो सहेली के फोन पर बातचीत
पहिलकी सहेली - 'हैलो, हू इज़ दिस?'
दोसरकी सहेली - 'का रे बिदेस जाके बिदेसी हो गइले, लगले अंग्रेजी छांटे?'
पहिलकी सहेली - 'आरे, सुनीता?'
दोसरकी सहेली - 'हँ, चीन्ह गइले'?
पहिलकी सहेली - 'चीन्हेम ना रे, तोरा के केहू भूला सकेला?'
दोसरकी सहेली - 'चल चल ढेर मक्खन मत लगाव, बोल सब का हाल बा?'
पहिलकी सहेली - 'सब ठीके बा, आपन बताउ केन्ने रहतारे आजकल?'
दोसरकी सहेली - 'तोरा नियर बिदेस थोड़े नु भागल बानीं, एहीजे बानीं।'
पहिलकी सहेली - 'आउर सुनाउ, बुढ़ऊ कइसन बाड़न?'
दोसरकी सहेली - 'मत पूछु, उनका आटा चक्की से फुरसते नइखे कि हमरा लगे बइठस। तोर बुढ़ऊ ठीक बारन नु?'
पहिलकी सहेली - 'हँ ठीके बारन, उनको काम से छुट्टी नाहिए मिलेला।'
दोसरकी सहेली - 'आउर तोर लइका त बड़ हो गइल होइहन सन?'
पहिलकी सहेली - 'हँ बेटी अब नउवाँ में पढ़ेले आ बेटवा सातवाँ मे बा। तोरा लइकवा के का हाल बा?'
दोसरकी सहेली - 'उहो ठीक बा, दसवाँ में बा अभी।'
पहिलकी सहेली - 'केतना दिन हो गइल तोरा के देखला।'
दोसरकी सहेली - 'हँ दस बरिस भइल, आइल रहीं नइहर त तोर माई भेंटइली त उहे लमर देली।'
पहिलकी सहेली - 'हँ माई से त बात होखेला रोजे।'
दोसरकी सहेली - 'ठीक बा जा तानी बबुआ के खाना खिआवे, इस्कूल से आ गइल बा।'
पहिलकी सहेली - 'ठीक बा, हमूँ जातानीं सूते ढेर रात हो गइल बा। फेरू बात होई।'
दोसरकी सहेली - 'ठीक बा पूजा जो सूत, ओने त राते नू भइल होई?'
पहिलकी सहेली - 'हँ, चलु ठीक बा।'
दोसरकी सहेली - 'आ अंग्रेजी में का कहल जाला गुड लाइट।'
पहिलकी सहेली - 'लाइट ना रे बुड़बक, नाइट।'
दुनु ओर से संगहीं - 'हा हा हा हा हा।' - 'हा हा हा हा हा।'

कुमार चंदन
छपरा,बिहार

सिरिजन पत्रिका को आद्योपान्त एक बैठक में पढ़ गया । भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण, सम्वर्द्धन और प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अप्रतिम पत्रिका लगी । गीत-गवनई के साथ-साथ कथा-कहानी, समीक्षा, संस्मरण,नाटक,व्यंग्य आदि गद्य विधाओं को भी समुचित स्थान इसमें मिला है । भोजपुरी साहित्य और संस्कृति से सम्बंधित विभूतियों का परिचय भोजपुरी की धरोहर को सहेजने का सराहनीय प्रयास है । 'नवकी कलम' में नवोदित प्रतिभाओं को पाठक-समाज के समक्ष आने और अपनी पहचान बना पाने का अवसर देना साहित्य के भविष्य को उज्ज्वल करने का महनीय, उपादेयतापूर्ण उपक्रम है । कुल मिलाकर ,यह पत्रिका भोजपुरी की मनमुग्धकारी सुगन्ध को चतुर्दिक प्रसारित करने में पूर्ण समर्थ है ।

राजेंद्र प्रसाद द्विवेदी, बलिया

तीन साल, तेरह अंक,मनमोहक आवरण, सुन्दर छपाई, शानदार संपादकीय, सार्गर्भित आलेख, रोचक कहानी, विचार – विमर्श व्यंग , परिहास, श्लील कविता,गीत, ग़ज़ल, लोक के राग साहित्य , संस्कृति, संस्कार के इन्द्रधनुखी रंग, सिरिजन के संग। सादर बधाई,

अमरेन्द्र कुमार सिंह, आरा, भोजपुर (बिहार)

चोपाई सिरिजन खातिर-------
सिरिजन सिरिजत चली अनोखा ।
सरधा जइसे लिट्टी चोखा ॥
तीन साल पर तेरह पूड़ी ।
एक से एक रचनन जूड़ी ॥
योद्धा केतना जुड़ल बाड़े ।
नाँव लियाव होत भिनुसारे ॥
शुभकामना सब पुगो आगा ।
सबका टेबुल अउर विभागा ॥

राम प्रसाद साह, नेपाल

हमेशा की तरे शानदार आगाज सिरिजन के तेरहवाँ अंक के ।बहुत बहुत बधाई बा पूरा सिरिजन के सम्पादक गोल के ।जे एतना मेहनत क के आज सिरिजन के एह मोकाम तक ले पहुँचावें में सफल भइल।

माया शर्मा, गोपालगंज,बिहार

राउर बात

हमनी के परिवार के ई~ पत्रिका "सिरिजन" के हर अंक में कुछ ना कुछ उत्तरोत्तर स्तरीय सुधार के संग खूबसूरती देखे के मिलत बा , ये बार के अंक में उत्कृष्ठ आवरण पृष्ठ , आंख आ दिल दिमाग के शुकून देबे वाला साफ़ शब्दन के फ्रंट , बिना चस्मा के भी पढ़ लेबे शीशा जइसन झलकत छपाई , कॉलम के बेहतरीन सेटिग , स्तरीय पठनीय लेखन आ रचना के साथ प्रकाशित भइल बा । हम पूरा संपादकीय आ प्रबंधकीय टीम , लेखक आ रचनाकार , पाठक गण आ परोक्ष~ अपरोक्ष रूप से सहयोग करेवाला के हृदयतल से बधाई आ आभार व्यक्त करत बानी ।

अंत में विशेष रूप से हम धन्यवाद दे तानी प्रिय बाबू श्री विश्वजीत शेखर राय जी के जेकरा कुशल देख रेख में ये पत्रिका के प्रकाशन भइल बा । बधाई के साथ हमार शुभकामना बा। जय भोजपुरी जय भोजपुरिया ।

सुरेश कुमार, मुम्बई

सिरिजन के सृजन के तिहरा बरिस पूरा भयैला पर खूब ढ़ेर शुभकामना अउर बधाई भोजपुरी के विकास में सिरिजन के बहुत जोगदान होखे इ भगवान से करजोरी बा ।

सतेंद्र पाण्डेय, गोपालगंज, बिहार

सिरिजन के खूबसूरत बेहतरीन तेरहवाँ अंक के हार्दिक बधाई आ अनघा शुभकामना बा। पत्रिका के संपादन से लेके प्रकाशन तक समूचा टीम के योगदान सराहनीय बा उम्मीद ना पूरा विश्वास बा कि हमार सिरजन परिवार असही सफलता के परचम लहरावत रही।आ माई भाषा के खातिर नया सफलता के आयाम गढत रही।फेर फेर अनघा शुभकामना बा।

आशा सिंह, मोतिहारी,बिहार

सिरिजन पत्रिका से जुड़ी के हमरो हियरा जुड़ा गइल। आजु से कुछे दिन पहिले येह परिवार से जुड़े के मौका मिलल, भोजपुरी में लिखे के मन त बहुते रहल पऽ डरि लागे गलती भइले पऽ सुधार कइसे होई के बताई। हम हृदय से आभार व्यक्त करतानी सुभाष सर जी के उन्हा के प्रोत्साहित कइले के कारन ही आज भोजपुरी लिखे आ पढ़ें में आनंद के अनुभूति हो रहल बा।

पं. संजीव शुक्ल सचिन, दिल्ली

राउर बात

सराहनीय,हरमेसा लेखा बहुत सुंदर आवरण चित्र के साथ सिरिजन के तेरहवाँ अंक । सिरिजन टीम के सभें बधाई के पात्र बा। हमरा तरफ से सभें सृजन कर्ता पढ़निहार लिखवइया के बहुत बहुत शुभकामना संप्रेषित बा।

बृज मोहन उपाध्याय, नई दिल्ली

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

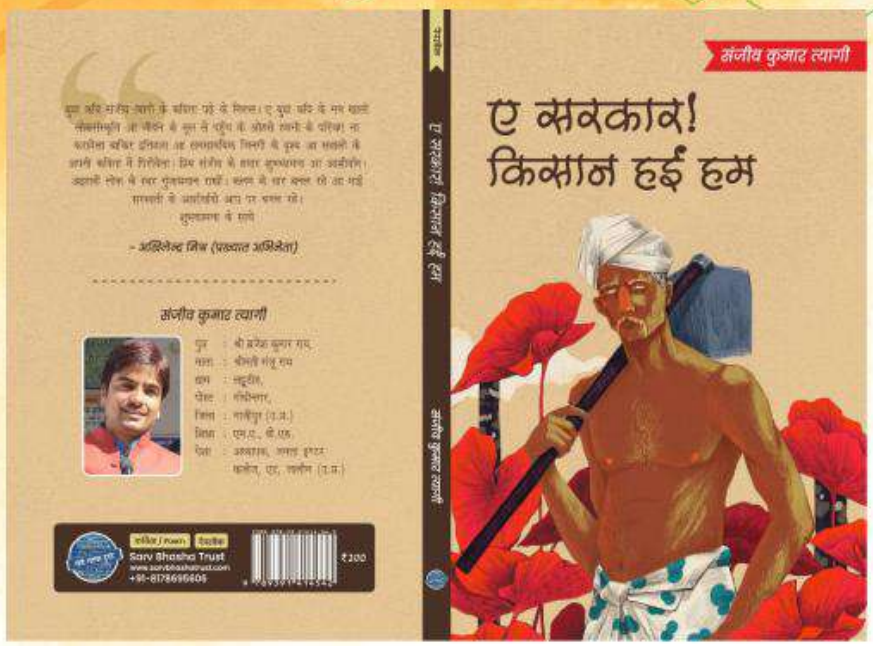

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा श्री संजीव कुमार त्यागी जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं:

सर्व भाषा ट्रस्ट

मोबाइल नं.-+ 91-8178695606